वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 285

तेरहद्वीप विधान

– रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की 50वीं पुण्यतिथि के अवसर पर
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से मनाए जा रहे
''आचार्य वीरसागर स्वर्णिम व्यक्तित्व समारोह''
(29 जुलाई से 11 अक्टूबर 2007 तक) के मध्य प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	श्रावण शुक्ला पूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रतियाँ	रक्षाबंधन पर्व	80/-रु.
	28 अगस्त 2007	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

वर्तमान में जैन समाज के प्रायः हर स्थान पर अब पूजा-मण्डल विधानों की धूम मची रहती है। इस बीसवीं सदी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में एक अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने बड़े-बड़े आध्यात्मिक ग्रन्थों के लेखन के साथ ही भक्तिगंगा को प्रवाहित करते हुए छोटे-बड़े सभी मिलाकर लगभग 50 विधानों की रचना की है, जिसमें इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र विधान आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान में पूज्य माताजी की लेखनी अविरल चल रही है, जिसके द्वारा नई-नई कृतियों का उद्गम होता रहता है।

आज हम सब परम सौभाग्यशाली हैं कि आज अपने चर्मचक्षुओं से भले ही आचार्य कुंदकुंद आदि महान आचार्यों के दर्शन नहीं कर पा रहे हैं परन्तु हमारे बीच में पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी परम विदुषी साध्वी विराजमान हैं जिन्होंने भगवान महावीर स्वामी के पश्चात् 2500 वर्षों में साहित्यलेखन का शुभारंभ करके एक अनुपम कीर्तिमान स्थापित किया है।

अनेकानेक साहित्यसृजन की श्रृंखला में यह ''तेरहद्वीप विधान'' भी एक बेजोड़ कृति है। इसमें 30 पूजाओं द्वारा तेरहद्वीपों के समस्त जिनमंदिरों की पूजा-अर्चा की गई है।

मानव मात्र को सुख-शांति व समृद्धि प्राप्त हो, इसी भावना से पूज्य माताजी ने सुगम भक्तिमार्ग को प्रधानता देकर पूजन-विधानों की रचना की है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित पूजा-विधानों की हर पंक्ति सरल, ज्ञानवर्धक और आगमसम्मत होती है। यदि कोई विद्वान उसके अर्थ को नहीं समझाए तो भी उसका अर्थ भक्तों को समझ में आ जाता है।

पूज्य माताजी के साहित्य की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने बच्चों के लिए बालविकास जैसी छोटी पुस्तकें लिखीं, युवाओं

के लिए संस्कार, प्रतिज्ञा, परीक्षा, आटे का मुर्गा आदि रोचक उपन्यास लिखे, महिलाओं के लिए नारी आलोक जैसी पुस्तकें लिखीं, विद्वानों के लिए अष्टसहस्री, नियमसार आदि ग्रंथों की सरल हिन्दी टीका लिखी, जिसके माध्यम से प्रत्येक उम्र के लोगों ने पूज्य माताजी के साहित्य को पढ़कर अपने ज्ञान की वृद्धि की।

जब से पूज्य माताजी ने विधानों की रचना करना प्रारम्भ किया, तब से न जाने कितने नास्तिक लोग भगवान के परमभक्त बन गए। जहाँ तक मैं समझता हूँ वर्तमान में कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता होगा कि जिस दिन देश के किसी न किसी स्थान पर पूज्य माताजी द्वारा रचित कोई विधान न हो रहा हो।

इस तेरहद्वीप विधान को यदि आप हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप जिनमंदिर में करेंगे तो आपको अधिक पुण्यफल की प्राप्ति होगी अथवा आप अपने नगर के मंदिर में भी इस अतिशयकारी विधान को करके अपने मनोरथों को सफल करें।

अन्त में भगवान महावीर से यह मंगल प्रार्थना है कि पूज्य माताजी इसी प्रकार स्वस्थ एवं चिरायु रहकर देश व समाज को नई-नई कृतियाँ प्रदान करती रहें जिससे हम सभी संसारी-प्राणी कभी भी अपने मार्ग से च्युत न होने पाएँ।

COURTESY - JAIN BOOK DEPOT

C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain

C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1

Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

आद्य वक्तव्य

(तेरहद्वीप रचना एवं तेरहद्वीप विधान की भूमिका)

-गणिनी ज्ञानमती

इस तेरहद्वीप विधान में मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में से प्रारंभिक तेरहद्वीपों की पूरी रचना का विस्तृत वर्णन है। अर्थात् संक्षेप में जैनभूगोल की प्रतिकृति के रूप में तेरहद्वीपों के अकृत्रिम चैत्यालयों, देवभवनों के मंदिरों एवं ढाईद्वीप के 170 समवसरणों की पूजा इस विधान में की गई है। विधान की महिमा अचिन्त्य है। यहाँ मैं इस विधान की पृष्ठभूमि से भी पाठकों को परिचित कराना चाहतीहूँ।

मैंने सन् 1952 की शरदपूर्णिमा को गृहत्याग करके सर्वप्रथम सन् 1953 में भारतगौरव आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से चैत्र कृष्णा एकम् को क्षुल्लिका दीक्षा धारण की, पुनः सन् 1954-1955 में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज के तीन बार दर्शन करके उनकी आज्ञा से उनके प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज से सन् 1956 में वैशाख कृष्णा दूज को आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। उसके बाद गुरुचरणों में दो चातुर्मास सम्पन्न किये, पुनः 5 वर्ष अपने गुरुभ्राता आचार्यश्री शिवसागर महाराज के संघ में (सन् 1958 से 1962 तक) धर्माराधना के साथ-साथ मुनि-आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं के अध्यापन में व्यतीत हुए। अनंतर आचार्यश्री की आज्ञा लेकर मैंने सम्मेदशिखर यात्रा के लिए अपनी शिष्याओं सहित आर्यिका संघ के रूप में संघ से पृथक् विहार किया और सन् 1963 में शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर की यात्रा करके कलकत्ता में चातुर्मास किया पुनः दक्षिण भारत की ओर विहार किया, तब सन् 1964 में हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) में चातुर्मास करके सन् 1965 में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में पहुँचकर वहाँ चातुर्मास करने का संयोग प्राप्त हुआ। उस समय मेरे पास आर्यिका पद्मावती जी, आर्यिका जिनमती जी, आर्यिका आदिमती जी, क्षुल्लिका श्रेयांसमती जी (आर्यिका श्रेष्ठमती) एवं क्षुल्लिका अभयमती जी आदि 5 माताजी (सभी मेरी शिष्याएँ) थीं।

श्रवणबेलगोला में चातुर्मास के मध्य आश्विन मास (अक्टूबर) में मैंने 15 दिन तक विंध्यगिरि पर्वत पर रहकर अखण्ड मौनपूर्वक भगवान बाहुबली के पास पिण्डस्थ ध्यान करने का संकल्प लिया। उस ध्यान में एक दिन प्रातःकाल लगभग 3 बजे मुझे

कुछ अद्भुत प्रकाशपुंज दिखाई दिया, उसी में तेरहद्वीप की पूरी अकृत्रिम रचना के दर्शन हुए। वे क्षण मेरे लिए वास्तव में अलौकिक स्वर्गसुख की अनुभूति के सदृश ही थे। मौन की पूर्णता के पश्चात् मैंने उस रचना के विषय में अपनी शिष्याओंको एवं वहाँ के पुराने भट्टारक चारुकीर्ति जी को बताया तो सबके हर्ष का पार नहीं था। मैंने ध्यान में उपलब्ध उस सम्पूर्ण रचना का वर्णन तिलोयपण्णत्ती, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों में पढ़ा तो मुझे अपूर्व आनंद हुआ और मैंने इसे बाहुबली के श्रीचरणों में कियेगये पिण्डस्थ ध्यान का अतिशय माना। उसके बाद यह रचना मेरे सतत ध्यान का विषय तो बनी ही रही, इसे धरती पर साकार करने का चिन्तन भी मन में जागृत हुआ।इधर आचार्यसंघ से पूज्य आचार्यश्री शिवसागर महाराज के आग्रहवश मैं पुनः सन् 1966-67 के चातुर्मास क्रमशः सोलापुर (महाराष्ट्र) और सनावद (मध्यप्रदेश) में करके सन् 1968 में संघ में आ गई। सन् 1969 में आचार्य शिवसागर महाराज की भी आकस्मिक समाधि हो गई, तब संघस्थ मुनि श्री धर्मसागर महाराज (आचार्यश्री वीरसागर महाराज के शिष्य) को आचार्यपट्ट प्राप्त हुआ। उनका भी पूर्ण वात्सल्यभाव होने से सन् 1971 तक मैंने संघ में रहकर सभी मुनि-आर्यिका आदि को अध्ययन कराया, अनंतरसन् 1972 में पुनः आर्यिकासंघ बनाकर मैंने राजस्थान से दिल्ली की ओर विहार किया। वहाँ सन् 1974 में आचार्यश्री देशभूषण महाराज की प्रेरणा से आयोजित भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाणमहोत्सव में सक्रिय भाग लेकर मैं अपने संघ सहित ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर पहुँची।

यहाँ यह बात विशेष ज्ञातव्य है कि यद्यपि मेरी भावना सन् 1965 से ही थी कि यह तेरहद्वीप रचना कहीं न कहीं निर्मित होनी चाहिए किन्तु कहीं भी मेरे न रहने के कारण तथा मेरे द्वारा किसी से पैसा आदि के विषय में न कहने के कारण वह रचना साकार न हो सकी थी पुनः सन् 1967 में जब सनावद से ब्र.मोतीचंद जी मेरे संघ में आए, तब मेरी भावना जानकर उन्होंने इस रचना को बनाने का संकल्प लिया और उनके साथ सन् 1972 से जुड़ गये ब्र. रवीन्द्र कुमार जी। मैंने इन लोगों से स्पष्ट कहा कि मैं कभी भी रचना निर्माण के लिए किसी श्रावक से पैसे के लिए नहीं कहूँगी। इन लोगों ने सहर्ष स्वीकार किया और मुझे आश्वस्त किया कि माताजी! आपको किसी से पैसे के लिए कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, हम लोग भारत की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज से सहयोग लेकर इस रचना को बनवाएँगे।

सन् 1972 में मेरी प्रेरणा से "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" नाम की एक संस्था का जन्म हुआ जिसका रजिस्ट्रेशन दिल्ली में करके उसके द्वारा तेरहद्वीप रचना निर्माण की चर्चा प्रारंभ हो गई। पुनः जब मैंने शास्त्रीय आधार से तेरहद्वीप की पूरी

रचना बताकर उसे खुले मैदान में बनाने की इच्छा बताई तब एक अंतरिम बैठक में विचार किया गया कि इस पूरी रचना के लिए बहुत बड़ी भूमि की आवश्यकता के साथ दीर्घकालीन योजना, वृहत् अर्थव्यवस्था एवं निर्माण के पश्चात् रखरखाव की भारी व्यवस्था करनी पड़ेगी। अन्त में विचार यह बना कि केवल एक प्रथम द्वीप के रूप में 'जम्बूद्वीप रचना' को खुले मैदान में बनाया जावे। इसी विचार-विमर्श को मैंने निर्णय का रूप प्रदान कर जम्बूद्वीप का शास्त्रीय स्वरूप डायरी में लिखकर संस्थान के कार्यकर्ताओं को प्रदान किया और उसके निर्माण का आकस्मिक संयोग बना हस्तिनापुर में।

हुआ यूँ कि सन् 1974 में वर्षायोग स्थापना से पूर्व मैंने संघ की 1-2 आर्यिकाओं को साथ लेकर मई-जून माह में दिल्ली से हस्तिनापुर की ओर विहार कर दिया। 7-8 दिन में हस्तिनापुर पहुँच गई, वहाँ पहुँचकर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि के दर्शन कर मुझे न जाने कैसी अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई कि इस तीर्थ का विकास होना चाहिए और मैंने तुरंत संघस्थ ब्र. मोतीचंद जी, संस्थान के अन्य पदाधिकारी एवं हस्तिनापुर दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्कालीन महामंत्री बाबू सुकुमारचंद जैन-मेरठ के सामने कहा कि हस्तिनापुर में कोई भूमि लेकर यहाँ जम्बूद्वीप रचना का निर्माण करो।

मुझे प्रसन्नता है कि मेरे एकमात्र आदेश पर उसी समय जुलाई 1974 में नसियां मार्ग पर संस्थान के नाम से एक भूमि क्रय की गई और आषाढ़ शुक्ला तृतीया, 22 जून 1974 को मेरे सानिध्य में उसी भूमि पर सर्वप्रथम जम्बूद्वीप के ठीक मध्य भाग में निर्मित होने वाले सुमेरु पर्वत का शिलान्यास हो गया पुनः मैंने भीषण गर्मी में ही दिल्ली जाकर पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघ के साथ ही चातुर्मास स्थापित किया। मैंने हस्तिनापुर के इस लघु प्रवास के मध्य ही मात्र 2-3 दिन में प्रथम बार जम्बूद्वीप विधान (लघु) की रचना की, जिसका साक्षात् चमत्कार यह देखने को मिला कि विधान की अंतिम पंक्ति लिखते ही सूचना मिली कि जम्बूद्वीप रचना निर्माण के लिए जमीन खरीदी का सौदा पक्का हो गया है। मैंने दिल्ली की ओर जाते समय रास्ते में उसी हस्तलिखित कॉपी से 'सरधना' नगर में जम्बूद्वीप विधान कराया, जो वहाँ के सभी भक्तों को अत्यधिक पसंद आया।

दिल्ली में पूज्य आचार्यश्री देशभूषण महाराज तो पूर्व से ही विद्यमान थे, उन्हीं की प्रेरणा से दिगम्बर-श्वेताम्बर सबके साथ मिलकर भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव सरकारी स्तर पर राष्ट्रव्यापी समारोह के रूप में मनाने की व्यापक रूपरेखाएँ तो सन् 1972 से ही चल रही थीं, उसी के लिए दिल्ली के

श्री परसादीलाल जैन पाटनी, श्री पारसदास जैन मोटर वाले आदि अनेक गणमान्य श्रावक मुझे ब्यावर (राज.) में दिल्ली विहार हेतु निवेदन करने गये थे और जुलाई 1972 में दिल्ली आने पर आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने मुझे सारी रूपरेखा बताकर महोत्सव की प्रारंभ से लेकर अंत तक सभी अंतरिम एवं बहिरंग मीटिंगों में सम्मिलित किया था। इसी मध्य दिल्लीवासियों ने मेरी प्रबल प्रेरणा पाकर अलवर (राज.) में विराजमान आचार्यश्री धर्मसागर महाराज के विशाल संघ को भी महोत्सव में सानिध्य प्रदान करने हेतु आमंत्रित किया, फलस्वरूप संघ दिल्ली आया एवं लाल मंदिर में संघ का वर्षायोग स्थापित हुआ पुनः जैन बालाश्रम-दरियागंज में संघ का प्रवास रहा। इससे पूर्व सन् 1973 में मुनि श्री विद्यानंद जी का भी दिल्ली आगमन हुआ अतः उनके सानिध्य का लाभ भी महोत्सव को प्राप्त हुआ।

अत्यन्त शालीनता एवं प्रभावनात्मकरूप में सम्पन्न हुए इस महोत्सव के पश्चात् नवम्बर-दिसम्बर 1974 में मैंने पुनः अपने आर्यिका संघ के साथ हस्तिनापुर की ओर विहार किया। उसी समय आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ससंघ एवं उपाध्याय विद्यानंद जी भी फरवरी 1975 में हस्तिनापुर पधारे, यहाँ होने वाले पंचकल्याणक में समस्त संघ का सानिध्य रहा। उसी समय माघ शु. त्रयोदशी को जम्बूद्वीप स्थल की नवोदित भूमि पर एक लघुकाय जिनालय में भगवान महावीर की अवगाहनाप्रमाण (7 हाथ/ सवा दस फुट) खड्गासन प्रतिमा भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान हुईं। वही सातिशय चमत्कारिक प्रतिमा आज कमल मंदिर में जम्बूद्वीप की मूलनायक प्रतिमा के रूप में विराजमान है इन्हीं के प्रसाद से जम्बूद्वीप रचना निर्माण एवं सम्पूर्ण हस्तिनापुर की श्रीवृद्धि हुई है इसीलिए मैं इन्हें कल्पवृक्ष भगवान महावीर कहती हूँ।

जम्बूद्वीप रचना निर्माण के क्रम में सर्वप्रथम डॉ. ओ.पी. जैन इंजीनियर-रुड़की के विशेष परामर्शानुसार 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत का निर्माण हुआ। इसमें निर्मित 16 चैत्यालयों की 16 सिद्धप्रतिमाओं का पंचकल्याणक महोत्सव 29 अप्रैल से 3 मई (वैशाख शु. तीज से सप्तमी) तक सम्पन्न हुआ, पुनः सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना की पूर्णता पर वैशाख शु. सप्तमी से द्वादशी (28 अप्रैल से 2 मई) तक जम्बूद्वीप के समस्त अकृत्रिम जिनमंदिर एवं देवभवनों के गृहचैत्यालयों में पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक कुल 201 जिनप्रतिमाएँ विराजमान हुईं, तब मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

समय वृद्धि के साथ मेरी प्रेरणा से यद्यपि अनेक साहित्यिक, निर्माणात्मक एवं प्रभावनात्मक कार्य सम्पन्न होते रहे किन्तु मेरे मन में अपनी मूलकृति तेरहद्वीप रचना को साकाररूप में देखने की भावना समाप्त न हो पाई, अतः मैंने अपने शिष्यों (आर्यिका चंदनामती, क्षुल्लक मोतीसागर और ब्र.रवीन्द्र कुमार) को कहा

कि अब एक बड़े हॉल में तेरहद्वीप की रचना अवश्य बनवाना है। मेरी इच्छानुसार 5 फरवरी 1993, माघ शु. तेरस को मेरे अनन्यभक्त श्री महावीर प्रसाद जैन, साउथ एक्स.-दिल्ली ने जम्बूद्वीप स्थल पर एक जिनालय का शिलान्यास किया, पुनः 11 फरवरी 1993, फाल्गुन कृ. पंचमी को मेरा संघ सहित विहार अयोध्या के लिए हो गया और अनेक वर्षों तक मांगीतुंगी-प्रयाग-वाराणसी-कुण्डलपुर-सम्मेदशिखर आदि तीर्थों की यात्रा तथा वहाँ के जीर्णोद्धार-विकास आदि में समय निकल गया, इस बीच में रवीन्द्र जी ने यद्यपि 64×64 फुट का गोलाकार जिनालय बनवा दिया किन्तु वहाँ मेरे न रुकने के कारण रचना न बन पाई, सो उसकी पूर्ति अब सन् 2005 से 2007 तक हुई है। अर्थात् सन् 2005 के चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा 11 अक्टूबर 2005 में मेरे परमभक्त श्री दीपक जैन-बनारस एवं डॉ. प्रमोद जैन-आगरा के करकमलों से उस जिनालय के अंदर तेरहद्वीप रचना का शिलान्यास हुआ, जो 57×57 फुट गोलाकार में बनकर तैयार हो गई है।

इस तेरहद्वीप रचना के अंदर पंचमेरुपर्वत सहित 458 अकृत्रिम स्वर्णिम जिनमंदिर हैं, 821 रंग-बिरंगे देवभवनों में देव-देवियों के गृहचैत्यालयों में सिद्ध प्रतिमाएँ हैं, ढाईद्वीप की 170 कर्मभूमियों में 170 समवसरणों की गंधकुटी में कमलासन पर तीर्थंकर भगवन्तों की 4-4 प्रतिमाएँ कुल 680 हैं, विद्यमान 20 तीर्थंकरों की 20 प्रतिमाएँ हैं। 5 भरतक्षेत्र 5 पाँच ऐरावत क्षेत्रों में वर्तमान चौबीसी की 1-1 विधिनायक जिनप्रतिमा हैं, सुमेरुपर्वत की पांडुकशिला की 4 प्रतिमाएँ एवं अजितनाथ तथा महावीर स्वामी की 2 प्रतिमा हैं। इसके साथ ही भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की 24 प्रतिमा तथा अकृत्रिम चैत्यालय के प्रतीकस्वरूप 108 प्रतिमाएँ हैं। इस प्रकार कुल 2127 प्रतिमाएँ इस हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप रचना में विराजमान हैं।

इनके अतिरिक्त इसमें जम्बूद्वीप की रचना चूँकि मात्र 8 फुट में बनी है, इसलिए स्थानाभाव के कारण वहाँ 66 देवभवनों में मात्र देव-देवी हैं, भगवान की प्रतिमाएँ नहीं हैं। इस रचना के जिनबिम्बों की अलौकिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 27 अप्रैल से 2मई 2007, वैशाख शु.11 से पूर्णिमा तक सम्पन्न हुई है। इस जिनालय के उत्तुंग कलात्मक शिखर पर स्वर्ण कलशारोहण देखकर मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। मैंने अपने आपको कृतकृत्य मानते हुए अपना जीवन धन्य समझा। मैंने उस समय कहा कि साढ़े ग्यारह वर्ष में अनेक यात्राओं के मध्य भी मैंने षट्खण्डागम की संस्कृत टीका लेखन को सतत लिखते हुए वैशाख कृ. दूज (4 अप्रैल 2007) को अपने 52वें आर्यिका दीक्षा दिवस के दिन अंतिम सोलहवीं पुस्तक को पूर्ण किया और मैंने इसे अपने अध्यात्मिक

जीवन का कलशारोहण माना। पुनः वैशाख शु. पूर्णिमा को तेरहद्वीप जिनालय के शिखर पर कलशारोहण देखकर अतीव प्रसन्नता का अनुभव करते हुए वीर निर्वाण संवत् 2533 सन् 2007 में दो वृहत् कार्यों की पूर्णता को मैं अपने जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानती हूँ।

तेरहद्वीप रचना निर्माण के पश्चात् मेरी 'तेरहद्वीप विधान' बनाने की भावना बनी, सो उसे बनाकर शीघ्र कम्प्यूटर कॉपी निकलवाकर सर्वप्रथम आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में षष्ठी से पूर्णिमा तक उसी ''तेरहद्वीप जिनालय'' में करवाया। इस प्रथम विधान को करने का सौभाग्य टिकैतनगर (जि.बाराबंकी-उ.प्र.) निवासी श्री प्रद्युम्न कुमार अमरचंद-नेमचंद जैन सर्राफ को प्राप्त हुआ, उन्होंने टिकैतनगर आदि नगरों से अनेकानेक भक्तों को साथ लाकर अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक विधान को किया और वीरशासन जयंती के दिन पूर्णाहुति करके श्रावण कृ. दूज को रथयात्रापूर्वक उसका समापन हुआ।

अब इस नवनिर्मित तेरहद्वीप विधान का मुद्रण हो रहा है।

इस विधान में 30 पूजाएँ, 2127 अर्घ्य, 101 पूर्णार्घ्य एवं 31 जयमालाएँ हैं। उनका स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है–

पूजा नं.	पूजा	अर्घ्य	पूर्णार्घ्य
पूजा नं. 1	– तेरहद्वीप पूजा (समुच्चय)		
पूजा नं. 2	– तेरहद्वीप शाश्वत जिनमंदिर पूजा		
पूजा नं. 3	– सुदर्शनमेरु पूजा	16	3
पूजा नं. 4	– जम्बू-शाल्मलिवृक्ष पूजा	2	2
पूजा नं. 5	– पर्वत जिनमंदिर पूजा	60	4
पूजा नं. 6	– धातकीखण्ड इष्वाकार पूजा	2	2
पूजा नं. 7	– विजयमेरु पूजा	16	3
पूजा नं. 8	– धातकी-शाल्मलि वृक्ष पूजा	2	2
पूजा नं. 9	– पूर्व धातकीखण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा	60	4
पूजा नं. 10	– अचलमेरु पूजा	16	3
पूजा नं. 11	– धातकी-शाल्मलि वृक्ष पूजा	2	2
पूजा नं. 12	– पश्चिम धातकीखण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा	60	4
पूजा नं. 13	– पुष्करार्ध द्वीप इष्वाकार पूजा	2	2
पूजा नं. 14	– मंदरमेरु पूजा	16	3
पूजा नं. 15	– पुष्कर-शाल्मलि वृक्ष पूजा	2	2

पूजा नं. 16 – पूर्व पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा	60	4
पूजा नं. 17 – विद्युन्माली मेरु पूजा	16	3
पूजा नं. 18 – पुष्कर-शाल्मलि वृक्ष पूजा	2	2
पूजा नं. 19 – पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा	60	4
पूजा नं. 20 – मानुषोत्तर जिनमंदिर पूजा	4	2
पूजा नं. 21 – नंदीश्वर द्वीप जिनमंदिर पूजा	52	2
पूजा नं. 22 – कुण्डलगिरि जिनमंदिर पूजा	4	2
पूजा नं. 23 – रुचकगिरि जिनमंदिर पूजा	4	2
पूजा नं. 24 – तेरहद्वीप देवभवन चैत्यालय पूजा	1024	13
पूजा नं. 25 – दश चौबीसी पूजा	240	10
पूजा नं. 26 – विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	20	1
पूजा नं. 27 – ढाईद्वीप नवदेवता पूजा	170	10
पूजा नं. 28 – पंचकल्याणक तीर्थ पूजा	37	2
पूजा नं. 29 – समवसरण पूजा	170	6
पूजा नं. 30 – सिद्ध पूजा	8	2
	2127	101

इस तेरहद्वीप विधान में तेरहद्वीप के अकृत्रिम 458 जिनमंदिरों की पूजा है। तेरहद्वीप के प्रमुख-प्रमुख 1024 देवभवनों के गृहचैत्यालयों की पूजा है।5 भरतक्षेत्र, 5 ऐरावत क्षेत्र के वर्तमानकालीन दश चौबीसी के 240 अर्घ्य हैं, विद्यमान बीस तीर्थंकरों के 20 अर्घ्य हैं और 170 कर्मभूमियों के नवदेवताओं के 170 अर्घ्य हैं, पंचकल्याणक तीर्थों के 37 अर्घ्य हैं, 170 समवसरण के 170 अर्घ्य, ढाईद्वीप से मुक्तहुए सिद्धों के 8 अर्घ्य ये कुल 458+1024+240+20+170+37+170+8=2127 अर्घ्य हैं।

संयोगवश तेरहद्वीप रचना में प्रतिमाओं की कुल संख्या 2127 है और इस विधान में अर्घ्य संख्या भी 2127 है।

तेरहद्वीप मण्डल विधान करने की विधि – सर्वप्रथम हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप जिनमंदिर में या किसी तीर्थ पर अथवा अपने शहर के मंदिर में या पाण्डाल में 16×16 या कम से कम 12×12 का मण्डल बनावें, उसको चंदोवा, झालर, चंवर आदि से सुशोभित करें पुनः रंगोली या रंग-बिरंगे चावलों से उस पर तेरहद्वीप मण्डल का नक्शा बनावें।

पुनः आचार्यसंघ, मुनिसंघ अथवा आर्यिकासंघ के सानिध्य में किन्हीं कुशल प्रतिष्ठाचार्य या विधानाचार्य को बुलाकर उनसे विधान सम्पन्न कराएँ।

विशेष बात यह है कि मण्डल विधान को करने वाले यजमान आदि सज्जाति एवं सदाचारी हों।

दशलक्षण पर्व, आष्टान्हिकपर्व या कभी भी इस विधान को कर सकते हैं।

सर्वप्रथम झण्डारोहण, अंकुरारोपण करके शुभमुहूर्त में विधान प्रारंभ करें। सकलीकरण, यज्ञदीक्षाविधि करके पंचामृत अभिषेकपूर्वक मण्डल पर भगवान विराजमान करें तथा 5 मेरू सहित 458 भगवान विराजमान करें अथवा जितने भी मेरू या जिनप्रतिमाएँ कर सकते हैं, विराजमान करें। पुनः मण्डप प्रतिष्ठा, पुण्याहवाचन आदि करके मण्डल विधान प्रारंभ करें। इस विधान में सवा लाख या कम से कम 11 हजार मंत्र जाप्य का अनुष्ठान करें। इसमें निम्नलिखित दो मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का अनुष्ठान कर सकते हैं –

1. ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

पुनः अनुष्ठान समापन पर पूर्णाहुति हवन करके रथयात्रा का आयोजन करें तथा अपनी शक्ति के अनुसार साधुसंघ में पिच्छी-कमण्डलु-शास्त्र भेंट करें तथा आर्यिकाओं-ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों को वस्त्र तथा श्रावकों को पुस्तक आदि भेंट करें।

विधिवत् किया गया यह विधान सर्व अमंगल को दूर करके सम्पूर्ण मंगल को प्रदान करने में निमित्त बनेगा।

इस प्रकार जिनेन्द्रपूजा की महिमा को जानकर आप सभी इस तेरहद्वीप विधान को महती धर्मप्रभावनापूर्वक अपने-अपने नगर-शहरों में सम्पन्न करके मनवांछित फल की प्राप्ति करें, यही मंगलकामना है। **यदि आप इस विधान को हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप रचना के समक्ष करेंगे तो सोने में सुगंधि वे समान सातिशय पुण्य का संचय तो होगा ही, उसका साक्षात् ज्ञान भी प्राप्त होगा।**

तेरहद्वीप रचना की समस्त जिनप्रतिमाएँ एवं तेरहद्वीप विधान की पूजाएँ हम सभी के हृदय को पावन करें, यही 2127 भगवन्तों के श्रीचरणों में प्रार्थना है।

श्रावण कृ. त्रयोदशी-शुक्रवार
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर, वीर नि.सं. 2533 10-8-07

तेरहद्वीप विधान-एक अनुपम कृति

जैसा कि आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने इष्टोपदेश ग्रंथ में कहा है–

अज्ञानोपास्तिरज्ञानं, ज्ञानं ज्ञानी समाश्रयः।
ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धमिदं वचः।।

अर्थात् अज्ञानी की उपासना से अज्ञान और ज्ञानी की उपासना से ज्ञान की प्राप्ति होती है क्योंकि यह निश्चित है कि जिसके पास जो वस्तु होती है वह उसी को दे सकता है, अन्य वस्तु नहीं दे सकता है। इस श्लोक को चरितार्थ करने वाली जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी हैं जिन्होंने अपने नाम को साकार करते हुए देश एवं समाज को जो अमूल्य साहित्यिक निधियाँ प्रदान की हैं वह कभी भी विस्मृत नहीं का जा सकती हैं।

पूर्व जन्मों में संचित किये गये पुण्य के फलस्वरूप उन्हें बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ पुनः भगवान महावीर के शासन की प्रथम साहित्यलेखिका के रूप में जब इन्होंने ग्रंथ लेखन का कार्य प्रारंभ किया तब अनेक आर्यिकाओं ने भी उनका अनुसरण कर ग्रंथों के लेखन किये हैं। सन् 1954 में उन्होंने सर्वप्रथम क्षुल्लिका अवस्था में 'कातंत्ररूपमाला' नामक संस्कृत व्याकरण को पढ़कर अपने ज्ञान की नींव मजबूत की, पुनः सन् 1955 में जिनसहस्रनाम मंत्रों की रचना करके आगे अष्टसहस्री जैसे महान क्लिष्ट ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करना, नियमसार, षट्खंडागम आदि ग्रंथों की संस्कृत टीका लिखना एवं 250 से अधिक मौलिक ग्रंथों का सृजन करना इनके गहन ज्ञान का ही प्रतीक रहा है। इसी शृँखला में यह ''तेरहद्वीप विधान'' नामकी कृति आप सभी भक्तों के समक्ष प्रस्तुत हो रही है। अनके पूजा-विधानों के समान ही इस विधान में भी सरलतापूर्वक पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में से प्रारंभिक तेरहद्वीपों के 458 अकृत्रिम चैत्यालय, अनेकानेक देव भवनों के मंदिर, 170 समवसरणों आदि के कुल 2127 अर्घ्यों के मंत्र बनाकर सभी भक्तों को जैनभूगोल का ज्ञान प्रदान किया है इसमें तीस पूजाएँ हैं जिनके माध्यम से

जिनेन्द्रभक्ति, अध्यात्मभावना, वैराग्यभावना एवं चारों अनुयोगों का सहज में ज्ञान प्राप्त होता है।

हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से विश्व में प्रथमबार निर्मित अद्वितीय तेरहद्वीप रचना के दर्शन करके भक्तगण जिस हार्दिक आल्हाद का प्रदर्शन करते हैं उसे शब्दों में व्यक्त करना भी असंभव है। भक्तों की प्रसन्नता देखकर माताजी भी बहुत सन्तुष्टि का अनुभव करती हैं और अपने परिश्रम को सार्थक समझती हैं।

मैंने इस रचना निर्माण के अन्तराल में स्वयं अनुभव किया है कि पिछले वर्ष सन् 2006 में माताजी इस रचना के माप आदि को निश्चित करने हेतु कठोर परिश्रम करती थीं। दिन में लगातार 8-8 घंटे बैठकर मंदिर-देवभवन आदि के डिजाइन एवं उनमें विराजमान होने वाली प्रतिमाओं की साइज, पर्वत, नदी, क्षेत्र आदि की लम्बाई-चौड़ाई-ऊँचाई को स्वयं 57x 57 फुट गोलाकार में यथास्थान बनाने हेतु लिखा करती थीं, उस समय की इनकी तन्मयता वास्तव में इन्हें भावों से उन अकृत्रिम चैत्यालयों के निकट ही पहुँचा देती थी। यही कारण है कि तेरहद्वीप रचना में पूर्ण सौन्दर्य के साथ-साथ सातिशय चमत्कार प्रगट हुआ है जिससे प्रत्येक दर्शनार्थी की मनोकामना सिद्ध होती देखी जा रही है।

तेरहद्वीप रचना के समक्ष यह तेरहद्वीप विधान प्रथमबार आषाढ़ के अष्टान्हिक पर्व में (सन् 2007 में) सम्पन्न हुआ तब हम सभी को अलौकिक आनन्द की अनुभूति हुई। इस विधान को करने और सुनने वाले सभी श्रद्धालु भाई-बहनों को हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर विशाल जिनालय में निर्मित अद्वितीय ''स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना'' का दर्शन अवश्य करना चाहिए।

इस प्रकार यह विधान सभी भव्यात्माओं के लिए पुण्यबंध का कारण बने, यही मंगल कामना है।

–आर्यिका चन्दनामती
20-8-2007

मोक्षसप्तमी, वीर नि.सं.2533
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

महिमाशाली तेरहद्वीप विधान

–क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी

मंडल विधानों की परम्परा अतिप्राचीन है। पूर्व में दो-चार विधान ही प्रचलित थे। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने विधानों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए एक-एक करके लगभग पचास विधानों की रचना कर दी। पूज्य माताजी ने जो भी विधान लिखे हैं, वे सभी एक दूसरे से बढ़-चढ़कर अपूर्व भक्तिपरक हैं।

प्रत्येक विधानों की जयमालाओं में भक्ति के साथ जिनागम के सार को भर दिया है। विधानों की रचना में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं। अनेक प्रकार के छंदों के प्रयोग से रोचकता आ जाती है। भाषा की सरलता से भी विधान पढ़ने तथा करने वालों का उत्साह निरंतर वृद्धिंगत होता रहता है।

देखा जा रहा है कि जब से माताजी ने विधानों की रचना की है तब से पूरे देश में निरंतर भक्ति गंगा प्रवाहित होती रहती है। सर्वत्र बड़ी संख्या में विधान बारह महीने होते रहते हैं।

अनेक प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए भी विधान किये जाते हैं तथा भक्तिरूप में भी किये जाते हैं। पूज्य माताजी के द्वारा छोटे-बड़े विधानों की रचना शताब्दि की बहुत बड़ी देन है।

यह तेरहद्वीप विधान भी बड़ी उपलब्धि है। पूरे तेरहद्वीपों में जहाँ-जहाँ अकृत्रिम चैत्यालय हैं, उनकी परोक्ष में वंदना हो जाती है।

यह विधान करने/कराने तथा सुनने वालों के लिए महान पुण्य-वर्धक हो, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

–ब्र.कु.सारिका जैन (संघस्थ)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित अनेक पूजन-विधानों की श्रृंखला में उनकी एक और नवीन कृति पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो रहीहै– तेरहद्वीप विधान। तेरहद्वीप जिनमंदिर की रचना पूर्ण होते ही पूज्य माताजी ने इस विधान रचना का शुभारम्भ किया एवं कुछ ही दिनों में यह विधान सुन्दरतम रूप में निर्मित होकर देश व समाज के समक्ष आ गया है।

प्रारम्भ से ही पूज्य माताजी के जीवन में (13) तेरह का अंक बहुत महत्त्वपूर्ण है सर्वप्रथम उनकी गृहस्थावस्था की माँ श्रीमती मोहिनी देवी ने 13 संतानों को जन्म दिया, जिनमें से प्रथम संतान के रूप में आज ज्ञानमती माताजी सम्पूर्ण देश-विदेश में अपने ज्ञान का आलोक प्रसारित कर रही हैं पुनः माँ मोहिनी ने 13 संतानों के प्रति अपने कर्तव्य को पूर्ण करने के पश्चात् 13 प्रकार के चारित्र का अर्थात् आर्यिका के व्रतों का 13 वर्ष तक निरतिचार पालन किया।

अब आपको जानना यह है कि मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में से तेरहद्वीप तक ही 458 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम तेरहद्वीपों में प्रथम जम्बूद्वीप का निर्माण हस्तिनापुर की पावन भूमि पर करवाया पुनः अब उनकी मूलकृति तेरहद्वीप रचना भी अपने स्वर्णिमस्वरूप के द्वारा जन-जन के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

जब इस तेरहद्वीप की रचना का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर था, तब से अनेक अतिशय-चमत्कार प्रगट होने लगे। आए दिन सैकड़ों की संख्या में भक्तगण आकर इस अतिशयकारी जिनमंदिर के दर्शन करके अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण कर रहे हैं।

कुछ दिन पूर्व एक सज्जन आए और पूज्य माताजी से कहने लगे कि माताजी! यह तेरहद्वीप रचना वास्तव में बहुत चमत्कारी है। माताजी बोलीं–आप तो अभी-अभी आये हैं, आपको इसकी महिमा का कैसे पता चल गया? वे सज्जन बोले–माताजी! जिस दिन हमारी दुकान पर तेरहद्वीप

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का आमंत्रण कार्ड पहुँचा, उस दिन हमारी दुकान पर इतनी अधिक बिक्री हुई, जितनी कि पहले कभी नहीं हुई थी, तब से ही मेरा श्रद्धान दृढ़ हो गया कि वास्तव में हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप की रचना अतिशयकारी है और मुझे शीघ्र ही उसके दर्शन हेतु जाना है।

इस प्रकार कितने ही भक्तगण आ-आकर अपने अनुभवों को बताकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। तेरहद्वीप की भक्ति में पूज्य माताजी द्वारा रचा गया यह तेरहद्वीप विधान आप सभी लोग अपने जीवन में कम से कम एक बार करने का संकल्प अवश्य करें। इस विधान में पूज्य माताजी ने बहुत ही सुन्दर शब्दों व सरल छन्दों का प्रयोग किया है तथा प्रत्येक पूजा की जयमालाओं में जिनागम का सार इतनी सरलता से भर दिया है ताकि इन्हें पढ़कर भक्तगण शास्त्र-पुराणों की कठिन बातों को सुगमता से समझ सकें। जिनेन्द्र-भक्ति की महिमा बताते हुए पूज्य माताजी ने बहुत सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है जिसमें से दो पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

तीनलोक की सम्पदा, करें हस्तगत भव्य।
तुम जयमाला कण्ठधर, पूरें सब कर्तव्य।।

अर्थात् भगवान जिनेन्द्रदेव की भक्ति किञ्चित् सुख ही नहीं अपितु तीनलोक की सम्पत्ति को प्रदान करने वाली है।

इस प्रकार अत्यधिक भक्ति-भावपूर्वक रचा गया यह तेरहद्वीप विधान सभी के मनोरथों को सफल करने में निमित्त बने, यही मंगलकामना है।

विधान की रचयित्री एवं हस्तिनापुर में निर्मित विश्व प्रसिद्ध जम्बूद्वीप रचना तथा स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना निर्माण की प्रेरणास्रोत गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त परिचय

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है-वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन बाराबंकी जिला (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः सन् 1956 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया एवं साथ ही अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

50 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक लगभग 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितने ही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर उन्हें 'डी.लिट्.' की मानद् उपाधि प्रदान की।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिंब पूज्य माताजी ने कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में अपनी प्रेरणा से जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण कराया है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की सृजनशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। वर्तमान में भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सान्निध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है। भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत इत्यादि विश्वोपयोगी सिद्धान्तों की गूंज को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने वाला भगवान महावीर जन्मभूमि पर निर्मित 'नंद्यावर्त महल तीर्थ' सभी लोगों के लिए आकर्षण का विशेष केन्द्र बिन्दु सिद्ध हो रहा है। पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ है एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की प्रभावना की गयी है।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, श्रुतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में मांगीतुंगी (महा.) में विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है। हम गौरव का अनुभव करते हैं कि ऐसी पूज्य माताजी अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष 15 अप्रैल 2006 को पूर्ण कर चुकी हैं। अपने इस गौरवमयी अनुभव को प्रदर्शित करते हुए सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज द्वारा दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर उनका अभिनंदन किया गया। इस प्रकार दीर्घकालीन तपस्या की पुण्यमूर्ति स्वरूप पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के श्री चरणों में शत-शत वंदन करते हुए सतत उनकी छत्रछाया एवं आशीर्वाद की अभिलाषा करती हूँ।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। **सन् 1972** में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् 1975 से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, कमरे, फ्लैट, कोठियां आदि बन चुके हैं। निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन **सन् 1974** से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही **सन् 1974** में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से **250** से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती कृत शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् 1975 से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रतिष्ठा वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से 4 महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्था द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से प्रवर्तित **''भगवान महावीर ज्योति''** रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान से परिचित हुआ है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में 4 फरवरी सन् 2000 को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके

अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् 2000-2001 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग-इलाहाबाद में **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षातीर्थ''** का नवनिर्माण हुआ है तथा 6 अप्रैल सन् 2001 को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर 2001 में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत सन् 2003-2004 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से हुआ है।

कुण्डलपुर विकास संपन्न होने के पहले ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगामी वर्ष 2005 को ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने का सारे देश को आह्वान किया और प्रेरणा दी। तदुपरांत पूज्य माताजी ससंघ ने कुण्डलपुर से 14 नवम्बर 2004 को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस के लिए विहार किया और पूज्य माताजी के सानिध्य में बनारस में भगवान पार्श्वनाथ की जन्मजयंती 6 जनवरी 2005 को इस पार्श्वनाथ महोत्सव वर्षका जोर-शोर के साथ सारे देश की जनता के बीच उत्तरप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री श्री शिवपाल सिंह यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा उद्घाटन किया गया। इस महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सर्वप्रथम लम्बे समय से प्रतीक्षित भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में उनकी विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरांत टिकैतनगर में भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया और भगवान पार्श्वनाथ की वह प्रतिमा ''पार्श्वनाथ दि. जैन इण्टर कालेज'' के परिसर में स्थापित की गई है। इसी श्रृंखला में सारे देश में दो वर्षों से भगवान पार्श्वनाथ के जीवन पर आधारित नाटिकाओं, प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन कियागया एवं अनेकानेक साहित्य का भी प्रकाशन हुआ है।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1974 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**

10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. स्व. इंजी. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

संरक्षक

1. स्व. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी एवं सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।

18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, (मवाना वाले) मेरठ (उ.प्र.)।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।

47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली
50. श्री सुभाष चन्द शुभचंद जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सीबाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार

एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेंद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावाटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।

विषयानुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	तेरहद्वीप वंदना	1
2.	चैत्यभक्ति	4
	पूजाएं	
3.	तेरहद्वीप पूजा (समुच्चय)	5
4.	तेरहद्वीप शाश्वत जिनमंदिर पूजा	10
5.	सुदर्शनमेरु पूजा	14
6.	जंबूद्वीपस्थ जंबूवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा	21
7.	जंबूद्वीप पर्वत जिनमंदिर पूजा	27
8.	धातकीखण्डद्वीप इष्वाकार जिनमंदिर पूजा	42
9.	विजयमेरु पूजा	47
10.	पूर्वधातकीखण्ड धातकीवृक्ष-शाल्मलि वृक्ष जिनमंदिर पूजा	55
11.	पूर्व धातकीखण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा	60
12.	अचलमेरु पूजा	78
13.	पश्चिमधातकी खण्डस्थ धातकीवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा	85
14.	पश्चिम धातकीखण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा	91
15.	पुष्करार्ध द्वीप इष्वाकार जिनमंदिर पूजा	108
16.	मंदरमेरु पूजा	114
17.	पूर्व पुष्करार्धद्वीप पुष्करवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा	122
18.	पूर्व पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा	127
19.	विद्युन्माली मेरु पूजा	144
20.	पश्चिम पुष्करार्ा पुष्करवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा	151
21.	पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा	157
22.	मानुषोत्तर जिनमंदिर पूजा	174
23.	नंदीश्वर द्वीप जिनमंदिर पूजा	180
24.	कुण्डलगिरि जिनमंदिर पूजा	193
25.	रुचकगिरि जिनमंदिर पूजा	199

26.	तेरहद्वीप देवभवन चैत्यालय पूजा	205
27.	दश चौबीसी पूजा	298
28.	विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	324
29.	ढाईद्वीप नवदेवता पूजा	330
30.	पंचकल्याणक तीर्थ पूजा	357
31.	समवसरण पूजा	367
32.	सिद्ध पूजा	388
31.	बड़ी जयमाला	394
32.	विधान की प्रशस्ति	398
33.	आरती	403
34.	भजन	404

तेरहद्वीप वंदना

–शंभु छंद –

सिद्धों का वंदन भव्यों को, जग में सब सिद्धिप्रदाता है।
अर्हंतदेव आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु सुखदाता हैं।।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा, जिनमंदिर भविजन हितकारी।
इनकी भक्ती सब भव्यों को, संसार जलधि तारणहारी।।1।।

श्री शांतिनाथ हैं सोलहवें, तीर्थंकर शांति विधाता हैं।
पंचम चक्रेश्वर षट्खंडाधिप-सार्वभौम जग त्राता हैं।।
बारहवें कामदेव सुंदर, त्रिभुवन में अद्भुत कामजयी।
मैं नमूँ अनन्तों बार इन्हें, पा जाऊँ शाश्वत शांत मही।।2।।

श्री कुंथुनाथ हैं सत्रहवें, तीर्थंकर करुणा सागर हैं।
ये छठे चक्रवर्ती चौदह-रत्नों नवनिधि के ईश्वर हैं।।
तेरहवें कामदेव सौंदर्य - खान शत इंद्रों से वंदित।
इन प्रभु का वन्दन करते ही, मिल जाय अपूर्व सौख्य संपत।।3।।

अरनाथ अठारहवें जिनवर, भवदुख से त्रिभुवन के त्राता।
सप्तम चक्री निज चक्ररत्न से, दिग्विजयी सब सुखदाता।।
चौदहवें कामदेव निरखत, सुरपति ने नेत्र हजार किये।
फिर भी नहिं तृप्त हुआ तुम लख, मैं वंदूँ भक्ति अपार लिये।।4।।

इस मध्यलोक में असंख्यात भी, द्वीप-समुद्र बखाने हैं।
इनमें तेरहद्वीपों तक ही, शाश्वत जिनमंदिर माने हैं।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, इनमें जिनप्रतिमा रत्नमयी।
प्रतिमंदिर इक सौ आठ कहीं, इन वंदत आत्मा सौख्यमयी।।5।।

उनचास हजार चार सौ चौंसठ, प्रतिमाएँ इन मंदिर में।
इन अकृत्रिम रत्नों निर्मित, प्रतिमाओं को वंदूँ नित मैं।।
ये स्वयंसिद्ध जिनप्रतिमाएँ, यद्यपी अचेतन हैं सच में।
फिर भी भक्तों को तीर्थंकर, चेतन सम ही फल दें जग में।।6।।

ढाईद्वीपों में पाँच मेरु, जिनगृह अट्ठानवे तीन शतक।
इक सौ सत्तर हैं कर्मभूमि, इनमें हैं आर्यखण्ड सुखप्रद।।
हैं इक सौ साठ विदेहक्षेत्र, सब शाश्वत कर्मभूमि उनमें।
भरतैरावत हैं पाँच-पाँच, नहिं शाश्वत कर्मभूमि इनमें।।7।।

यदि एक साथ तीर्थंकर हों, या चक्रवर्ति आदिक होवें।
तो इक सौ सत्तर हो सकते, उनका वंदन अघमल धोवे।।
हैं बने यहाँ सब समवसरण, इक सौ सत्तर को कोटि नमन।
भरतैरावत व विदेहों के, तीर्थंकर को भी कोटि नमन।।8।।

इन समवसरण में चार-चार, जिनप्रतिमाएँ उनको वंदन।
प्रभु भक्ती से प्रभु समवसरण का, हो साक्षात् मुझे दर्शन।।
इन ढाईद्वीप में तीर्थंकर, आदिक नवदेव हुए होते।
होवेंगे उन सबको वंदन, ये भविगण मोक्ष हेतु होते।।9।।

तेरहद्वीपों में देवभवन, अगणित माने हैं शास्त्रों में।
हैं आठ शतक इक्कीस भवन, इस रचना में प्रतिमा उनमें।।

यहाँ तेरहद्वीप जिनालय में, इक्किस सौ सत्ताइस प्रतिमा।
इन तीर्थंकर भगवन्तों की, सिद्धों की प्रतिमा की महिमा।।10।।

तेरहद्वीपों में अकृत्रिम, जिनमंदिर उन सबको वंदन।
ढाईद्वीपों में कृत्रिम भी, जिनमंदिर उनको कोटि नमन।।
तीर्थंकर समवसरण अर्हंत, आदिक नव देवों को वंदन।
जिन पंचकल्याणक भू निर्वाण-क्षेत्र अतिशय तीर्थों को नमन।।11।।

श्री ऋषभसेन आदिक गणधर, चौदह सौ बावन को वंदन।
सब नग्न दिगम्बर मुनी तीन कम, नव करोड़ को शत वंदन।।
श्री ब्राह्मी गणिनी आदि आर्यिका, माताओं का करूँ स्तवन।
सज्ज्ञानमती सिद्धी हेतू, सब सिद्धों को है कोटि नमन।।12।।

-दोहा-

तेरहद्वीप विधान यह, करो कराओ भव्य।
रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, सुख पावो नित नव्य।।13।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

चैत्यभक्ति

–हरिणीछंद –

जयति[1] भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृंभिता-
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ।
कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणो।
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।1।।

अर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः।
सर्वजगद्वंद्येभ्यो, नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः।।2।।

इति पंचमहापुरुषाः, प्रणुता जिनधर्म-वचन-चैत्यानि।
चैत्यालयाश्च विमलां, दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टां।।3।।

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि, वन्दे भूयांसि भूतये।।4।।

इति स्तुतिपथातीत - श्रीभृतामर्हतां मम।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः, सर्वास्रवनिरोधिनी।।5।।

–अंचलिका –

इच्छामि भन्ते! चेइयभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अहलोयतिरिय-लोयउड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसु वि लोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गन्धेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति, चेदियमहाकल्लाण करंति, अहमवि इह संतो तत्थ, संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

अथ मण्डलस्योपरि रजतपुष्पमिश्रित पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. श्री गौतम स्वामी रचित चैत्यभक्ति के मध्य के कुछ पद्य।

(पूजा नं. 1)

तेरहद्वीप पूजा

(समुच्चय)

–दोहा–

स्वयंसिद्ध ये द्वीप हैं, तेरहद्वीप महान।
सब द्वीपों में जिनभवन, अनुपम रत्न निधान।।1।।

चउसौ अट्ठावन यहाँ, जिनमंदिर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुण खान।।2।।

इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक –शंभु छंद

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ।।

तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
शृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद यजने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा करते ही ज्ञान चमकता है।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ।
शिव कांता सत्वर वरने की, बस आशा लेकर आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
कामदेव मद नाश, पाऊँ आनन्द धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।**

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप।
जिनवर गणधर साधुगण, नमूँ नमूँ निजरूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय पाँचों मेरू के जिन-मंदिर हैं शाश्वत रत्नमयी।
जय जय जिनमंदिर बीसों ही, गजदंतगिरी के स्वर्णमयी।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दश जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय वक्षारगिरी के भी, अस्सी जिनगृह गरिमाशाली।।2।।

जय इक सौ सत्तर विजयार्ध के, सब जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय तीसों कुल पर्वत के तीसों जिनगृह भव दुःखहारी।।
इष्वाकृति मनुजोत्तर पर्वत के, चार चार जिनमंदिर हैं।
नंदीश्वर के बावन अतिशय, शाश्वत जिनमंदिर मनहर हैं।।3।।

कुण्डलगिरि रुचकगिरी के भी, हैं चार-चार मंदिर सुंदर।
प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएँ हैं, इक सौ आठ कही मनहर।।
सब रत्नमयी जिनप्रतिमाएं, जिनवर भक्ती सम फल देतीं।
भक्तों की इच्छा पूर्तीकर, अंतिम शिव में पहुँचा देतीं।।4।।

पांचों मेरू के पांडुक वन, विदिशा में चार शिलाएँ हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से, पावन पूज्य शिलाएँ हैं।।
पण भरत पाँच ऐरावत में, होते हैं चौबिस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवलि गणधर मुनि, साधूगण होते क्षेमंकर।।5।।

उनके कल्याणक से पवित्र, पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं, उनके मनवांछित कार्य बनें।।
सब इक सौ साठ विदेहों में, सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहू सुबाहु आदिक विहरें, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।।6।।

उन सर्व विदेहों में संतत, तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धी, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।।

आकाशगमन करने वाले, ऋषिगण मेरू पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी, जिनवंदन कर हर्षाते हैं।।7।।

तेरहद्वीपों के चार शतक, अट्ठावन मंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों, उन सबको भी शत शत वंदन।।
जितने तीर्थंकर हुए यहाँ, हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।8।।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, जो भी इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं, सुस्थिर होकर निज आत्मा में।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः, अरिहंत अवस्था पाते हैं।
इन कर्मभूमियों से फिर वे, भगवान सिद्ध बन जाते हैं।।9।।

–दोहा–

पंच परमगुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूँ, 'ज्ञानमती' धर नेह।।10।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकर-केवलिसर्वसाधुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 2)

तेरहद्वीप शाश्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

श्री स्वयंसिद्ध जिनमंदिर यहाँ पर, चार शतक अट्ठावन हैं।
मणिमय अकृत्रिम जिनप्रतिमा, ऋषि मुनिगण के मनभावन हैं।।
सौ इंद्रों से वंदित जिनगृह, मैं इनकी पूजा नित्य करूँ।
आह्वानन संस्थापन करके, निज के सन्निध नित्य करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-शंभु छंद–

ये जन्म-जरा-मृति तीन रोग, भव-भव से दुख देते आये।
त्रयधारा जल की दे करके, मैं पूजूँ ये त्रय नश जायें।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती, निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।1।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध व्याधी रोग शोक, तन में मन में संताप करें।
चंदन से तुम पद चर्चूं मैं, यह पूजा भव-भव ताप हरे।।ये.।।2।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में इंद्रिय सुख खंड-खंड, नहिं इनसे तृप्ती हो सकती।
अक्षत के पुंज चढ़ाऊँ मैं, अक्षय सुख देगी तुम भक्ती।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती, निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।3।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कामदेव ने भ्रांत किया, निज आत्मिक सुख से भुला दिया।
ये सुरभित सुमन चढ़ाऊँ मैं, निज मन कलिका को खिला लिया।।ये.।।4।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन हेतु नाथ, त्रिभुवन के भक्ष्य सभी खाये।
नहिं मिली तृप्ति इसलिए प्रभो! चरु से पूजत हम हर्षाये।।ये.।।5।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा निज घट में, नहिं ज्ञान ज्योति खिल पाती है।
दीपक से आरति करते ही, अघ रात्रि शीघ्र भग जाती है।।ये.।।6।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप घटों में धूप खेय, चहुँदिश में सुरभि महकती है।
सब पाप कर्म जल जाते हैं, गुणरत्नन राशि चमकती है।।ये.।।7।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध फल की आश लिये, बहुते कुदेव के चरण नमें।
अब सरस मधुर फल से पूजें, बस एक मोक्षफल आश हमें।।ये.।।8।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदि में चांदी के, सोने के पुष्प मिला करके।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ हे जिनवर! रत्नत्रयनिधि दीजे तुरते।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती, निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।9।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शीत सुगंधित नीर से, प्रभुपद धार करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, आतम सुख विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले सर्वसुख संपदा, परमानंद तुरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय जय तेरहद्वीप के सब, शाश्वत जिनमंदिर मुनि वंदें।
जय जय जिनप्रतिमा रत्नमयी, भविजन वंदत ही अघ खंडें।।
जय जय जिनमूर्ति अचेतन भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनकी आतम निधि भर देतीं।।1।।

जय पाँच मेरु के अस्सी हैं, जंबू आदिक तरु के दश हैं।
कुल पर्वत के तीसों जिनगृह, गजदंतगिरी के बीसहिं हैं।।
वक्षार गिरी के अस्सी हैं, इक सौ सत्तर रजताचल के।
दो इष्वाकार जिनालय हैं, चारहिं मंदिर मनुजोत्तर के।।2।।

नंदीश्वर के बावन कुंडलगिरि, रुचकगिरी के चउ-चउ हैं।
ये चार शतक अट्ठावन इन, जिनगृह को मेरा वंदन है।।

प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, सब इकसौ आठ-आठ राजें।
उनचास हजार चार सौ चौंसठ, प्रतिमा वंदत अघ भाजें।।3।।

स्वात्मानंदैक परम अमृत, झरने से झरते समरस को।
जो पीते रहते ध्यानी मुनि, वे भी उत्कंठित दर्शन को।।
ये ध्यान धुरंधर ध्यान मूर्ति, यतियों को ध्यान सिखाती हैं।
भव्यों को अतिशय पुण्यमयी, अनवधि पीयूष पिलाती हैं।।4।।

ढाई द्वीपों के मंदिर तक मानव विद्याधर जाते हैं।
आकाशगमन ऋद्धीधारी, ऋषिगण भी दर्शन पाते हैं।।
आवो आवो हम भी पूजें, ध्यावें वंदें गुणगान करें।
भव-भव के संचित कर्मनाश, पूर्णैक ''ज्ञानमति'' उदित करें।।5।।

–घत्ता –

जय जय श्री जिनवर, धर्मकल्पतरु, जय जिनमंदिर सिद्धमही।
जय जय जिनप्रतिमा, सिद्धन उपमा, अनुपम महिमा सौख्यमही।।6।।

ॐ ह्रीं तेरहद्वीपसंबंधिचतुःशत अष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 3)

सुदर्शन मेरु पूजा

स्थापना (गीता छंद)

त्रिभुवन भवन के मध्य सर्वोत्तम सुदर्शन मेरु है।
यह प्रथम जंबूद्वीप में, सर्वोच्च मेरु सुमेरु है।।
सोलह जिनालय में जिनेश्वर, मूर्तियाँ हैं सासती।
थापूँ यहाँ उनको जजूँ, वे सर्व दुख संहारती।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-अडिल्ल छंद –

गंगानदि को प्रासुक जल घट में भरूँ।
जल से पूजा करते सब कलिमल हरूँ।।
मेरु सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंधित अष्ट गंध कर में लिया।
जिनपद चर्चत चाह दाह का क्षय किया।।मेरु.।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता फल सम तंदुल धवल अखंड हैं।
पुंज धरत जिन आगे होत अनंद है।।मेरु.।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपादप के सुरभित सुमन मंगाय के।
कामजयी जिनपाद जजूँ शिर नाय के।।मेरु.।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक बरफी पुआ सरस चरु ले लिया।
क्षुधाव्याधि हर तुम पद में अर्पण किया।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत भर दीपक ज्योति सहित आरति करूँ।
मोह ध्वांत हर जिन अर्चूं भ्रम तम हरूँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु वर धूप अग्नि में खेवते।
दुष्ट कर्म अरि दग्ध हुए तुम सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता काजू द्राक्ष फलों को लाय के।
सरस मोक्ष फल हेतु जजूँ हरषाय के।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य भर थाल में।
पूजूँ अर्घ चढ़ाऊँ नाऊँ भाल मैं।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

परम शांति के हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सर्वश्रेष्ठ गिरिराज है, मेरु सुदर्शन नाम।
चारों वन के जिनभवन, नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मेरु सुदर्शन में पृथ्वी पर, भद्रसाल वन रम्य महान।
पूर्व दिशा में जिनमंदिर है, त्रिभुवन तिलक अतुल सुखदान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सुराचल भद्रसाल में, दक्षिण दिश जिनमंदिर जान।
सुर नर किन्नर यक्ष यक्षिणी, विद्याधर गण पूजें आन।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम देवगिरि भद्रसाल में, पश्चिम दिश जिनभवन अनूप।
रत्नत्रय निधि के इच्छुक जन, पूजन करत लहें सुखरूप।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मेरु के भद्रसाल में, उत्तर दिश जिनराज निकेत।
भव भय दुःख हरण हेतू भवि, नित प्रति पूजें भक्ति समेत।।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

मेरु सुदर्शन विषैं, सुभग नंदनवन जानो।
सुरनरगण से पूज्य, पूर्व दिक् जिनगृह मानो।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाये, मिले निज संपति आई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन के मांहि, जिनालय दक्षिण दिश हैं।
नित्य महोत्सव साज, देवगण पूजन रत हैं।।जल.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश जिननिलय, मनोहर नंदनवन में।
सुर विद्याधर रहें, सतत भक्तीरत जिन में।।जल.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दनवन के उत्तर, जिनमंदिर सुखकारी।
उसमें जिनवर बिंब, दुरितहर मंगलकारी।।जल.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

वन सौमनस महान है, मेरु सुदर्शन माहिं।
पूरब दिश में जिनभवन, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाहिं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सौमनस जिनेश गृह, दक्षिण दिशा मंझार।
वसु विधि अर्घ्य संजोय के, पूजों हो भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस के, स्वर्णमयी जिनधाम।
भक्तिभाव से अर्घ्य ले, पूजों जिनवर धाम।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश सौमनस में, श्री जिनभवन महान्।
त्रिभुवनतिलक प्रसिद्ध है, जजूँ अर्घ्य ले आन।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

मेरू पर चौथा पांडुकवन, उसके पूरब दिश सुन्दर है।
रत्नों की मूर्ती से संयुत, मणिकनकमयी जिनमंदिर हैं।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिनभक्ती नौका प्राप्त करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन में दक्षिण दिश का, जिनभवन अनूपम कहलाता।
जो दर्शन-वंदन करते हैं, उनको यह अनुपम फलदाता।।जल.।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के पश्चिम दिश में, जिन चैत्यालय महिमाशाली।
सुरनर विद्याधर से पूजित, सब ताप हरे गुणमणिमाली।।जल.।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के उत्तर दिश में, शुभ त्रिभुवनतिलक जिनालय है।
नामोच्चारण से पाप दहे, भक्तों के लिए सुखालय है।।जल.।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (अडिल्ल छंद)

प्रथम मेरु के सोलह जिनगृह नित जजूँ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय पूर्ण सुख को भजूँ।।
काम विजेता जिनवरबिंब मनोज्ञ हैं।
पूजत ही निष्काम बनूँ अतियोग्य मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा

सोलह जिनगृह में जिनप्रतिमा जानिये।
सत्रह सौ अट्ठाइस संख्य बखानिये।।
प्रतिजिनगृह में इक सौ आठ प्रमाण हैं।
पूजूँ मैं रूचिधार मुझे सुखखान हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत-अष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के विदिक् में, शिला चार अभिराम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले स्वात्म विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

—दोहा—

सर्वोत्तम सर्वोच्च है, प्रथम मेरु गिरिराज।
उसकी यह जयमालिका, हर्षित गाऊँ आज।।1।।

—शंभु छंद—

जय मेरु सुदर्शन है अनुपम, सोलह चैत्यालय से सोहे।
अध्यात्म शिरोमणि योगीजन, उनका भी अतिशय मन मोहे।।
उपवन वापी से कूटों से, परकोटों से सुर भवनों से।
मंडित रमणीक महासुंदर, कांचन मणिमय शुभरत्नों से।।2।।

पृथ्वी पर भद्रसाल वन है, चंपक तरु आदिक से भाता।
है पाँच शतक योजन ऊपर, नन्दनवन अतिशय सुखदाता।।
इससे साढ़े बासठ हजार, योजन ऊपर सौमनस बनी।
छत्तीस हजार महायोजन, ऊपर पांडुकवन सौख्यघनी।।3।।

चारों वन के चारों दिश में, अकृत्रिम चैत्यालय मानो।
प्रति मंदिर इक सौ आठ कही, जिनप्रतिमा अतिशययुत जानो।।
इनके दर्शन से घोर महा, मिथ्यात्व तिमिर भी नश जाता।
सम्यग्दर्शन की ज्योति जगे, आत्मा आत्मा को लख पाता।।4।।

भव भव से संचित पापराशि, इक क्षण में भस्म हुआ करती।
जिनराज चरण की भक्ती ही, भवि के भवभव दुःख को हरती।।
पांडुकवन की विदिशाओं में, पांडुक आदिक हैं चार शिला।
तीर्थंकर के अभिषव जल से, वे पूज्य हुईं सुरवंद्य इला।।5।।

जय भद्रसाल के जिनमंदिर, जय नन्दनवन के जिनगेहा।
जय सौमनसं पांडुकवन के, जिनभवन जजूँ मैं धरनेहा।।
ये मूर्ति अचेतन होकर भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके सब संकट हर लेतीं।।6।।

—दोहा—

मेरुसुदर्शन की भविक, पूजा करो पुनीत।
मेरुसदृश उत्तुंग फल, लहो शीघ्र ही मीत।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छंद—

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 4)

जंबूद्वीपस्थ जंबूवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा

–स्थापना (गीता छंद)

गिरि मेरु के उत्तर दिशी, उत्तर कुरू शोभे अहा।
उसमें सुदिक् ईशान के, जंबूतरू राजे महा।।
दक्षिण दिशा में देवकुरु, नैऋत्य कोण सुहावनी।
तरु शाल्मलि शुभरत्नमय, सुन्दर दिखे शाखा घनी।।1।।

–दोहा–

दोनों तरु की शाख पर, दो श्रीजिनवरगेह।
आह्वानन कर मैं जजूँ, सदा हृदय धर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक-अडिल्ल छंद–

सुरगंगा को नीर, सुरभि प्रासुक लिया।
जिनपद धारा देय, सकल मल क्षय किया।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःजलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि घनसार, सुकुंकुम गंध ले।
सिद्धों के प्रतिबिम्ब, चरण को चर्च ले।।

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः चंदननिर्वपामीति स्वाहा।

जल से धौत सुअक्षत, मुक्ताफल समा।
पुंज धरूँ जिनसन्मुख, भक्ती अनुपमा।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यअक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही चमेली कमल, केवड़ा फूल ले।
प्रभु के चरण चढ़ाऊँ, भव के दुख टले।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःपुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्यजात[1] घेवर बावर मोदक घने।
चरु की पूजा नित्य, क्षुधा व्याधी हने।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप की ज्योति, दशों दिश तम हरे।
अन्तर भेद विज्ञान, प्रगट हो भ्रम टरे।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःदीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अगनि में खेय, धूम्र दशदिश उड़े।
कर्म पुंज प्रज्वले, सतत आनन्द बढ़े।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःधूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

1. ताजे।

सुरतरु के परिपक्व, सरस फल लाय के।
प्रभु की पूजा करूँ, हरष गुण गाय के।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःफलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुचन्दन अक्षत, फूल चरू मिले।
दीप धूप शुचि उत्तम, फल युत अर्घ्य ले।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष, तने जिनधाम को।
जो पूजें धर प्रीति, लहें शिवधाम को।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तिनके जिनगृह को जजूँ।
पुष्पांजलि कर नित्य, जो पूजें सो शिव लहें।।1।।

इति जंबूवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थाने मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद –

जंबूतरू की उत्तरी, शाखा विषे जिनधाम है।
सब देव-देवी करें अर्चा, मैं जजूँ इह थान है।।

वर नीर चंदन आदि वसुविध, द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी, अर्घ्य से पूजन किया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूवृक्षस्य उत्तरशाखायां जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रुम शाल्मलि की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनगेह है।
योगी सदा ध्याते उन्हें, हम भी जजें धर नेह है।।
वर नीर चंदन आदि वसुविध, द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी, अर्घ्य से पूजन किया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्य दक्षिणशाखायां जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर, दो जिनमंदिर सिद्ध।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयसर्व-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सोलह जानिए, जिनप्रतिमा अभिराम।
नितप्रति अर्घ्य चढ़ाए के, शत-शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्यविराजमानद्विशतषोडशजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **तरु की शाखा माहिं, रत्नमयी जिनबिंब हैं।**
तिन की यह जयमाल, भक्ति भाव से मैं पढ़ूँ।।1।।

नरेन्द्र छंद – **जंबू तरु का स्वर्णिम स्थल, पाँच शतक योजन है।**
इस थल का परकोटा कांचन-मयी मनोमोहन है।।

पीठ आठ योजन का ऊँचा, मध्य माहिं चांदी का।
इस पर जंबूवृक्ष अकृत्रिम, पृथ्वीमय रत्नों का।।2।।
यह तरु तुंग आठ योजन है, वज्रमयी जड़ जानो।
मणिमय तना हरित मोटाई, एक कोश पर मानो।।
तरु की चार दिशाओं में हैं, चार महा शाखायें।
छह योजन की लम्बी इतने, अन्तर से लहरायें।।3।।

मरकत कर्केतन मूँगा, कांचन के पत्ते उत्तम।
पाँच वर्ण रत्नों के अंकुर, फल अरु पुष्प अनूपम।।
इसमें फल जामुन सदृश हैं, कोमल चिकने दिखते।
रत्नमयी हैं फिर भी अद्भुत, पवन लगत ही हिलते।।4।।

उत्तर शाखा पर जिनमंदिर, सुरगृह त्रय शाखा पे।
सम्यक्त्वी आदर व अनादर, व्यंतर रहते उनपे।।
तरु को चारों तरफ घेरकर, बारह पद्म वेदियाँ।
उनके अंतराल में तरु की, परिकर वृक्ष पंक्तियाँ।।5।।

एक लाख चालिस हजार, इक सौ उन्नीस कहाएँ।
इन जंबू परिवार वृक्ष पर, सुर परिवार रहाएँ।।
मेरू की ईशान दिशा में, नीलाचल के दाएँ।
माल्यवन्त के पश्चिम में, सीता के पूर्व कहाएँ।।6।।

तरु स्थल के चारों तरफे, त्रय वन खंड कहाते।
फल फूलों युत सुरमहलों युत, जल वापी युत भाते।।
इस द्रुम के जिनगृह में इक सौ, आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
इसी तरह शाल्मली वृक्ष की, जानो सारी रचना।।7।।

शाल्मलि तरु के अधिपति व्यंतर, वेणु वेणुधारी हैं।
ये सुर सम्यक्त्वी जिनमत के, प्रेमी गुणधारी हैं।।
जितने जंबू शाल्मलि तरु हैं, उतने जिनमंदिर हैं।
क्योंकि सभी पर सुर रहते हैं, सबमें जिनमंदिर हैं।।8।।

दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम, हैं स्वतंत्र दो तरु के।
उनकी अरु सब जिनप्रतिमा की, करूँ वंदना रुचि से।।
सुर किन्नरियाँ नित गुण गातीं, वीणा की लहरों से।
दर्शन करके नर्तन कीर्तन, करती भक्ति स्वरों से।।9।।

–घत्ता –

जय जय जिनप्रतिमा, अद्भुत महिमा, पढ़े सुने जो जयमाला।
जय 'ज्ञानमती' श्री, सिद्धिवधूप्रिय, सो नर पावे खुशहाला।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 5)

जंबूद्वीप पर्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

इस जंबुद्वीप में कुल पर्वत, छह हैं गजदंत गिरी चउ हैं।
वक्षाराचल सोलह सुन्दर, विजयार्ध गिरी सित चौंतिस हैं।।
इन सब पर शाश्वत जिनमंदिर, मणिमय शाश्वत जिनप्रतिमाएँ।
आह्वानन विधि कर मैं पूजूँ, ये स्वात्म गुणों को दिलवाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (स्रग्विणी छंद)

पद्मद्रह नीर शीतल सुगंधित लिया।
नाथ के पाद में तीन धारा किया।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरूँ भक्ति की नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध से नाथ पादाब्ज को चर्चते।
देह की दाह मेटूँ प्रभू अर्चते।।शाश्वते.।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों के सदृश शालि के पुंज से।
पूजहूँ आप को सौख्य पूरो अबे।।शाश्वते.।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिका पारिजातादि चुन के लिए।
पुष्प अर्पण करत कीर्ति सौरभ किये।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरूँ भक्ति की नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियाँ मोदकादी भरे थाल में।
पूजते आत्म तृप्ती सु तत्काल में।।शाश्वते.।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कर्पूर ज्योती तमो वारती।
आरती से भरे ज्ञान की भारती।।शाश्वते.।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी उठे अभ्र में।
कर्म भस्मी हुए सौख्य हो स्वात्म में।।शाश्वते.।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।
मोक्ष की आश पूरो प्रभो शीघ्र में।।शाश्वते.।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य में रत्न धरके चढ़ाऊँ प्रभो।
रत्नत्रय दीजिए शीघ्र ही हे विभो।।शाश्वते.।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

जंबूद्वीप में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

'हिमवान' पर्वत कनकद्युतिमय, द्वय तरफ बहुवर्ण का।
वर कूट ग्यारह में कहा, इक सिद्धकूट जिनेन्द्र का।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर, तिरुँ भक्ती नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत 'महाहिमवान' चांदी-वर्ण का सुन्दर दिखे।
इस उपरि आठ सुकूट पूरब, सिद्धकूट परम दिखे।।उस पर.।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत 'निषध' है तप्त स्वर्णिम, वर्णबहु द्वय पार्श्व है।
ह्रद वेदिका वन कूट नव में, सिद्धकूट विख्यात है।।उस पर.।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'नीलगिरि' वैडूर्यवर्णी, द्वय तरफ पंचरंगिमा।
नवकूट में इक सिद्धकूट, जजें सदा रवि चन्द्रमा।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर, तिरुँ भक्ती नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रुक्मी' अचल रूपामयी, वर कूट आठ सुशोभते।
पूरब दिशा में 'सिद्धकूट', सुरेन्द्र का मन मोहते।।उस पर.।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिखरी' अचल सोने सदृश, शुभ कूट ग्यारह नित्य हैं।
पूरब दिशा में सिद्धकूट, सुपूजते सब भव्य हैं।। उस पर.।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य

–दोहा–

'माल्यवंत' गजदंत है, मेरू के ईशान।
वर्ण रुचिर वैडूर्यमणि, नवकूटों युत मान।।
मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर, पाऊँ नव निधि रिद्धि।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसुमेरुपर्वतईशानदिक्माल्यवान्गजदंतपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के आग्नेय दिश, 'महासौमनस' नाम।
रजतमयी गजदंत यह, सातकूट युत जान।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसुमेरुपर्वतआग्नेयदिक्महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के नैऋत्यदिश, 'विद्युत्प्रभ' गजदंत।
वर्ण तपाये स्वर्णसम, नव कूटहिं शोभंत।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसुमेरुपर्वतनैऋत्यदिक्विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमादनाचल' कहा, मेरू के वायव्य।
सातकूट युत स्वर्णसम, पूजें सुर नर भव्य।।मेरु.।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसुमेरुपर्वतवायव्यदिक्गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षारपर्वत जिनालय अर्घ्य

–कुसुमलता छंद –

सीतानदि के उत्तर तट पर, भद्रसाल वेदी के पास।
'चित्रकूट' वक्षार स्वर्णमय, चार कूट से मंडित खास।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर, श्रीजिनमंदिर बना विशाल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे चित्रकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर तट पर, क्रम से 'नलिनकूट' वक्षार।
स्वर्णमयी पर चार कूट हैं, देव-देवियाँ करें विहार।।नदी.।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे नलिनकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार अचल पर, विद्याधर गण करें विहार।
पर्वत महिमा निरख-निरखकर, तृप्त हुए मन हर्ष अपार।।नदी.।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे पद्मकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार मनोहर, सुर वनिताएँ करें विनोद।
चारण मुनिगण विहरण करते, समरसमय मन भरें प्रमोद।।नदी.।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे एकशैलवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य वेदिका पास।
अचल 'त्रिकूट' चार कूटों युत, जिनगृह युत वक्षार सनाथ।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर, श्रीजिनमंदिर बना विशाल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रम से फिर 'वैश्रवण' कूट है, देव-देवियों से भरपूर।
वापी वन उद्यान मनोहर, मुनिगण करें पाप को दूर।।नदी.।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजनगिरि' वक्षार मनोहर, स्वर्णवर्णमय अतिसुखकार।
सुर विद्याधर गगन गमनचर, ऋषिगण को भी है सुखकार।।नदी.।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे अंजनगिरिवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन वक्षार आठवाँ, योगीजन करते नित ध्यान।
निज आतम परमानंदामृत, अनुभव कर हो रहे महान्।।नदी.।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे आत्मांजनवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

पश्चिमविदेह सीतोदा के, दक्षिण में भद्रसाल वेदी।
उस सन्निध 'श्रद्धावान' कहा, वक्षार कनकमय पर्वत ही।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावान-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, गिरि 'विजटावान' कहाता है।
वक्षार सदा चउकूटों युत, सुरनर सब के मन भाता है।।नदी.।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावान-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' है वक्षार कहा, इस पर रत्नों की वेदी है।
परकोटे वापी उपवन से, जिनगृह से कर्मन भेदी हैं।।नदी.।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविष-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार 'सुखावह' अति सुन्दर, सुर ललना की क्रीड़ा भूमी।
यतिगण के विहरण से पावन, सबको आनन्दकरी भूमी।।नदी.।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावह-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर, शुभ भूतारण्य बनी वेदी।
उस सन्निध 'चंद्रमाल' पर्वत, जन मन का मोहतिमिर भेदी।।नदी.।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे चन्द्रमाल-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार मनोहर 'सूर्यमाल', सोने के भवन सुहाते हैं।
सुरललनाओं की वीणा के, तारों से जिनगुण गाते हैं।।नदी.।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे सूर्यमाल-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'नागमाल' वक्षार अचल, अनुपम कांती छिटकाता है।
जिनवर के दर्शन करते ही, सबके अघपुंज नशाता है।।नदी.।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे नागमाल-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार सोलवाँ 'देवमाल', रत्नों की काँति लजाता है।
जिनदेव देव के गृह में नित, देवों का नृत्य कराता है।।नदी.।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे देवमाल-वक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतीस विजयार्ध जिनालय अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

सीतानदि के उत्तरतट में, भद्रसाल वन पासे।
कच्छादेश विदेह बीच में, विजयारध गिरि भासे।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करने जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे कच्छादेशमध्यविजयार्ध-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के पश्चिम उस तट पर, देश सुकच्छा सोहे।
तामध रजताचल अतिसुंदर, सुर किन्नर मन मोहे।।नव.।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे सुकच्छादेशमध्यविजयार्ध-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महाकच्छा कहलाता, रूपाचल ता मध्ये।
विद्याधर ललना किन्नरियाँ, जिनगुण गातीं तथ्ये।।नव.।।29।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे महाकच्छादेशमध्य विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशकच्छकावती सुमध्ये, रूपाचल सुखकारी।
सुरललना के वीणा स्वर से, जन-जन का मनहारी।।नव.।।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे कच्छकावतीदेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा आवर्ता सुंदर, रूपाचल तसु बीचे।
रक्ता-रक्तोदा नदियों से, छहखंड होते नीके।।नव.।।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे आवर्तादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'लांगल आवर्ता', तामध रूपाचल है।
तीनों कटनी पर वनवेदी, वापी जल निर्मल है।।नव.।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे लांगलावर्तादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर देश पुष्कला के मधि, रूपाचल मन भावे।
उभय तरफ पचपन-पचपन, खगनगरी मन ललचावे।।नव.।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे पुष्कलादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पुष्कलावती सुहाता, उसमें रजतगिरी हैं।
विद्याधर की कर्मभूमियाँ, मुक्तीमार्ग पुरी हैं।।नव.।।34।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे पुष्कलावतीदेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

पूर्व विदेह विषे सीता के, दक्षिण तट में माना।
देवारण्य वेदिकासन्निध, वत्सादेश बखाना।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।35।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वत्सादेशस्थित-रजताचलसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के दक्षिण तट पर, देश सुवत्सा सोहें।
तीर्थंकर चक्री प्रतिचक्री, हलधर वहं नित होवें।।मध्य.।।36।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे सुवत्सादेशस्थित-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रम से देश महावत्सा में, रजताचल है जानो।
गंगा सिन्धू नदियों से भी, छह खंड होते मानों।।मध्य.।।37।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे महावत्सादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वत्सकावती वहाँ नित, कर्मभूमि मन भावे।
भव्यजीवगण कर्म अरी हन, मुक्तिरमा सुख पावें।।मध्य.।।38।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वत्सकावतीदेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यादेशे आर्यखंड में, असि-मषि आदि क्रिया हैं।
क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र त्रयवर्णी, होते सदा जहाँ हैं।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।39।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे रम्यादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या शुभ विदेह में, देह नाशकर प्राणी।
हो जाते हैं वे विदेह इस, हेतू सार्थक नामी।।मध्य.।।40।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे सुरम्यादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया शुभ देश वहाँ पर, तीर्थंकर नित होते।
समवसरण में भव्यजीवगण, जिनधुनि सुन मल धोते।।मध्य.।।41।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे रमणीयादेशमध्य-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावती जहाँ पर, मुनिगण नित्य विचरते।
चिच्चैतन्य चमत्कारी निज, शुद्धातम में रमते।।मध्य.।।42।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे मंगलावतीदेश-विजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद – **अपर विदेह नदी, सीतोदहिं इधर में।**
भद्रसाल वनपास, जु पद्मा नगरि में।।
मध्य रजतगिरि उस पर, श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु, जजों धर नेह है।।43।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह सुमाहिं नदी के अवर में।
देश सुपद्मा मध्ये आरजखंड में।।मध्य.।।44।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुपद्मादेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महापद्मा छह खण्डों युत सही।
असि मषि आदिक छह किरिया वहँनित कहीं।।मध्य.।।45।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे महापद्मादेश-मध्यरजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्मकावती मनोहर जानिये।
जिन चैत्यालय ठौर ठौर पर मानिये।।मध्य.।।46।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मकावतीदेश-मध्यरजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखा देशविषें जिनधर्महि एक है।
अन्य धर्म का नाम जहाँ नहिं लेश है।।मध्य.।।47।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे शंखादेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह कर्मभूमी सदा।
मुनिवर आतम ध्याय कर्म से हों जुदा।।मध्य.।।48।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे नलिनीदेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद देश के माहिं जिनेश्वर नित रहें।
समवसरण में भविक, धर्म अमृत लहें।।मध्य.।।49।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे कुमुददेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरित देश में सदा मुमुक्षू जन बसें।
मोक्ष प्राप्ति की आश धरें तन को कसें।।मध्य.।।50।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सरितदेशमध्य-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–लोल तरोल छंद –

सीतोदा के उत्तरदिक् में, देवारण्य निकट वप्रा में।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहें।।51।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा आरज खंड में, ईति भीति दुर्भिक्ष न उनमें।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।52।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे सुवप्रादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा सुखदाता, स्वर्ग मोक्ष का सही विधाता।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।53।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे महावप्रादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावती सुहाता, सुरनर किन्नर के मनभाता।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।54।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रकावतीदेश-स्थितरजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधा देश विषें जिनगेहा, उन्हें जजें सुरनर धर नेहा।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।55।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे गंधादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुगंधा मुक्ति प्रदानी, मुनि तप करें वरें शिवरानी।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।56।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे सुगंधादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला में जो जन्में, पूर्वकोटि आयूवर उनमें।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।57।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे गंधिलादेशस्थित-रजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी में होते जो, तनु ऊँचे वर धनुष पाँच सौ।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।58।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीउत्तरतटे गंधमालिनीदेश-स्थितरजताचलस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई छंद–

भरतक्षेत्र में हैं छहखंड, विजयार्द्रि इस आरज खंड।
सिद्धकूट पर श्री जिनधाम, जिनपद पूजूँ करूँ प्रणाम।।59।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऐरावत' अधिरजत गिरीश, तापर सिद्धकूट जिनईश।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाय, पूजन करूँ मुदित गुणगाय।।60।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

इस जंबुद्वीप में हिमवन आदिक, नग पर छह जिनमंदिर हैं।
गजदंतों पर चउ जिनमंदिर, सोलह वक्षाराचल पर हैं।।
चौंतिस विजयार्ध अचल पर हैं, जिनमंदिर साठ अकृत्रिमहैं।
इन पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ा, ये निज सुखदाता अनुपम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत्-विजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जिनगृह में जिन प्रतिमाएँ इक-सौ अठ इक सौ आठ कहीं।
ये चौंसठ सौ अस्सी मूर्ती, जिनवर सम पुण्य प्रदायक हीं।।
इनकी पूजा भक्ती करते, संपूर्ण अमंगल दूर भगें।
निज आतम अनुभव आते ही, निज में निज आतम ज्योति
ज ा ग ा ` । । 2 । ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयमध्यविराजमानषट्-सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जंबुद्वीप में मेरु सुदर्शन, पर सोलह जिनमंदिर हैं।
जंबू तरु शाल्मलि तरु के दो, बाकी पर्वत पर साठ कहे।।
ये सब अठत्तर जिनमंदिर, शाश्वत रत्नों के शोभे हैं।
इन सबको अर्घ चढ़ा करके, पूजत ही अनुपम सुख ही है।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिसुदर्शनमेरुजंबूतरुशाल्मलितरुकुलाचलादिस्थितअष्ट-

सप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन अठत्तर जिनमंदिर में, जिनप्रतिमाएँ शाश्वत राजें।
ये आठ हजार चार सौ चौबिस, जिनमूर्ती सब सुख साजें।।
गणधर मुनिगण सुरगण नरपति, खगपति भी वंदन करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे यम का बंधन हरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविराजमानअष्टसहस्र-चतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर सुख आकर, जय जय तुम नाम मंत्र माना।
जय जय तुम मूर्ति अचेतन भी, सब कुछ फल देतीं जग जाना।।
जय जय कुल पर्वत के जिनगृह, जय जिनगृह गजदंताचल के।
जय जय वक्षारों के जिनगृह, जय जय जिनगृह रजताचल के।।1।।

त्रय कुल पर्वत क्रम से सौ दो-सौ चउ सौ योजन ऊँचे हैं।
आगे त्रय क्रम से चउ सौ दो सौ सौ योजन ही ऊँचे हैं।।
हिमवन दस सौ बावन योजन, कुछ अधिक सुविस्तृत विख्याता।
आगे चौगुने कहे फिर आधे-आधे हैं यह श्रुत ख्याता।।2।।

ये क्षेत्र बराबर लंबे हैं, इन मध्य सरों में कमल खिले।
उन पर श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि-लक्ष्मी देवी हैं निज महले।।
गंगा सिंधू आदिक चौदह, नदियाँ इन सरवर से निकलीं।
भरतादि सात क्षेत्रों में नित, बहतीं फिर लवणोदधि में मिलीं।।3।।

गजदंत मेरु के निकट पाँच - सौ योजन ऊँचे माने हैं।
निषधाचल नील निकट चउ सौ, योजन ऊँचे मुनि जाने हैं।।
पण शत योजन विस्तृत ये तीस, सहस दो सौ नव लंबे हैं।

विदिशा में मेरू से नग तक, गजदंत सदृश ये लंबे हैं।।4।।
वक्षार पाँच सौ योजन विस्तृत, नग से नदि तक लंबे हैं।
नग निकट चार सौ योजन के, नदि निकट पाँच सौ तुंग रहें।।
ये सोलह सहस पाँच सौ बारह, योजन क्षेत्र बराबर हैं।
इनके जिनगृह को वंदू मैं, ये मुक्तिश्री ललना घर हैं।।5।।

सब रजताचल पच्चिस योजन, ऊँचे पचास ही विस्तृत हैं।
ये क्षेत्र बराबर लंबे त्रय, कटनीयुत खगनगरी युत हैं।।
नग पर कूटों में देवभवन पर, सिद्धकूट पर जिनगृह हैं।
चारणऋद्धी मुनिगण विहरें, वंदन करते स्तुति में रत हैं।।6।।

शाश्वत जिनमंदिर वंदन से, सब पाप समूह विनश जाते।
सब इष्टवियोग-अनिष्टयोग, टलते रोगादि विनश जाते।।
व्यंतर डाकिनि शाकिनि बाधा, संपूर्ण उपद्रव टलते हैं।
अतिशायि पुण्य रवी उगता, धन धान्य सुयश सुख मिलते हैं।।7।।

हे नाथ! आपकी भक्ती से, मुझ घट में ज्ञान प्रभात खिले।
मुरझाया समकित कमल खिले, रत्नत्रय निधियाँ शीघ्र मिलें।।
मोहांधकार रात्री विनशे, मुझको समरस पीयूष मिले।
शुभ 'ज्ञानमती' प्रगटित होकर, जग में चमके सुप्रकाश मिले।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 6)

धातकीखण्डद्वीप इष्वाकार जिनमंदिर पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

वर द्वीप धातकी के दक्षिण, उत्तर में इष्वाकार कहे।
ये द्वीप धातकी को पूरब, पश्चिम दो खंड में बाँट रहे।।
इन पर्वत पर दो जिनमंदिर, जिनप्रतिमा का आह्वान करूँ।
सुरपति खगपति चक्री पूजित, जिनप्रतिमा का गुणगान करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-शंभु छंद –

क्षीरोदधि का पयसम जल ले, कंचन कलशा भर लाया हूँ।
निज आत्म करम मल धोने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन केशर घिस के, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
आत्यंतिक शांती हेतू मैं, भवज्वाल बुझाने आया हूँ।।इष्वाकार.।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कामोद श्यामगिरी तंदुल, कलमों को धोकर लाया हूँ।
अक्षय सुखमय शुद्धात्महेतु, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।इष्वाकार.।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुरभित विविध सुमन, सुमनस मनहर मैं लाया हूँ।
प्रभु कामवाण विध्वंस हेतु, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।।इष्वाकार.।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण पोली पूरी खाजे, नुकती लड्डू मैं लाता हूँ।
निज क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, तुम चरणों निकट चढ़ाता हूँ।।इष्वाकार.।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत भर कंचनदीप शिखा, दशदिश अंधेर भगा देती।
दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेर मिटा देती।।इष्वाकार.।।6।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंधित ले, अग्नी में खेने आया हूँ।
कर्मों को जला-जला करके, दशदिश में धूम उड़ाया हूँ।।इष्वाकार.।।7।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूर आम, पिस्ता किसमिस बादाम लिया।
शिवफल की आशा से जिनवर, तुम सन्मुख मैंने चढ़ा दिया।।इष्वाकार.।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
वर हेमपात्र में अर्घ्य सजा, प्रभु निकट चढ़ाने आया हूँ।।इष्वाकार.।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

कनक भृंग में मिष्टजल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

दुतिय धातकी द्वीप, दक्षिण उत्तरदिश विषें।
इष्वाकृति नग दोय, ताके जिनगृह पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

वर द्वीप धातकी के दक्षिण, लवणोदधि कालोदधि छूता।
नग इष्वाकार सहस योजन, विस्तृत अरु चार शतक ऊँचा।।
यह लंबा चार लाख योजन, कनकाभ कूट चउ इसपे हैं।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर जजते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणदिशायां इष्वाकारनगस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर द्वीप धातकी उत्तर में, लवणोदधि कालोदधि छूता।
गिरि इष्वाकृति योजन हजार, विस्तृत अरु चार शतक ऊँचा।।
यह चार लाख योजन लंबा, स्वर्णाभ चार कूटों युत है।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर पूजत हैं।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थउत्तरदिशायां इष्वाकारनगस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

द्वीप धातकी खण्ड में, दक्षिण उत्तर माहिं।
इष्वाकृतिगिरि के उभय, जिनगृह पूज रचाहिं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्थितद्वयसिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्वाकृति के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह नित जजूँ, मिटे सर्वदुख द्वंद।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वय इष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–सोरठा –

इष्वाकार गिरीन्द्र, इनपे जिनगृह शाश्वते।
तिनमें श्री जिनबिंब, मैं गाऊँ गुणमालिका।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री जिनसिद्धायतनं, भविजन को सिद्धि प्रदाता हो।
जय स्वयं सिद्ध शाश्वत भगवन, मुनिजन के मुक्ति विधाता हो।।
जय जय गुणरत्नाकर स्वामी, जो तुमको नित प्रति ध्याते हैं।
वे तुम भक्ती नौका चढ़कर, भववारिधि से तिर जाते हैं।।2।।

इष्वाकृति नग पर सिद्धकूट, उनमें जिनप्रतिमा राजे हैं।
जो उनकी पूजा भक्ति करें, वे भव बल्ली को काटे हैं।।
पर्वत के दोनों भागों में, तटवेदी वनपंक्ती शोभे।
धनु पाँच शतक विस्तृत स्वर्णिम, ऊँची दो कोस बहुत शोभे।।3।।

इन भित्ति सदृश वेदी के द्वय, भागों में वनखंड शोभ रहे।
जो तोरण पुष्करिणी वापी, युत जिनभवनों से रम्य कहे।।

वन खंडों में सुरमहल बने, तोरण रत्नों से शोभित हैं।
ऐसे ही पर्वत के ऊपर, तटवेदी औ वन पंक्ती हैं।।4।।

ये पर्वत अतिशय रम्य कहे, सुवरण कांती से चमके हैं।
इन पर जो चार कूट माने, त्रय में व्यंतर सुर बसते हैं।।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, जो अकृत्रिम कहलाता है।
कांचन मणिरत्नों से निर्मित, ध्वज पंक्ती को लहराता है।।5।।

जिनगृह को घेरे परकोटे, हैं तीन कनकमय रत्न जड़े।
उनके अंतर में दशविध ध्वज, अरु कल्पतरू रमणीय बड़े।।
वर मानस्तंभ रतन निर्मित, सिद्धों की प्रतिमा वंद्य वहाँ।
मानस्तंभों के दर्शन से, सच मानगलित हो जाय वहाँ।।6।।

ये जिनमंदिर शिवललना के, शृंगार विलाससदन माने।
भविजन हेतू कल्याण भवन, पुण्यांकुर सिंचन घन माने।।
इनमें हैं इक सौ आठ कहीं, जिनप्रतिमा रतनमयी जानो।
मुझ 'ज्ञानमती' को रत्नत्रय, संपत्ती देवें ये सरधानो।।7।।

–घत्ता –

जय जय जिनचंदा, सुख के कंदा, शिवतियकंता नाथ तुम्हीं।
जय तुम गुण गाऊँ, दुरित नशाऊँ, फेर न आऊँ चहुँगति ही।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिक्संबंधिइष्वाकारगिरिस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 7)

विजयमेरु पूजा

स्थापना (दोहा)

पूर्व धातकीखण्ड में, विजयमेरु अभिराम।
तिसमें सोलह जिनभवन, हैं शाश्वतगुणधाम।।1।।
जिनवर प्रतिमा मणिमयी, शिवसुखफल दातार।
आह्वानन विधि से यहाँ, पूजूँ अष्ट प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चामर छंद)

क्षीरसिंधु नीर लाय स्वर्णभृंग में भरूँ।
श्रीजिनेन्द्र पाद में चढ़ाय कर्ममल हरूँ।।
मेरुविजय के जिनेन्द्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध अतिसुगंध हेमपात्र में लिये।
नाथ पाद अर्च के समस्त दाह नाशिये।।मेरु.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकांति के समान श्वेत शालि लाइया।
नाथ पाद के समीप पुंज को चढ़ाइया।।मेरु.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मोगरा जुही गुलाब लाइया।
कामनाश हेतु आप पाद में चढ़ाइया।।
मेरुविजय के जिनेन्द्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जिकादि शर्करा विमिश्र ले।
भूख व्याधि नाश हेतु आपको समर्पि ले।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में संजोय दीप आरती करूँ।
भेदज्ञान को प्रकाश ज्ञान भारती भरुँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में सदा सुगंध धूप खेवते।
पापपुंज को जलाय स्वात्मसौख्य सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम औ अनार लाय थाल में भरे।
मोक्षफल निमित्त आज आप अर्चना करें।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतादि लेय अर्घ्य थाल में।
तीनरत्न प्राप्ति हेतु पूजहूँ त्रिकाल में।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

परमशांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकलसंघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, जिनवर प्रतिमा मैं जजूँ।
निज आतम कर शुद्ध, पाऊँ परमानंद मैं।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

विजयमेरु के पृथ्वी तल पर, भद्रशाल वन सोहे।
उसमें पूरबदिशि जिनमंदिर, सुरनरगण मन मोहे।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में, बसूँ मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के भद्रशाल में, दक्षिणदिश जिनधामा।
शाश्वत जिनवर बिंब मनोहर, अतुल अमल अभिरामा।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिय मेरु के भद्रशाल में, पश्चिमदिश जिनगेहा।
जिनप्रतिमा को सुरपति नरपति, वंदे भक्ति सनेहा।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयसुराचल भद्रशाल में, उत्तर दिश जिनधामा।
भवविजयी की प्रतिमा उनमें, जजत लहें शिवधामा।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में, बसूँ मोक्षपुर जाके।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद (नंदीश्वर पूजा)

श्री विजयमेरुवर शैल, जजतें अघ नाशें।
नंदनवन पूरब जैन, मंदिर अति भासे।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय, आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिनन्दनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरू दक्षिण माहिं, नंदन वन प्यारा।
जिन भवन अनूपम ताहिं, सब जग में न्यारा।।यति.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिनन्दनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन पश्चिम माँहिं, जिनमंदिर भावे।
इस ही मेरू पर इन्द्र, परिकर सह आवें।।यति.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिनन्दनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश नंदन रम्य, जिनवर आलय है।
इस विजय मेरु के मध्य, धर्म सुधालय है।।यति.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिनन्दनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–कुसुमलता छंद –

विजयमेरु नंदनवन ऊपर, वन सौमनस कहा सुखकार।
अकृत्रिम जिनभवन पूर्वदिश, सुरकिन्नर मन हरत अपार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य चढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस वनी के, दक्षिण दिश जिनभवन विशाल।
गर्भालय में मणिमय प्रतिमा, भविजन पूजन करत त्रिकाल।।मैं.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस वनी में, जिनवर सदन मदन मद हार।
मृत्युंजयि की प्रतिमा उनमें, मुनिगण वंदत मुद मनधार।।मैं.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस रम्यवन, उसमें उत्तर दिशा मंझार।
श्रीजिनमंदिर में जिनप्रतिमा, नितप्रति वंदूँ बारम्बार।।मैं.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई छंद –

विजयमेरु पांडुकवन जानो, पूरब दिश जिनभवन बखानो।
सुरपति खगपति नित्य जजें हैं, हम भी अर्घ्य चढ़ाय भजे हैं।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पांडुकवन दक्षिण जानो, शाश्वत ही जिनभवन महानो।
सुरललना जिनवर गुण गावें, हम भी पूजें जिनपद ध्यावें।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वन में पश्चिम दिश माहीं, जिनगृह सम उत्तम कुछ नाहीं।
किन्नरियाँ वीणा स्वर साजें, हम भी पूजें सब अघ भाजें।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु पांडुकवन सोहे, जिनवर भवन सबन मन मोहें।
देव-देवियाँ जिनपद पूजें, हम भी यहाँ तुम्हें नित पूजें।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

सोलह जिनवर भवन हैं, विजयमेरु के नित्य।
अर्चूं पूरण अर्घ्य ले, पूर्ण सौख्य हो नित्य।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह के जिनबिंब को, नमूँ भक्ति मन लाय।
सत्रह सौ अठबीस हैं, पूजूँ अर्घ चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त-शताष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू पांडुकवन विदिक्, पांडुशिलादी चार।
नमूँ नमूँ जिनवर न्हवन-पूत शिला सुखकार।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपांडुकवनविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद –

यह विजयमेरु चौरासि सहस, योजन उत्तुंग कहाता है।
वन भद्रसाल से पंचशतक, योजन पर नंदन आता है।।
योजन साढ़े पचपन हजार, ऊपर सौमनस सुहाता है।
योजन अट्ठाइस सहस जाय, पांडुकवन सबको भाता है।।1।।

–दोहा–

इसमें सोलह जिनभवन, त्रिभुवनतिलक महान।
उनमें जिनप्रतिमा विमल, नमूँ-नमूँ गुण खान।।2।।

–चाल-हे दीनबंधु –

देवाधिदेव श्री जिनेन्द्रदेव हो तुम्हीं।
अनादि औ अनंत स्वयंसिद्ध हो तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।3।।

रस गंध फरस रूप से मैं शून्य ही कहा।
इस मोह से भी मेरा संबंध ना रहा।।हे नाथ.।।4।।

ये द्रव्यकर्म आत्मा से बद्ध नहीं है।
ये भावकर्म तो मुझे छूते भी नहीं हैं।।हे नाथ.।।5।।

मैं एकला हूँ शुद्ध, ज्ञान दरश स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार, ज्योति पुंज अरूपी।। हे नाथ.।।6।।

मैं नित्य हूँ अखंड हूँ, आनंद धाम हूँ।
शुद्धात्म हूँ परमात्म हूँ, त्रिभुवन ललाम हूँ।।हे नाथ.।।7।।

मैं पूर्ण विमल ज्ञान, दर्श वीर्य स्वभावी।
निज आत्मा से जन्य, परम सौख्य प्रभावी।।हे नाथ.।।8।।

परमार्थ नय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।हे नाथ.।।9।।

व्यवहारनय से यद्यपी, अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही, डूबता रहा।।हे नाथ.।।10।।

फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलम्ब दे, भव पार करैया।।हे नाथ.।।11।।

मैं आश यही लेके नाथ पास में आया।
अब वेग हरो जन्म व्याधि, खूब सताया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।12।।

हे दीन बंधु शीघ्र ही निज पास लीजिए।
भव सिंधु से निकाल, मुक्तिवास दीजिए।।हे नाथ.।।13।।

–घतानंद –

जय जय सुखकंदा, अमल अखंडा, त्रिभुवन कंदा तुमहिं नमूँ।
जय 'ज्ञानमतिय'' मम, शिवतिय अनुपम, तुरत मिलावो नित प्रणमूँ।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 8)

पूर्वधातकीखण्ड धातकीवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

विजयमेरु के उत्तरकुरु में, वृक्ष धातकी सोहे।
इसी मेरू के देवकुरू में, शाल्मलि तहँ मन मोहे।।
इनकी एक-एक शाखा पर, जिनमंदिर सुखकारी।
इन दो मंदिर की जिनप्रतिमा, पूजों अघतमहारी।।1।।

दोहा – **तरु के सब जिनराज की, आह्वानन विधि ठान।**
आवो आवो नाथ! अब, करो सकल दुःख हान।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधीद्वयजिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-नाराच छंद –

हिमाद्रि गंग नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
जिनेश पादपद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
तरु तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अष्टगंध लेय, हर्ष भाव ठानिये।
जिनेश पादपद्म चर्च, मोह ताप हानिये।।तरु.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कमोद जीरिका अखंड, शालि धान्य लाइये।
सुपुँज आप पास दे, अखंड सौख्य पाइये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब कुन्द पारिजात, पुष्प अंजली लिये।
जिनेश पाद पूज काम-देव को हनीजिये।।तरू.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमिष्ट फेनि लाडु व्यंजनादि भांति भांति के।
जिनेशपाद पूजते, भगे क्षुधा पिशाचिके।।तरू.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्ड ज्योतिवान दीप, स्वर्ण पात्र में जले।
जिनेन्द्र पाद पूजते ही, मोहध्वांत भी टले।।तरू.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप लेय अग्नि-पात्र में सुखेइये।
जिनेश सन्निधी तुरंत, कर्म भस्म देखिये।।तरू.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इलायची लवंग दाख, औ बदाम लाइये।
जिनेश को चढ़ाय मुक्ति-वल्लभा को पाइये।।तरू.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अष्टद्रव्य लेय, अर्घ्य को बनाइये।
अनर्घ्य सौख्य हेतु नित्य, नाथ को चढ़ाइये।।तरू.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।**
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – **वृक्ष धातकी शाल्मली, पूर्वधातकी माहिं।**
उनके जिनगृह नित जजूँ, पुष्पांजली चढ़ाहिं।।1।।

इति धातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

विजयमेरु ईशान कोण में, वृक्ष आँवले जैसा।
तरु की उत्तर गत शाखा पर, जिनगृह अनुपम वैसा।।
यतिपति वंदित जिनवरप्रतिमा, कलिमल नाश करे हैं।
पूजन करते भविजन मिलकर, यम का पाश हरे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, शाल्मली द्रुम भारी।
इसकी दक्षिणगत शाखा पे, जिनमंदिर भवहारी।।
गणधर भी नित ध्याते रहते, मन में उन प्रतिमा को।
जनम-जनम अघ नाशन हेतू, हम भी पूजें उनको।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

पूर्वधातकी खंड में, धातकि शाल्मलि वृक्ष।
इनके श्रीजिनभवन को, पूजूँ कर मन स्वच्छ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोनों तरु के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह जानिये, जजत हरूँ जगडिंभ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डसंबंधिधातकीवृक्षशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्य-विराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–नरेन्द्र छंद –

विजयमेरु ईशान दिशा में, वृक्ष धातकी सोहे।
नैऋत दिश में वृक्ष शाल्मलि, सुरगण का मन मोहे।।
इक-इक के परिवार तरू दो, लाख सहस अस्सी हैं।
दो सौ अड़तिस इतने सबमें, प्रतिमा शाश्वत की हैं।।1।।

–नाराच छंद –

जिनेश बिंब एक सौ सुआठ सर्व वृक्ष में।
प्रमुख्यता धरे महान एक ही तरू इमें।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।2।।
अनादि हो अनन्त हो प्रसिद्ध सिद्धरूप हो।
दयाल धर्मपाल तीन काल एक रूप हो।।नमो.।।3।।
अलोक लोक में प्रधान तीन लोक नाथ हो।
अनेक रिद्धि के धनी सुभक्ति के सनाथ हो।।नमो.।।4।।

महान दीप्तिमान मोहशत्रु को कृपान हो।
प्रसन्न सौम्य आस्य[1] हो पवित्र हो पुमान हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।5।।

दिनेश[2] ते विशेष तेज की महान राशि हो।
कुमोदनी भवीक हेतु तें सुधानिवास[3] हो।।नमो.।।6।।

भवाब्धि डूबते तिन्हें तुम्हीं सुकर्णधार हो।
गुणौघ रत्न के समुद्र सार में सु सार हो।।नमो.।।7।।

–दोहा–

तुम गुण गण मणि अगम हैं, को गण पावे पार।
जो गुण लाव कंठहिं धरे, सो उतरे भव पार।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थश्रीविजयमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

1. मुख। 2. सूर्य। 3. चंद्र।

(पूजा नं. 9)

पूर्व धातकीखण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

पूर्व धातकीखण्डद्वीप में, छह कुल पर्वत सोहें।
गजदंताचल वक्षाराचल, चउ सोलह मन मोहें।।
रजताचल चौंतिस इन सबके, जिनगृह साठ कहाये।
आह्वानन कर पूजूँ रुचि से, परमानंद बढ़ाये।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (बसन्ततिलका छंद)

गंगा नदी जल पवित्र सुभृंग में है।
धारा करूँ त्रय प्रभो! चरणांबुजों में।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिसी घनसार जो है।
पादाब्ज में चरचते निजकीर्ति पाऊँ।।पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान अति उज्ज्वल शालि लाऊँ।
पूजूँ सुपुंज धरके निज सौख्य हेतू।।पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब कुसुमावलि मैं चढ़ाऊँ।
दीजे निजात्म सुख संपति शीघ्र मेरी।।पूजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पेड़ा पुआ अंदरसा भर थाल लाऊँ।
तृष्णादि व्याधिहर नाथ! तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति कर आरति मैं उतारूँ।
मोहांधकार हर भारति ज्ञान भर दो।।पूजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंधवर धूप धुआँ उड़े है।
संपूर्ण पाप अरि भस्म करो हमारे।।पूजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेव अनार लाऊँ।
हे नाथ! मोक्षफल हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ्य रजतादिक पुष्प लेके।
दीजे त्रिरत्न प्रभु अर्घ तुम्हें चढ़ाऊँ।।पूजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में सुख शांति हो, मिले निजात्म अनिन्द।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

पूर्व धातकी खण्ड, साठ नगों पर जिननिलय।
करूँ कर्मशतखंड, पुष्पांजलि कर पूजते।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

छह कुलाचल अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

द्वीपधातकी में हिमवन गिरि, कांचन कांती धारे।
बीच सरोवर पद्म तास में, कमल मणीमय सारे।।
मध्य कमल पर 'श्रीदेवी' है, नग पर कूट सुग्यारें।
सिद्धकूटगत जिनमंदिर में, जिनपद पूजों सारे।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण महहिमवन, रजतवर्ण तामें हैं।
महापद्मद्रह मध्य कमल में, 'ह्रीदेवी' माने हैं।।
नग पर आठ कूट में इक पर, चैत्यालय सुखकारी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनपद पूजें, गुण गावें नर नारी।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थमहाहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण निषधाचल, तप्तस्वर्ण छवि मोहे।
द्रह तिगिंछ तामध्य कमल में, 'धृतिदेवी' अति सोहे।।

गिरि पर हैं नवकूट एक के, सिद्धकूट मंदिर में।
मृत्युजयी श्रीजिनप्रतिमा को, पूजत ही सुख क्षण में।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थनिषधकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर नीलाचल, छवि वैडूर्यमणी है।
बीच केसरी द्रह कमलों के, मध्य 'कीर्तिदेवी' है।।
नव कूटों में सिद्धकूट पर, जिनगृह में जिनप्रतिमा।
अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ निरंतर, भव विजयी जिनप्रतिमा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थनीलकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर रुक्मीगिरि, रजतवर्णछवि राजें।
पुंडरीकद्रह मध्य कमल में, 'बुद्धीदेवी' राजे।।
कूट आठ में सिद्धकूट पर, जिनमंदिर मन भावे।
कामजयी जिनप्रतिमा पूजें, इंद्र देवगण आवें।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थरुक्मिकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के उत्तर शिखरी, पर्वत कांचन छवि है।
महापुंडरीकहिं ह्रद कमलों, में 'लक्ष्मी' निवसत हैं।।
ग्यारह कूट उन्हों में इक पर, जिनवर निलय बखानो।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, पूजूँ मैं दुख हानों।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थशिखरीकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य

नरेन्द्र छंद – **विजयमेरु ईशान कोण में, माल्यवान गजदंता।**
नवकूटों युत सिद्धकूटधर, नीलम छवि छलकंता।।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञान भानु परकासें।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिमाल्यवानगजदंतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु आग्नेय कोण में, सौमनस्य गजदंता।
रौप्यमयी वह सातकूट में, सिद्धकूट अघहंता।।
जिनमंदिर में श्रीजिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनस्यगजदंतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, विद्युत्प्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि नवकूटों में, सिद्धकूट चमकंता।।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु वायव्य कोण में, गंधमादनो सोहै।
कांचन सम द्युति सात कूटयुत, सिद्धकूट मन
म ा ा ` ह ँ । ।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासें।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन, ज्ञानभानु परकासें।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिगंधमादनगजदंतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षारपर्वत जिनालय अर्घ्य

–जोगीरासा–

पूर्व विदेह नदी सीता के, उत्तर तट वक्षारा।
भद्रसाल वेदी सन्निध में, 'चित्रकूट' सुखकारा।।
उस पर जिनमंदिर है सुन्दर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ, होवे भव दुःख छेवा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित-

जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रम से 'नलिन कूट' नामक है, गिरि वक्षार सुहाना।
मुनिगण उस पर ध्यान धरत हैं, पावन सौख्य महाना।।उस.।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिनलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार तीसरा, सब जन मन को प्यारा।
इस पर चार कूट उनमें से, सिद्धकूट अघ हारा।।उस.।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार बगीचे, बावड़ियों से सोहे।
देव-देवियाँ खेचरखेचरनी किन्नर मन मोहे।।उस.।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिएकशैलवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

सीता नदि के दक्षिण तास, देवारण्य वेदिका पास।
नाम 'त्रिकूट' कहा वक्षार, तापर जिनगृह पूजूँ सार।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधित्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'वैश्रवण' दुतिय वक्षार, तापर सिद्धकूट मनहार।
तामें जिनगृह में जिनबिंब, अर्घ्य चढ़ाय जजूँ तज डिंभ।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' है तीजा वक्षार, वन वेदी सुर महल अपार।
तापर जिनगृह में जिनराज, अर्घ्य चढ़ाय लहूँ शिवराज।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजनआत्मा' है वक्षार, तापर मुनिगण करत विहार।
इस पर जिनमंदिर अभिराम, जिनमूरति को करूँ प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनात्मावक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–जोगीरासा –

द्वीपधातकी अपर विदेहा, सीतोदा तट दाएँ।
भद्रसाल सन्निध वक्षारा, 'श्रद्धावान' कहाये।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भयहारी।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान्' दुतिय वक्षारा, सुरकिन्नर चितहारी।
ऋषिगण विचरण करते रहते, परमानंद विहारी।।उस.।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिविजटावान्वक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार तीसरा, तापर उपवन वेदी।
सुरगण के प्रासाद मनोहर, मधुर पवन श्रमछेदी।।उस.।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिआशीविषवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वक्षार 'सुखावह' चौथा, अतिरमणीय सुहाता।
चार कूट हैं मन को भाते, त्रय सुरगृह सुखदाता।।उस.।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिसुखावहवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

द्वीप धातकी अपर विदेह, सीतोदा उत्तर तट येह।
देवारण्य निकट वक्षार, 'चंद्रमाल' पर जिनगृह सार।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिचन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' दूजा वक्षार, तापर जिनवर गृह सुखकार।
तामें सुरनर नत जिनबिंब, मैं पूजूँ सिद्धन प्रतिबिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' तीजा वक्षार, सुर खग मुनिगण करत विहार।
भवविजयी श्रीजिनवर धाम, पूजन करूँ ल्हूँ शिवधाम।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनागमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' चौथा वक्षार, दर्शनीय उत्तम गिरि सार।
तापर मदनजयी जिनगेह, जिनप्रतिमा को जजूँ सनेह।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिदेवमालवक्षारपर्वतस्थित-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ्य

–चौबोल छंद –

'कच्छादेश' विदेह कहाता, उसके मधि रूपाद्रि रहें।
रक्ता रक्तोदा नदियों से, कच्छा के छहखंड कहे।।
आर्यखंड मधि क्षेमा नगरी, जिसमें तीर्थंकर रहते।
रजतगिरी के जिनमंदिर को, अर्घ चढ़ाकर हम यजते।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिकच्छादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' आर्यखंड में, क्षेमपुरी है श्रेष्ठ मही।
तीर्थंकर चक्री आदी से, जिनमंदिर से शोभ रही।।
देश मध्य के रजतगिरी पर, जिन चैत्यालय धर्ममही।
उसकी सब प्रतिमा को पूजूँ, अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति सही।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुकच्छादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' में रूपाचल नवकूटों सहित कहा।
उसके सिद्धकूट में जिनगृह-प्रतिमा यजते पाप दहा।।

इस विदेह के आर्यखंड के, मध्य अरिष्टापुरी महा।
नितप्रति केवलि श्रुतकेवलि मुनि, ऋषिगण विचरण करें वहाँ।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहाकच्छादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मध्य में, विजयारधगिरि रजतसमा।
तीन कटनियों से खगनगरी, इक सौ दश से श्रेष्ठतमा।।
इस विदेह के आर्यखंड में, कही अरिष्टपुरी सुखदा।
विजयारध के सिद्धकूट को, पूजत नहिं हो दुःख कदा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिकच्छकावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रम्य 'आवर्ता' उसमें, रजतगिरी अतिशय महिमा।
उसके सिद्धकूट पर जिनगृह, इक सौ आठ जैनप्रतिमा।।
आर्यखंड खड्गा नगरी के, मुनिगण भी वहाँ दर्श करें।
हम भी अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, गर्भवास के दुःख हरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिआवर्तादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' उसमें, रजताचल शुभ राज रहा।
इस पर सिद्धकूट मंदिर है, सुरअसुरों से पूज्य कहा।।
आर्यखंड मंजूषा नगरी, ताके नर-नारी रुचि से।
अकृत्रिम जिनप्रतिमा पूजें, जिनवर गुण गाते मुद से।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिलांगलावर्तादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' में रूपाचल, उस पर शुभ नव कूट कहें।
सिद्धकूट पर जिनमंदिर में, अनुपम प्रतिमा शुद्ध रहें।।
आर्यखंड औषधि नगरी के, सब जन भक्ति सहित भजते।
हम सब अर्घ्य चढ़ाकर जिनपद, पूजा कर सब दुःख तजते।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपुष्कलादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मध्य में, रजतगिरी जन मन हरती।
उसके सिद्धकूट जिनगृह की, सुर ललना कीर्तन करती।।
पुंडरीकिणी नगरी के जन, विद्याबल से गमन करें।
हम भी यहीं अर्घ्य अर्पण कर, श्रद्धा से नित नमन करें।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–जोगीरासा छंद –

'वत्सादेश' विदेह कहाता, तामधि विजयारध है।
उसपे सिद्धकूट चैत्यालय, जिनवरबिंब अनघ है।।
इस विदेह में पुरी सुसीमा, आर्यखंड मधि मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' के मधि सुंदर, रजतगिरी शाश्वत है।
सिद्धकूट जिनमंदिर उस पर, मुनिगण नित ध्यावत हैं।।
इस विदेह में पुरी कुंडला, आर्यखंड मधि मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुवत्सादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधि सुंदर, रूपाचल नव कूटा।
सिद्धकूट में श्रीजिनमंदिर, पूजत ही अघ छूटा।।
इस विदेह में अपराजितपुरि, आर्यखंड में मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहावत्सादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' मध्य में, रजताचल मन भावे।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, पूजन कर सुख पावे।।

इस विदेह में प्रभंकरापुरि, आर्यखंड में मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सकावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह तास मधि, रजतगिरी अति सोहे।
सिद्धकूट में जिनप्रतिमा को, पूजत ही सुख होहै।।
अंकावति नगरी विदेह में, आर्यखंड में मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' तामधि उज्ज्वल, रूपाचल मन भाना।
सिद्धकूट में जिनबिंबों को, जजतें पातक हाना।।
पद्मावतीपुरी विदेह में, आर्यखंड मधि मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुरम्यादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया' सुंदर, तामधि रजतगिरी है।
सिद्धकूट की जिनवर प्रतिमा, जजतें दुःख हरी हैं।।
इस विदेह में शुभापुरी है, आर्यखंड में मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरमणीयादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अनूपम, रजताचल तामें है।
सिद्धकूट जिनदेव सदा ही, दुःख दरिद्र हाने हैं।।
इस विदेह पुरि रत्नसंचया, आर्यखंड में मानो।
वहँ के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमंगलावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

'पद्मादेश' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
उस पर श्रीजिनगेह, पूजत पाप हरी है।।
पद्मा आरजखंड, अश्वपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' माहिं, रजताचल मन माना।
उस पर जिनवर धाम, पूजत पाप पलाना।।
आरजखंड सुमध्य, सिंहपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुपद्मादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापद्मा' है देश, रूपाचल ता माहीं।
उसके श्रीजिनबिंब, जजतें पाप नशाहीं।।
आरज खंड सुमध्य, महापुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहापद्मादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावति', रूपाचल अभिरामा।
सिद्धकूट के माहिं, पूजत हूँ जिनधामा।।
आरज खंड सुमध्य, विजयापुरि नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मकावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखादेश' विदेह, विजयारध गिरि माना।
सिद्धकूट जिनगेह, पूजत ही सुख दाना।।

आरजखंड सुमध्य, शुभ अरजा नगरी है।।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिशंखादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिनादेश' विदेह, रूपाचल मन भावे।
तापर जिनवरगेह, पूजत शोक नशावे।।
आरजखंड सुमध्य, शुभ विरजा नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनलिनादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदादेश' महान, रूपाचल अति सोहे।
तापर श्रीजिनधाम, पूजत ही सुख होहै।।
आरज खंड सुमध्य, कही अशोकपुरी है।।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिकुमुदादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरिता' देश महान, रूपाचल वर जानो।
ताके जिनगृह माहिं, जिनपद पूजन ठानो।।
आरज खंड सुमध्य, वीतशोक नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसरितादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

'वप्रा' विदेह सुमाहिं सुंदर, रजतगिरि मनभावना।
नवकूट में इक कूट पर है, जिनभवन अति पावना।।
इस देश आरज खंड में, विजयापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्रादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीदेह 'सूवप्रा' मधी है, रजतगिरि उत्तम कहा।
तापे जिनालय में रतनमय, बिंब का अतिशय महा।।
इस देश आरजखंड में, पुरि वैजयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुवप्रादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'महवप्रा' सुहाता, तास में विजयार्ध है।
उसपे जिनेश्वर मूर्तियों को, महामुनिगण ध्यात हैं।।
इस देश आरज खंड में, नगरी जयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ सोहनी।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहावप्रादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'वप्रीकावती' में, रूप्यगिरि सुंदर कहा।
ऋषिगण विचरते हैं सदा, जिनवर सदन मनहर रहा।।
इस देश आरज खंड में, अपराजिता पुरि सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्रकावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'गंधा' बीच में, विजयार्ध अनुपम शासता।
किन्नर गणों के गीत से, जिनवर भवन नित भासता।।
इस देश आरज खंड में, चक्रापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'सूगंधा' मधी है, रजतगिरि रूपामयी।
विद्याधरों की पंक्तियाँ, जिनवर भवन पूजें सही।।
इस देश आरज खंड में, खड्गापुरी है सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुगंधादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'गंधीला' मधी है, रजतगिरि अति सोहना।
गंधर्व सुरगण पूजते हैं, जिनभवन मन मोहना।।
इस देश आरज खंड में, नगरी अयोध्या सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुगंधिलादेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'गंधमालिनि' देश में, विजयार्ध गिरि सुंदर कहा।
उस पर जिनेश्वर बिंब को, नित जजें सुर किन्नर अहा।।
इस देश आरज खंड में, नगरी अवध्या सोहनी।।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधमालिनीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

भरतक्षेत्र में हिमगिरि से, गंगा सिंधू उद्गमती।
रूपाचल की गुफा तले से, बाहर होके बहतीं।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या, तीर्थंकर जन होते।
रजताचल के जिनगृह जिनवर, बिंब जजत सुख होते।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थभरतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी से रक्ता रक्तोदा, नदियाँ निकलें जानों।
विजयारध की गुफा तले से, बाहर आती मानों।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या, पुरुष शलाका होते।
विजयारध के जिनमंदिर को, पूजत ही मल धोते।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थऐरावतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –शंभु छंद –

द्वीप धातकी खण्ड पूर्व में, कुल पर्वत छह मन मोहे हैं।
मेरु विदिश में चार कहे, गजदंत साधु मन मोहे हैं।।
सोलह गिरि वक्षार व चौंतिस, रजताचल अति मनहारी।
इनके साठ जिनालय पूजूँ, वरूँ मोक्ष रमणी प्यारी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, इक सौ आठ विराजे हैं।
छह हजार चार सौ अस्सी, पद्मासन से राजे हैं।।
पाँच शतक धनु तुंग रत्नमय, जिनवर प्रतिमा शाश्वत हैं।
इनकी पूजा भक्ती करते, मिलता निज पद शाश्वत है।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्यविराजमान-षट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में इक मेरू, 'विजय' नाम से सुरगिरि है।
इसके सोलह जिनमंदिर हैं, धातकि तरु शाल्मलि तरु है।।
कुलपर्वत आदिक सब शाश्वत, जिनमंदिर अट्ठत्तर हैं।
इनको पूजूँ अर्घ चढ़ाकर, वंदन करें मुनीश्वर हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन अट्ठत्तर जिनमंदिर में, जिनप्रतिमा मणिमय राजे हैं।
आठ हजार चार सौ चौबिस, संख्या है गुण साजे हैं।।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति नर, इनकी स्तुति करते हैं।
मैं भी पूजूँ भक्तिभाव से, इनसे मनरथ फलते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डसंबंधिमेर्वादिअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविराजमान-अष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

पूर्वधातकी खण्ड के, जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शत-शत करूँ प्रणाम।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

नाथ! मुक्तीपती मुक्तिदाता तुम्हीं।
मैं नमूँ मैं नमूँ हो विधाता तुम्हीं।।
पूरिये नाथ! मेरी यही कामना।
स्वात्म की सिद्धि हो अन्य की चाह ना।।2।।

छै कुलाचल सरों में कमल खिल रहे।
श्री ह्री आदि देवी उन्हीं में रहें।।
तीर्थकर मातु सेवा करें भक्ति से।
पुण्य संचय करें भक्ति की युक्ति से।।3।।

छह जिनागार को सर्व साधू नमें।
चार गजदंत मंदिर मुनीगण नमें।।
सोलहों शैल वक्षार स्वर्णाभ हैं।
सोलहों जैन मंदिर हरें ताप हैं।।4।।

रूप्यगिरि चौंतिसों पर जिनालय दिपें।
वंदते ही अशुभ कर्म क्षण में खिपें।।
ये सभी साठ भूभृत् मुनी मान्य हैं।
जैन मंदिर इन्हीं के जगत् मान्य हैं।।5।।

आपकी भक्ति से ज्ञानज्योती भरूँ।
आत्मनिधि पायके सिद्धिकांता वरूँ।।
छोड़ बहिरात्मता अंतरात्मा बनूँ।
रत्नत्रय युक्ति से परम आत्मा बनूँ।।6।।

नाथ! ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे।
मुक्तिपर्यंत तव पाद मन में दिपें।।
आर्त-रौद्रादि दुर्ध्यान की हानि हो।
धर्म शुक्लैक सद्ध्यान की प्राप्ति हो।।7।।

स्वात्म में लीन हो चित्त एकाग्र हो।
स्वात्म पीयूष का पान गुणकार हो।।
''ज्ञानमति'' पूर्ण हो सौख्य भंडार हो।
भक्त तेरा भवांभोधि से पार हो।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 10)

अचलमेरु पूजा

स्थापना (गीताछंद)

श्री अचलमेरु राजता है, अपर धातकि द्वीप में।
सोलह जिनालय तास में, जिनबिंब हैं उन बीच में।।
प्रत्यक्ष दर्शन हो नहीं, अतएव पूजूँ मैं यहाँ।
आह्वान विधि करके प्रभो, थापूँ तुम्हें आवो यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं –गीताछंद –

गंगानदी का स्वच्छ प्रासुक, नीर झारी में भरूँ।
संसार के त्रयताप शांती, हेतु त्रयधारा करूँ।।
श्री अचलमेरू के जिनालय, औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से, नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन पंक शीतल, भर कटोरी में लिया।
जिनपाद पंकज पूजते, भवतप्त मन शीतल किया।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्धाब्धि फेन समान उज्ज्वल, धौत तंदुल थाल में।
जिनचरण वारिज के निकट, धर पुंज नाऊँ भाल मैं।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली मौलसिरि, सुरभित सुमन भर लाइया।
कंदर्प दर्प विनाशने को, नाथ चरण चढ़ाइया।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान फेनी मोदकादिक, सरस थाली में भरें।
क्षुध रोग हर तुम पद कमल, पूजत क्षुधा डाकिनि हरें।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती जगमगे, अंधेर सब जग का हरे।
तुम चरण पूजा दीप से, मन ध्वांत को क्षण में हरे।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप अग्नी-पात्र में खेऊँ सदा।
अंतर कलुष बाहर भगे, नहिं स्वप्न में हो भ्रम कदा।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार फल, अखरोट आदिक लाइया।
अक्षय सुखद फल हेतु जिनपद, पद्म निकट चढ़ाइया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप रु फल लिया।
निज संपदा के हेतु भगवन्! अर्घ तव अर्पण किया।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

अचल मेरु के जिनभवन, पूजूँ भक्ति समेत।
पुष्पांजलि कर पूजते, जिनमंदिर भवसेतु।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–अडिल्ल छंद –

अचलमेरु में भद्रशाल वन जानिये।
तामें पूरब दिश जिनमंदिर मानिये।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूँ नित भाव से।
जिनगुण संपति हेतु भजूँ अति चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय मेरु के भद्रशाल में राजता।
दक्षिणदिश जिनभवन अनूपम शासता।।अर्घ्य.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल में रम्य है।
पश्चिमदिश जिनसदन सकलसुखसद्म हैं।।अर्घ्य.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल उत्तर दिशी।
जिनमंदिर में जिनप्रतिमा अनुपमकृती।।अर्घ्य.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

अचलमेरु के नंदनवन में, पूर्व दिशी जिनगेहा।
निज आतम अनुभव रसस्वादी, मुनिगण नमत सनेहा।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु नंदनवन दक्षिण, सुरवंदित जिनधामा।
इंद्रिय सुख त्यागी वैरागी, यति वंदें निष्कामा[1]।।नीरा.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम ध्यानी मुनि ज्ञानी, जिन का ध्यान धरे हैं।
अचलमेरु नंदन पश्चिम दिश, जिनगृह पाप हरे हैं।।नीरा.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के नंदनवन में, उत्तर दिश जिनगृह हैं।
समरस निर्झर जल अवगाही, गणधर गण वंदत हैं।।नीरा.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

अचलमेरु वन सौमनस, पूरब दिश जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, सिद्ध करो सब काम।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, दक्षिण दिश जिनगेह।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, करो हमें गतदेह[2]।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. इच्छारहित। 2. अशरीरी सिद्धपद।

अचलमेरु सौमनस के, पश्चिम जिनगृह सिद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, करूँ मोह अरि बिद्ध।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, उत्तर जिनगृह सार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, होऊँ भवदधि पार।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई छंद –

अचलमेरु पांडुकवन जान, पूरब दिश जिननिलय[1] महान।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन नाम, दक्षिण दिशि अनुपम जिनधाम।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन कहा, पश्चिम दिश जिनमंदिर रहा।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन सही, उत्तर दिशि जिनगृह सुख मही।।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जिनमंदिर।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

अचलमेरु चउवन विषैं, चार चार जिनधाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ नित्य निष्काम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में अतुल, जिनवर बिंब महान।
सत्रह सौ अठ बीस हैं, झुक-झुक करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त-शतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के विदिश में, पांडुकशिलादि वंद्य।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, नमूँ-नमूँ सुखकंद।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा –

कल्पवृक्ष चिंतामणी, चिच्चेतन भगवान।
चिन्मूरति जिनमूर्ति को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।

–रोला छंद –

जय जय अचल सुमेरु, शाश्वत सिद्ध महाना।
जय जय पुण्य निकेत, अतिशय सौख्य खजाना।।
जय जय श्री जिनगेह, सोलह स्वर्णमयी हैं।
जय जय श्रीजिनबिंब, नाना रत्नमयी हैं।।1।।
मानस्तंभ ध्वजादि, तोरण मणिमालाएँ।
तीन कोट सिद्धार्थ, चैत्यतरू बहु गाएँ।।
वैभव अतुल असंख्य, सहजिक रहें वहाँ पे।
सुरपति नरपति नित्य, पूजन करें तहाँ पे।।2।।

चारण ऋषिगण आय, आतम ध्यान धरे हैं।
कर्मकलंक नशाय, उत्तम सौख्य भरे हैं।।
सम्यग्दर्शन पाय, भविजन तृप्त सु होते।
आत्म स्वरूप विचार, भव भव का भय खोते।।3।।
मैं नारक तिर्यंच, देव मनुष्य नहीं हूँ।
पुरुष नपुंसकरूप, स्त्रीरूप नहीं हूँ।।
सब पुद्गल पर्याय, उपज उपज कर विनशे।
कर्मउदय से जीव, इनहीं में नित विलसे।।4।।
निश्चयनय से नित्य, परमानंद स्वभावी।
मैं अनंतगुण पुंज, केवलज्ञान प्रभावी।।
मैं मुझमें थिर होय, निज में ही निज पाऊँ।
प्रभु वह दिन कब होय, जब मैं ध्यान लगाऊँ।।5।।
तुम भक्ती से नाथ, शक्ति प्रगट हो मेरी।
करूँ कर्म का नाश, छूटे भव भव फेरी।।
जब तक मुक्ति न होय, तब तक भक्ति हृदय में।
रहे आपकी देव! ''ज्ञानमती'' रुचि मन में।।6।।

–दोहा –

जो पूजें जिनवर भवन, भक्ति भाव से नित्य।
सो जिनगुण संपति लहें, अनुक्रम से भवभिद्य।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थश्रीअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 11)

पश्चिमधातकी खण्डस्थ धातकीवृक्ष-शाल्मलीवृक्ष जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (हरिगीतिका छंद)

(चाल-सम्मेदगढ़ गिरनार.....)

वरद्वीप धातकि में अपरदिश, बीच सुरगिरि अचल है।
ताके विदिश ईशान में, शुभ धातकी द्रुम अतुल है।।
सुरगिरि के नैऋत्य शाश्वत, शाल्मली द्रुम सोहना।
द्वय वृक्ष शाखा पर जिनालय, पूजहूँ मन मोहना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

जल अमल ले जिनपाद पूजूँ, कर्ममल धुल जायेगा।
आत्मीक समता रस विमल, आनंद अनुभव आयेगा।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंधित ले जिनेश्वर, पद जजूँ आनंद से।
स्वात्मानुभव आल्हाद पाकर, छूटहूँ जग द्वंद्व से।।

पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाकिरण सम धवल तंदुल, पुंज जिन आगे धरूँ।
वर धर्म शुक्ल सुध्यान निर्मल, पाय आतम निधि वरूँ।।पृथ्वी.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार चंपक पुष्प सुरभित, लाय जिनपद पूजते।
निज आत्मगुण कलिका खिले, जन भ्रमर तापे गूँजते।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक पुआ बरफी इमरती, लाय जिन सन्मुख धरें।
आत्मैकरस पीयूष मिश्रित, अतुल आनंद भव हरें।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा उद्योतकारी, जिन चरण में वारना।
अज्ञान तिमिर हटाय अन्तर, ज्ञानज्योती धारना।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप मंगाय स्वाहा[1]-नाथ को अर्पण किया।
वसु कर्म स्वाहा हेतु ही, निज आत्म को तर्पण किया।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार गन्ना, लाय जिनपूजा करूँ।
वर मोक्ष फल की आश लेकर, कर्म कंटक परिहरूँ।।पृथ्वी.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. अग्नि।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
जिन कल्पतरु पूजत मनो-वांछित सकल फल झट मिलें।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिधातकीशाल्मलीवृक्षस्थितजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

अचलमेरु ईशान, वृक्ष आंवले सम कहा।
नैऋत शाल्मलि जान, जिनगृह पूजूँ पुष्प ले।।1।।

अथ धातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–हरिगीतिका –

इस धातकी तरु उत्तरी, शाखा विषे जिनगृह महा।
देवाधिदेव जिनेन्द्र की, प्रतिमा रत्नमयि हैं वहाँ।।
सुरभित पवन प्रेरित जिनालय, मणि ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थर हरें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिश्रीअचलमेरोरीशानकोणे धातकी-वृक्षजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तरु शाल्मली की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनधाम है।
मृत्युंजयी जिनदेव की, प्रतिमा वहाँ अभिराम है।।

सुरभित पवन प्रेरित करें, जिनगृह ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थर हरें।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिश्रीअचलमेरोर्नैऋत्यकोणे शाल्मलितरु-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

अचलमेरु के द्वय तरू, धातकि शाल्मलि जान।
दोनों के जिनगेह को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिश्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोनों तरु के जिनभवन, जिनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह जानिये, जजत हरूँ जग डिंभ।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिधातकीवृक्षशाल्मलीवृक्षजिनालयमध्यविराजमान द्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–हरिगीतिका –

जय जय अकृत्रिम जिनभवन, अघहरण जग चूड़ामणी।
जय जय अकृत्रिम जिनप्रतिम, सब मूर्तियाँ चिंतामणी।।
जय जय अनादि अनंत अनुपम, त्रिभुवनैक शिखामणी।
जय मोह अहि के विष प्रहारण, नाथ! तुम गारुत्मणी[1]।।1।।

सुरगिरि अचल उत्तर दिशी, उत्तर कुरू है भोगभू।
तहं धातकी तरु थल वृहत्, पे वेदिका अर पीठ जू।।
राजत उतुङ्ग महा मनोहर, मणिमयी ये तरु हरे।
उनपे अकृत्रिम जिनसदन, मेरे सकल कलिमल हरें।।2।।

1. सर्प के विष को दूर करने वाली गरुड़मणी।

तरु चार दिश की चार शाखा, मुख्य हैं उन एक में।
जिनगृह अकृत्रिम शोभता, सुरगृह बने हैं तीन में।।
इनमें सदा व्यंतर रहें, सम्यक्त्व रत्नों युत भने।
परिवार तरु अगणित कहे, परिवार सुर उनपे घने।।3।।

फल मणिमयी है आंवले सम, पत्तियाँ मरकतमणी।
कोंपल पदममणि के बने, बहु फूल नाना वर्णनी।।
सब देवगृह में भी सदा, जिनधाम अनुपम राजते।
उनकी करें जो वंदना, सब पाप क्षण में नाशते।।4।।

जिनराज सिंहासन रतन-मणियों जड़ित अति सोहना।
त्रय छत्र में मोती लटकते, शशिकिरण सम मोहना।।
चौंसठ युगल सुर हाथ में, चामर लिये हैं भाव से।
वर आठ मंगल द्रव्य सब, जिनराज सन्निध भासते।।5।।

बहु देव-देवी अप्सरायें, इन्द्रगण भी आवते।
जिनवंदना गुणगान पूजन, करत शीश नवावते।।
संगीत बाजे विविध बजते, किंकणी घंटा खने।
वीणा बजाते नृत्य करते, ताल दे-देकर घने।।6।।

खेचर युगलिया भक्ति से, जिनवंदना करते वहाँ।
नर-नारियाँ भूचर सदा, विद्या के बल फिरते वहाँ।।
आकाशगामी ऋद्धि से, ऋषिगण वहाँ विचरण करें।
जिनवंदना से बहु जनम के, पाप तत्क्षण परिहरें।।7।।

गणधर सुव्रतधर चक्रधर, हलधर गदाधर सर्वदा।
श्रुतधर अशनिधर कुलधरा, जिनभक्ति करते शर्मदा।।
अध्यात्म योगी वीतरागी, शुद्ध आतम ध्यावते।
वर निर्विकल्प समाधिरत, हो परम आनंद पावते।।8।।

मैं भक्ति श्रद्धा भाव से, हे नाथ! तुम शरणा लिया।
बस मृत्यु मल्ल पछाड़ने को, तुम निकट धरना दिया।।

हे भक्तवत्सल! दीनबंधू! कृपा मुझ पर कीजिए।
हे नाथ! अब तो मुझे केवल, 'ज्ञानमति' श्री दीजिए।।9।।

–दोहा–

शाश्वत श्री जिनगेह के, स्वयंसिद्ध जिनबिंब।
मन-वच-तन से पूजहूँ, झड़ें कर्म कटु निंब।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थश्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्ष-स्थितसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 12)

पश्चिमधातकी खण्ड पर्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

अपर धातकी खण्डद्वीप में, षट्कुल पर्वत सोहें।
विदिशा में गजदंत चार हैं, सुर नर का मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुहाने, चौंतिस रजताचल हैं।
इनके साठ जिनालय पूजूँ, पद मिलता अविचल है।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद)

जन्म जरा मृत्यू ये तीनों, भव-भव में दुख देते।
प्रभो! निवारो इनको तुम पद, में त्रय धारा देते।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को, पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ, तुम पद प्रीति बढ़ाके।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस तनु आगंतुक पीड़ा, भव-भव में दुख देवें।
प्रभो! निवारो इनको तुम पद-पंकज गंध चढ़ावें।।शाश्वत.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय सुख क्षणभंगुर इनसे, सदा क्लेश होता है।
अक्षत के बहु पुंज चढ़ाते, अक्षय सुख होता है।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को, पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ, तुम पद प्रीति बढ़ाके।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने त्रिभुवन जन को, अपने वश्य किया है।
तुम पद पुष्प चढ़ाते भविजन, इनको वश्य किया है।।शाश्वत.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख पिशाची बहुदुख देती, तुमने इसे नशाया।
नाना विध नैवेद्य चढ़ाते, व्याधि रहित हो काया।।शाश्वत.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में मोह अंधेरा छाया, ज्ञान नेत्र नहिं खुलते।
दीपक से तुम आरति करते, आत्म सरोरुह खिलते।।शाश्वत.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्निपात्र में, खेऊँ सुरभि उठे है।
अशुभ कर्म क्षण में जल जाते, सुयश सुगंधि बढ़े है।।शाश्वत.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर ताजे फल लेकर, शिवफल हेतु चढ़ाऊँ।
मनोभावना पूरी कीजे, हाथ जोड़ शिर नाऊँ।।शाश्वत.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, चांदी पुष्प मिलाऊँ।
अर्घ्य चढ़ाकर करूँ प्रार्थना, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।शाश्वत.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदन्तवक्षारविजयार्धपर्वत-स्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवरपद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म आनंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

अपर धातकी द्वीप, साठ अचल के जिनगृहा।
जजूँ हृदय धर प्रीत, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षट् कुलाचल अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

अचलमेरु के दक्षिण दिश में, हिमवन रजतमयी है।
ग्यारह कूट सहित पर्वत मधि, पद्म सरोवर भी है।।
द्रह बिच कमल, कमल बिच देवी-श्री को भवन बखाना।
पूर्व दिशा में सिद्धकूट, जिनगेह जजूँ अघ हाना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिय महाहिमवन कुलनग है, रजतमयी नवकूटा।
महापद्मद्रह के कमलों बिच, ही सुरि गेह अनूठा।।

पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर, श्रीजिनभवन सुहावें।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निषधगिरी वर तप्त कनक छवि, नवकूटन सुर सेवी।
मध्यतिगिंछ सरोवर के बिच, कमल मध्य धृतिदेवी।।पूर्व.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलाचल वैडूर्य मणिद्युति, नवकूटों से मनहर।
केसरिद्रह में कमल बीच, कीर्तीदेवी अति सुन्दर।।पूर्व.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्मीनग रूपाछवि कूटों, आठ सहित मन मोहे।
पुंडरीक द्रह मध्य कमल में, बुद्धिदेवी सोहे।।पूर्व.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरीनग स्वर्णाभ बीच, महापुंडरीक सरवर है।
मध्य कमल बिच लक्ष्मीदेवी, ग्यारह कूट उपरि हैं।।पूर्व.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिशिखरीपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

अचलमेरु ईशान दिशा में, माल्यवान गजदंता।
नीलमणी सम छवि अतिसुंदर, नवकूटों से संता।।
मेरु निकट के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर, पाऊँ निज विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमाल्यवानगजदंतपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू की आग्नेय दिशा में, सौमनस्य गजदंता।
चांदी सम अति कांत चमकता, सात कूट विलसंता।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के नैऋत्य कोण में, विद्युत्प्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि शाश्वत सुन्दर, नवकूटों युत संता।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के वायव्य दिशा में, गंधमादनाचल है।
कनककांति से दिपे मनोहर, सात कूट अविचल है।।मेरु.।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार पर्वत जिनालय अर्घ्य

–राग भरतरी –

मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन-वच-काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।टेक.।।
सीतानदि उत्तर तटे, ''चित्रकूट'' वक्षार।
ता गिरि पे इक जिनभवन, अविनाशी अविकार।।मैं.।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे चित्रकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिनकूट' वक्षार है, कांचन की द्युति जान।
ताके जिनमंदिर विषें, जिनवर बिम्ब महान।।मैं.।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे नलिनकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार है, ता गिरि पे चउ कूट।
सिद्धकूट में जिनसदन, पूजत पुण्य अटूट।।मैं.।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे पद्मकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार है, भूभृत अविचल मान।
ताके जिनमंदिर विषें, अकृत्रिम भगवान।।मैं.।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे एकशैलवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–राग भरतरी –

मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदें भाव से, ते उतरें भव पार।।
देवारण्य समीप से, है 'त्रिकूट' वक्षार।
ताके श्री जिनवेश्म को, पूजें इंद्र अपार।।मैं.।।15।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षाराचल 'वैश्रवण', अनुपम रत्न भण्डार।
ताका जिनमंदिर कहा, मोक्ष महल का द्वार।।मैं.।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार पे, खेचर गण आवंत।
ताके श्री जिनगेह को, मुनिगण नित्य नमंत।।मैं.।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे आत्मांजनवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' नग वक्षार है, पूरे सुरगण आश।
ताके जिनगृह पूजते, होते कर्म विनाश।।मैं.।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअंजनवक्षारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अडिल्ल छंद –

'श्रद्धावान' वक्षार, कनकमय मानिये।
भद्रसाल वन वेदी, निकट बखानिये।।

तापे श्री जिनभवन, विषें जिनबिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावान्वक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान' कहा, वक्षार गिरीश पे।
कूट कहे हैं चार, रहें सुर तीन पे।।
इक में श्री जिनभवन, विषें जिनबिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावानवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार, गिरी अनुपम जहाँ।
सुरकिन्नरगण जिनवर, यश गाते वहाँ।।
तापे श्री जिनभवन, विषें जिनबिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविषवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग वक्षार 'सुखावह', सुखदातार है।
ताके जिनगृह जजत, भविक भव पार हैं।।
तापे श्री जिनभवन, विषें जिनबिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावहवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चन्द्रमाल' वक्षार, गिरी सुखकार है।
भूतारण्य समीप, कनकमयि सार है।।
तापे श्री जिनगेह, जिनेश्वर बिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटे चन्द्रमालवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार, जिनेश्वर गेह से।
भविजन मन तम हरें, छुड़ा तन नेह से।।
जिनवर गृह के सभी, जिनेश्वरबिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटे सूर्यमालवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' वक्षार, अतुल जिनगृह तहाँ।
नागेन्द्रादिक देव, करें पूजन वहाँ।।
जिनवरगृह के सभी, जिनेश्वर बिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीउत्तरतटे नागमालवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार, मनोहर जानिये।
देव पूज्य जिनगेह, वहाँ पर मानिये।।
सुर नर पूजित सर्व, जिनेश्वर बिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, हरूँ जग द्वंद्व को।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानद्युत्तरतटे देवमालवक्षार-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ्य

–अडिल्ल छंद –

अचलमेरु के पूर्व, विदेह बखानिये।
सीता उत्तर 'कच्छा', देश सुमानिये।।
ताके मधि रूपाचल पे, जिन धाम को।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, तजूँ दुखथान को।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' अपर, धातकी माहिं है।
अचल मेरु के पूर्व, विदेहन माहिं है।।
मध्य रजतगिरि के, श्री जिनगृह को जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन, प्रतिमा को नित भजूँ।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी मध्य, अचल सुरगिरि कहा।
ताके पूरब देश, 'महाकच्छा' लहा।।
ताके मधि रजताचल, पर जिनगृह सदा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भजूँ सुख सम्पदा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती', मध्य विजयार्ध है।
ताके जिनगृह को नित, पूजें भव्य हैं।।
तिनके श्री जिनबिंब, अकृत्रिम सोहते।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ, सुरनर मन मोहते।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' है देश, मध्य विजयार्ध है।
तापे नव कूटों में, इक विख्यात है।।
सिद्धकूट में जिन-प्रतिमा को पूजते।
अर्घ्य चढ़ाय जजें, नर दुःख से छूटते।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता', मधि रूपाद्रि है।
तापे सिद्धायतन, माहिं जिननाथ हैं।।

मुनिपति से नित पूज्य, अकृत्रिम चैत्य हैं।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं, भवरुज वैद्य हैं।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' मध्य, रजतगिरि सोहना।
सिद्धकूट जिनगृह से, जन मन मोहना।।
तिनकी जिन प्रतिमा को, पूजूँ भाव से।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं, अतिशय चाव से।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपुष्कलादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती', मध्य विजयार्ध है।
तापे जिनगृह पूजत, भव्य कृतार्थ हैं।।
तिनकी मणिमय जिन-प्रतिमा को मैं जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाय सदा, मन वच तन से भजूँ।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

अपरधातकी द्वीप, अचल सुरगिरि पूरब में।
देवारण्य समीप, देश 'वत्सा' के मधि में।।
रजतगिरी पर सिद्धकूट में मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, उन्हों की अतिशय महिमा।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पूर्व 'सुवत्सा' देश विदेहा।
तिसके बीचों बीच, रजतगिरि रमत सुदेहा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, उन्हों की अतिशय महिमा।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के पूर्व 'महावत्सा' धर देशा।
तिसके मधि विजयार्ध, बसें नित तास खगेशा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, उन्हों की अतिशय महिमा।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' अचल सुरगिरि के पूर्वा।
रूपाचल तामध्य, रमें तापे गंधर्वा।।नव.।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पूरब, 'रम्या' देश कहाता।
ताके बीचों बीच, रजतगिरि शोभा पाता।।नव.।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' कहा, सुपूर्व अचल मेरू के।
ताके मध्य रजतगिरि, पे नवकूट सु नीके।।नव.।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया', अपर धातकी खण्ड में।
तिनके बीच रजतनग, त्रयकटनी हैं उसमें।।नव.।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहरमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अचल मेरू पूरब में।
तिसके मधि रूप्याद्रि तथा छहखंड उसी में।।नव.।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमंगलावतीदेशमध्यस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद –

अपरधातकी मेरु अचल के, पश्चिम सीतोदा दाएँ।
भद्रसालवन वेदी सन्निध, 'पद्मा' देश कहा जाए।।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।43।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की अपर दिशा में, सीतोदा नदि के दाएँ।
देश 'सुपद्मा' शोभा पाता, उसमें छहों खंड गाएँ।।ता.।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खंड द्वीप में, सीतोदा के दक्षिण में।
देश 'महापद्मा' आरज खंड, कर्मभूमि शाश्वत उसमें।।ता.।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थित-विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, देश पद्मकावती कहा।
तीर्थंकर श्रुत केवलि गणपति, मुनिगण से नित पूज्य रहा।।ता.।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, 'शंखा' देश विदेह कहा।
रूपाचल है मध्य उसी के, तीन कटनियों सहित रहा।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, 'नलिना' देश कहा जाता।
ताके बीच रूप्यगिरि सुन्दर, विद्याधर के मन भाता।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, 'कुमुद' देश अतिरम्य कहा।
ताके मध्य रजतगिरि सुंदर, ऋषिगण विचरें नित्य वहाँ।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पे जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी सीतोदा के, दाएँ 'सरिता' देश कहा।
ताके मध्य रूप्यगिरि है नित, इंद्रादिकगण रमें वहाँ।।
नवकूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पे जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसरितादेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोलाछंद –

'वप्रा' देश विदेह, अपर धातकी माहीं।
तामधि रजत गिरीन्द्र, सीतोदा तट ताहीं।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगलदाई।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, अचल मेरू पश्चिम में।
रूप्याचल है मध्य, नदि के निकट सु उसमें।।सिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावप्रा' सुविदेह, अपर धातकी तामें।
रजताचल ता मध्य, तीन कटनियाँ तामें।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगलदाई।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितविजयार्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्रकावती' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
नवकूटों में एक, कूट सुसौख्य भरी है।।सिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, अपर धातकी द्वीपे।
विजयारध तामध्य, नवकूटों से दीपे।।सिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' माहिं, रजतगिरी अमलाना।
मुकुट सदृश नवकूट, सुरनर रमत महाना।।सिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' मध्य, रूपाचल अति सोहे।
तापे यतिगण नित्य, आतम समरस जोहे।।सिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितविजयार्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश, विजयारध ता बीचे।
तापे सुरगण आय, क्रीड़ा करत सुनीके।।सिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थित-विजयार्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

शुभ अपरधातकी दक्षिण में इक, 'भरत' सुक्षेत्र कहाता है।
गंगा-सिंधू नदि विजयारध, इनसे छह खंड धराता है।।
रूपाचल के पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भाता है।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, वह आतमसिद्धि कराता है।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणदिशि भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपरधातकी उत्तर में, 'ऐरावत' क्षेत्र सुहाना है।
रक्ता रक्तोदा रजतगिरी, इनसे छह खंड युत माना है।।
रजताचल की पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भाता है।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, वह आतमसिद्धि कराता है।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थउत्तरदिशि ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

पश्चिम धातकी में छह कुलगिरि, चउ गजदंताचल शोभ रहे।
सोलह वक्षार गिरी स्वर्णिम, चौंतिस रजताचल शोभ रहे।।
इस नग पर एक-एक जिनगृह, इन साठ जिनालय को पूजूँ।
चउघाति कर्म का नाश करूँ, भव-भव की व्याधी से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुर्गजदन्ताचलषोडश-वक्षारचतुस्त्रिंशत्विजयार्धपर्वतस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ सौ अस्सी जिनप्रतिमा, इन जिनमंदिर में राजे हैं।
नासाग्रदृष्टि पद्मासन हैं, छवि वीतराग अति भासे हैं।।
इन जिनमूर्ती का ध्यान किये, निजचिन्मय मूर्ति प्रगट होती।
मिथ्यात्व पिंडि फट जाती है, निज आतम ज्योति प्रगट होती।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्य-विराजमानषट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अपरधातकी में मेरू, शुभ अचल नाम से अचलित है।

धातकि तरु शाल्मलि तरु सोहें, कुलपर्वत आदि साठ नग हैं।।
इन सबके जिनगृह अट्ठत्तर, शाश्वत मणि स्वर्णमयी सोहें।
इनकी पूजा करते सुरगण, गणधर मुनिगण का मन मोहें।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमेर्वादिअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन सबमें जिनवर प्रतिमाएँ, शाश्वत अनादि से राजे हैं।
ये पाँच शतक धनु तुंग कहीं, पद्मासन सौम्य विराजे हैं।।
निज आत्मसुधारस आस्वादी, चारण ऋषि वंदन करते हैं।
इन आठ हजार चार सौ चौबिस, का अभिनंदन करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमेर्वादिसप्ततिजिनालयमध्यविराजमान-अष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

जय जय जिनवर मूर्तियाँ, जय जय जिनवर धाम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शत-शत करूँ प्रणाम।।1।।

–चाल-शेर छंद–

जय धातकी सुद्वीप के शाश्वत जिनालया।
जय हिमवदादि पर्वतों के छह जिनालया।।
जय जय चउ गजदंत के चारों जिनालया।
वक्षार पर्वतों के भी सोलह जिनालया।।2।।
जय जय रजतगिरी के चौंतिस जिनालया।
जय जय जिनेन्द्र आलय भविजन सुखालया।।
जो भक्तिभाव से सदैव वंदना करें।
वे कर्म पर्वतों की भि खंडना करें।।3।।
हिमवन है दो हजार इक सौ पाँच कुछ अधिक।

योजन प्रमाण दो हजार कोस का ये नित।।
इससे चतुर्गुणा महाहिमवन विशाल है।
इससे चतुर्गुणा निषध पर्वत विशाल है।।4।।
आगे के नील-रुक्मि और शिखरि पर्वता।
निषधादि सदृश विस्तृते इन छै में छह ह्रदा।।
इन ह्रद के मध्य नीर में सरोज खिले हैं।
श्री आदि देवियों के वहाँ महल भले हैं।।5।।
चारणमुनी इन पर्वतों पर नित्य विचरते।
जिनगेह का वंदन करें शुभ ध्यान को धरते।।
सब इंद्र इंद्राणी मिले भक्ती से आवते।
सुरवृंद देवियाँ मिले जिनकीर्ति गावते।।6।।
विद्याधरों की टोलियाँ जिन वंदना करें।
संगीत गीत नृत्य से जिन अर्चना करें।।
जिनभक्ति से असंख्य कर्म निर्जरा करें।
सम्यक्त्वनिधी पायके निजात्म सुख भरें।।7।।
मैं भी यहीं परोक्ष में उन मूर्ति को नमूँ।
निज ज्ञानमती सौख्य पा मिथ्यात्व को वमूँ।।
नहिं बार-बार जन्म-मरण दुःख को भरूँ।
निज को हृदय में धार के संसार से तिरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 13)

पुष्करार्धद्वीप इष्वाकार जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द छंद)

पुष्करार्ध में दक्षिण-उत्तर, इष्वाकार गिरी हैं।
कनकवर्णमय शाश्वत अनुपम, धारें अतुलसिरी हैं।।
इन दोनों पे दो जिनमंदिर, पूजत पाप पलानो।
आह्वानन कर जिनप्रतिमा का, विधिवत् पूजन ठानो।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (नरेन्द्र छंद)

तीन लोक भर जाय प्रभो मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी प्यास बुझी नहिं किंचित्, यातें शरण लिया है।।
ह्रदय ताप उपशांती हेतू, शीतल जल ले आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह राग की दावानल में, चिर से झुलस रहा हूँ।
किंचित् मन की दाह मिटी नहिं, अब तुम पास खड़ा हूँ।।
रागदाह हर शीतल हेतू, हरि चंदन घिस लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम मरण के बहु दुःखों से, अब मैं श्रांत हुआ हूँ।
अन्य नहीं निरवारण समरथ, यातें पूज रहा हूँ।।
अक्षय अव्यय निजपद हेतू, उज्ज्वल अक्षत लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।3।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मकरध्वज[1] ने चिर भव-भव में, मुझको अधिक छला है।
मारविजेता[2] तुमको सुनके, ली अब शरण भला है।।
काममोहयमत्रिपुरारी[3] हर[4]! विविध कुसुम मैं लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्यातीते तीन लोक सम, अन्न प्रभो! खाया मैं।
फिर भी भूख अगनि नहिं बुझती, इससे अकुलाया मैं।।
स्वातम अमृत स्वाद हेतु मैं, बहुविध व्यंजन लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध दीपक विद्युत आदी, तम हरने हित लाया।
फिर भी अंतर अंधकार को, दूर नहीं कर पाया।।
स्वपरभेद विज्ञान हेतु मैं, मणिदीपक ले आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।6।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म दुःख देते जग में, इनको शीघ्र जलाऊँ।
धूप सुगंधित अग्निपात्र में, श्रद्धासहित जराऊँ।।

1. कामदेव 2. कामदेव विजयी 3. कामदेव, मोह और मृत्यु, ये तीन पुर सदृश हैं इनको जीतने वाले 4. महादेव

आतम शुद्धी करने हेतू, पूजन करने आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध सरस मधुर फल खाये, फिर भी तृप्ति न पाई।
आत्मसुधारस अनुभव पाने, प्रभु तुम पूज रचाई।।
ज्ञानानंद स्वभावी हो तुम, यह सुन शरणे आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदी ले, अर्घ्य सजाकर लाया।
नित्य निरंजन चिच्चिन्तामणि, रत्न कमाने आया।।
तुमसे हे प्रभु! अखिल ज्ञान निधि, प्राप्त हेतु मैं आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा[1] समश्वेत।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– **शाश्वत जिन आगार[2], मणिरत्नों से परिणमें।**
प्रभु करिये भवपार, नितप्रति अर्चूं भाव से।।1।।

अथ पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारगिरिस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. आकाशगंगा 2. भवन

–रोला छंद –

पुष्करार्ध वर द्वीप, ताके दक्षिण माहीं।
इष्वाकार गिरीश, अद्भुत अतुल कहाहीं।।
तापे सिद्ध सुकूट, जिनप्रतिमा अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थारी।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय द्वीप के माहिं, उत्तर दिश में जानों।
इष्वाकार नगेश, अनुपम रूप बखानो।।
तापे जिनवरगेह, सिद्धकूट मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थारी।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थउत्तरदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

कंचनदेह सुकांति, दो पर्वत मन मोहे।
चार-चार हैं कूट, सुर किन्नर गृह सोहें।।
उनमें इक-इक सिद्ध-कूट जिनालय दो हैं।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय, पूजूँ शिवसुख होहैं।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशायां सिद्धकूटजिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो नग के जिनगेह, तिनमें जिनवर प्रतिमा।
दो सौ सोलह मान्य, नमूँ नमूँ गुण महिमा।।
मुनिवरगण शिरनाय, वंदें नित सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, शीघ्र वरूँ शिवनारी।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमान-द्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

अशरण के प्रभु तुम शरण, निराधार आधार।
तुम गुणगण मणिमालिका, लेऊँ कंठ में धार।।1।।

–तोटल छंद –

जय इष्वाकार जिनेश गृहं, जय मुक्तिवधू परमेश गृहं।
जय नाथ त्रिलोकपती तुम हो, जय नाथ अनंत गुणांबुधि हो।।1।।

जय साधु मनोम्बुज भानु समं, जय भव्य कुमोदनि चन्द्र समं।
जय भक्त मनोरथ पूरक हो, जय सर्व दुखांकुर चूरक हो।।2।।

जय कल्पतरू सम सौख्य भरो, जय वांछित वस्तु प्रदान करो।
जय संसृति रोग महौषधि हो, जय तारक भव्य भवोदधि हो।।3।।

जय तुंग चतुःशत योजन है, जय विस्तृत सहस सुयोजन है।
जय लंबे आठ सु लाख कहे, द्वय शैल सुवर्णिम कांति लहे।।4।।

मुनिवृंद वहाँ नित भक्ति करें, निज आतम बोध विकास करें।
खगवृंद वहाँ नित आवत हैं, जिनपाद सरोरुह ध्यावत हैं।।5।।

सुर अप्सरियाँ बहु नृत्य करें, गुण गावत चित्त उमंग भरें।
करताल मृदंग बजावत हैं, निज कर्म कलंक नशावत हैं।।6।।

द्वय पे जिनमंदिर स्वर्णमयी, जिनबिंब मणीमय रत्नमयी।
छवि सौम्य विराग विदोष कही, द्युति से रवि रश्मि लजें सबहीं।।7।।

जिनपाद सरोरुह शर्ण लिया, प्रभु अर्ज सुनो हमरी कृपया।
यमपाश विपाश हरो प्रभुजी, सब भाव विभाव हरो प्रभुजी।।8।।

हम आश धरें तुम पाद प्रभो, अब वेग उबार भवोदधि सो।
मुझ 'ज्ञानमती' सुख शांति करो, जिनदेव! सभी गुण पूर्ण करो।।9।।

–घत्ता –

जय इष्वाकारा, पर्वत सारा, जय जिनमंदिर नित्य नमूँ।
जय जिनगुण गाके, कर्म नशाके, नित्य निरंजन सिद्ध बनूँ।।10।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 14)

मंदर मेरु पूजा

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

पुष्करार्ध वर द्वीप पूर्व में, मंदर मेरू सोहे।
उसके सोलह जिनमंदिर में, जिनप्रतिमा मन मोहे।।
भक्तिभाव से आह्वानन कर, पूजा पाठ रचाऊँ।
भव-भव के संताप नाश कर, स्वातम सुख को पाऊँ।।1॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (भुजंगप्रयात छंद)

पयोराशि को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो के पदाम्भोज धारा कराऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय चंदनादि सुवासीत लाऊँ।
प्रभो आपके पाद में नित चढ़ाऊँ।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल शालि तंदुल लिया थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें पुंज सद्भाव धर के।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्पमाला बनाऊँ।
महा काम शत्रुंजयी को चढ़ाऊँ।।जजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू इमरती बनावे।
क्षुधा व्याधि नाशूँ प्रभू को चढ़ाके।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की लोक उद्योतकारी।
तुम्हें पूजते ज्ञान प्रद्योत भारी।।जजूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ सदा मैं।
कर्म की भस्म को उड़ाऊँ मुदा मैं।।जजूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अमरूद अमृत फलों से।
जजूँ मैं बचूँ कर्म अरि के छलों से।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से अर्घ्य करके।
चढ़ाऊँ तुम्हें सर्वदा प्रीति धर के।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे निज सुखसार, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

मंदरमेरू जिनभवन, सर्वसौख्य भंडार।
पुष्पांजली चढ़ाय के, जजूँ नित्य चित धार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

पुष्करार्धवर पूर्व में, मंदर मेरु महान।
भद्रसाल पूरबदिशी, जजूँ जिनालय आन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल दक्षिण दिशा, जिनगृह शाश्वत सिद्ध।
तिन में जिनवर बिंब को, जजूँ मिले सब सिद्धि।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल में अपरदिश, जिनमंदिर सुखकार।
जिनप्रतिमा को पूजहूँ, मिले भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू भूमि में, भद्रसाल वन जान।
उत्तर दिश जिनभवन को, जजूँ मोक्ष हित मान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में, मंदरगिरी कनकाभ है।
जिनवर न्हवन से पूज्य उत्तम, सुरगिरी विख्यात है।।
नंदन विपिन[1] पूरब दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज और पर का करें अंतर, जो निरंतर मुनिवरा।
विचरण करें जिनवंदना हित, वे सदैव दिगम्बरा।।
नंदन विपिन दक्षिण दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिनंदनवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यमराज का भय नाशते, सब कामना पूरी करें।
शुद्धात्म रस प्यासे मुनी की, भावना पूरी करें।।
नंदन विपिन पश्चिम दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिनंदनवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव राग आग बुझावने, तुम भक्ति गंगा नीर है।
स्नान जो इसमें करें, उनकी हरें सब पीर हैं।।
नंदन विपिन उत्तर दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिनंदनवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

मंदरमेरू माहिं, वन सोमनस सुहावे।
पूरब दिश जिनगेह, पूजत सौख्य उपावे।।

1. वन।

राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु चतुर्थ महान, वन सौमनस बखाना।
दक्षिण दिश जिनधाम, मृत्युंजय परधाना।।राग द्वेष.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु अनूप, वन सौमनस विशाला।
पश्चिम दिश जिनवेश्म, देता सौख्य रसाला।।राग द्वेष.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू माहिं, वन सौमनस कहा है।
उत्तर दिश जिनधाम, शाश्वत शोभ रहा है।।राग द्वेष.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच छंद (चाल-पार्श्वनाथ देव सेव.....)

पुष्करार्ध पूर्व खंड द्वीप में सुमेरु है।
तास पांडुके वनी, सुपूर्व दिक्क में रहे।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदराद्रि पांडुकेसु दक्षिणी दिशा तहाँ।
साधुवृंद वंदना जिनेश की करे वहाँ।।

जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु जो चतुर्थ है चतुर्थ रम्य जो वनी।
पश्चिमी दिशी सुकल्पवृक्ष पंक्तियाँ घनी।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदराचले चतुर्थ, जो वनी प्रसिद्ध है।
उत्तरी दिशा तहाँ मनोज्ञता विशिष्ट है।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-सोरठा –

सोलह श्री जिनधाम, मंदर मेरू में कहे।
जिनवर बिंब महान, अर्चूं पूरण अर्घ्य ले।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस, जिनवर प्रतिमा नित नमूँ।
नित्य नमाऊँ शीश, पूरण अर्घ चढ़ाय के।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत-अष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदर मेरु विदिक्क, पांडुक आदि शिला कहीं।
नमूँ नमूँ प्रत्येक, जिन अभिषेक पवित्र हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा –

जय जय मंदर मेरु नित, जय जय श्री जिनदेव।
गाऊँ तुम जयमालिका, करो विघन घन छेव।।1।।

–शेर छंद –

जैवंत मूर्तिमंत मेरु मंदराचला।
जैवंत कीर्तिमंत जैन बिंब अविचला।।
जैवंत ये अनंतकाल तक भि रहेंगे।
जैवंत मुझ अनंत सुख निमित्त बनेंगे।।1।।

जै भद्रसाल आदि चार वन के आलया।
जै जै जिनेन्द्र मूर्तियों से वे शिवालया।।
जै नाममंत्र भी उन्हों का सारभूत है।
जो नित्य जपे वो लखें आतम स्वरूप है।।2।।

भव भव में दुःख सहे अनंत काल तक यहाँ।
ना जाने कितने काल मैं निगोद में रहा।।
तिर्यंचगती में असंख्य वेदना सही।
नरकों के दुःख को कहें तो पार ही नहीं।।3।।

मानुष गती में आयके भी सौख्य न पाया।
नाना प्रकार व्याधियों ने खूब सताया।।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग तब हुआ।।
तब आर्त-रौद्रध्यान बार-बार कर मुआ।।4।।

संक्लेश से मर बार-बार जन्म को धरा।
आनंत्य बार गर्भवास दुःख को भरा।।
मैं देव भी हुआ यदि सम्यक्त्व बिन रहा।
संक्लेश से मरा पुनः एकेन्द्रि हो गया।।5।।

हे नाथ! सभी दुःख से मैं ऊब चुका हूँ।
अब आपकी शरणागती में आके रुका हूँ।।
करके कृपा स्वहाथ का अवलंब दीजिए।
मुझ 'ज्ञानमती' को प्रभो! अनंत[1] कीजिए।।6।।

–घत्ता छंद –

गुणगण मणिमाला, परम रसाला, जो भविजन निज कंठ धरें।
वे भव दावानल, शीघ्र शमन कर, मुक्तिरमा को स्वयं वरें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

1. अंत रहित।

(पूजा नं. 15)

पूर्व पुष्करार्धद्वीप पुष्करवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

पुष्कर तरु से अंकित पुष्कर, द्वीप जु सार्थक नामा।
सुरगिरि के दक्षिण उत्तर में, भोगभूमि अभिरामा।।
उत्तरकुरु ईशान कोण में, पद्मवृक्ष मन मोहे।
देवकुरू नैऋत में शाल्मलि, तरु पे सुरगण सोहें।।1।।

–दोहा –

दोनों तरु पे जिनभवन, स्वयं सिद्ध गुणखान।
जिनवर पूजन हेतु मैं, करूँ यहाँ आह्वान।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक (लक्ष्मीधरा छंद)

तीर्थवारि महास्वच्छ झारी भरी।
तीर्थ कर्तार के पादधारा करी।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण द्रव के सदृश कुंकुमादि लिये।
राग की दाह को मेटने पूजिए।।दो तरू.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोमरश्मि सदृश श्वेत अक्षत लिये।
आत्म निधि पावने पुंज रचना किये।।दो तरू.।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार मल्ली सुमन ले लिये।
मारहर नाथ पादाब्ज में अर्पिये।।दो तरू.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूझिया औ तिकोने भरे थाल में।
भूख व्याधी हरो नाथ पूजूँ तुम्हें।।दो तरू.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ज्वलित दीप लेके करूँ आरती।
चित्त में प्रगटती ज्ञान की भारती।।दो तरू.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
मोह शत्रू जले आप पद सेवते।।दो तरू.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम नींबू नरंगी सु अंगूर हैं।
पूजतें आत्म पीयूष को पूर है।।दो तरू.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि ले स्वर्ण थाली भरूँ।
नाथ पद पूजते सर्वसिद्धी वरूँ।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

पृथ्वीकायिक वृक्ष, सर्वरत्नमय सोहने।
ताके श्री जिनसद्म, मन-वच-तन से पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

मंदरमेरू के ईशान में, पद्म वृक्ष रत्नों का।
उसकी उत्तर शाखा पर है, जिनमंदिर भवनों का।।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, नितप्रति पूज रचाऊँ।
परम अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचलपद को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि के नैऋत्य कोण में, शाल्मलीतरु जानो।
उसकी दक्षिण शाखा पर, जिनगेह अकृत्रिम मानो।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पुष्कर शाल्मलिवृक्ष के, अमितवृक्ष परिवार।
तिन सबके जिनगेह को, पूजूँ भवदधितार।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूट-जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो जिनगृह की जिनकृती, दो सौ सोलह जान।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, मिले निजातम ध्यान।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयमध्य-विराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–सोरठा –

स्वयंसिद्ध जिनराज, अकृत्रिम जिनगेह में।
पूर्ण करो मम आश, गाऊँ अब जयमालिका।।1।।

–तोटक छंद –

जय पुष्कर वृक्ष महाफलदं, जय शाल्मलिवृक्ष महासुखदं।
जय वृक्ष तने जिनमंदिर को, जय सिद्धिवधूप्रिय जिनवर को।।2।।

तरु में मरकतमणि नीलम के, कर्केतन स्वर्णमयी पत्ते।
बहुवर्ण रतनमय अंकुर हैं, रत्नों के फल औ पुष्प कहें।।3।।

तरु सिद्ध अनादि अनंत कहें, तहं चामर किंकणि आदि रहें।
अति तुंग सघन द्रुम शोभ रहें, शुभ वायु चले हिलते तरु हैं।।4।।

इन शाख विषे जिनमंदिर जी, महिमा वरणंत पुरंदर जी।
सुर इंद्र नरेन्द्र फणीन्द्र सदा, गुणगावत भक्ति भरे जु मुदा।।5।।

जिननाथ त्रिलोकपिता तुम हो, तुमही भववारिधि तारक हो।
बिन कारण बंधु तुम्हीं प्रभु हो, तिहुँलोक तने तुमही गुरु हो।।6।।

तुम शंकर विष्णु विधि तुमही, तुम बुद्ध हितंकर ब्रह्म तुम्हीं।
भुवनैक शिरोमणि देव तुम्हीं, शरणागत रक्षक देव तुम्हीं।।7।।

तुम ज्योति चिदंबर मुक्तिपती, तुम पूर्ण दिगम्बर विश्वपती।
सर्वारथसिद्धि विधायक हो, समता परमामृत दायक हो।।8।।

तुम भक्त मनोरथ पूर्ण करें, क्षण में जिनगुण को पूर्ण भरें।
यमराज महाभट चूर्ण करें, वर 'ज्ञानमती' सुख तूर्ण वरें।।9।।

–घत्ता –

तुम जिनवर भास्कर, कर्मभरम हर, शिवसंपतिकर शरण लही।
जो तुम गुणमाला, पढ़े रसाला, सो पावहिं शिवसौख्य मही।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 16)

पूर्व पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

पूरब पुष्कर अर्धद्वीप में, छह कुल पर्वत सोहें।
चार कहे गजदंत अकृत्रिम, सुरकिन्नर मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुवर्णिम, चौंतिस रजताचल हैं।
इन पर्वत के साठ जिनालय, पूजत सुख अविचल है।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरपां

अथ अष्टक (दोहा)

पद्म सरोवर नीर शुचि, जिनपद धार करंत।
जन्मजरामृति नाश हो, आतमसुख विलसंत।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सुरभि, जिनपद में चर्चंत।
मिले आत्मसुख संपदा, निज गुण कीर्ति लसंत।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल धवल, पुंज चढ़ाऊँ नित्य।
नवनिधि अक्षय संपदा, मिले आत्मसुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून की, माल चढ़ाऊँ आज।
सर्वसौख्य आनंद हो, मिले स्वात्म साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली इमरती, चरु चढ़ाऊँ भक्ति।
मिले आत्मपीयूष रस, मोक्ष प्राप्ति की भक्ति।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती, करूँ तिमिर परिहार।
जगे ज्ञान की भारती, भरे सुगुण भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेवते हो सुरभि, आतम गुण विलसंत।
कर्म जलें शक्ती बढ़े, मिले निजात्म अनंत।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर ले, फल से पूजूँ आज।
मिले मोक्षफल आश यह, सफल करो मम काज।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ ले, रजत पुष्प विलसंत।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से, मिले सुगुण सुखकंद।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।**
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा – **पुष्करार्ध में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।**
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षट्कुलाचल अर्घ्य

–शंभु छंद –

पूरब पुष्कर में हिमवन गिरि, स्वर्णाभ अतुल अभिरामा है।
ग्यारह कूटों में पूरब दिश, जिन सिद्धकूट सर धाना है।।
ता मध्य पदम द्रह बीच कमल, श्रीदेवी परिकर सह राजे।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोह करम अरिदल भाजे।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिहिमवनपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजताभ महाहिमवन गिरि पे, हैं आठ कूट जन मन हारी।
पूरब के सिद्धायतन मध्य, जिनगेह अकृत्रिम सुखकारी।।
द्रह महापद्म मधि कमल बीच, ह्रीदेवी परिकर सह राजें।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोहकरम अरिदल भाजें।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाहिमवन्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निषधाचल तप्त कनक कांती, द्रह कहा तिगिंछ कमल बीचे।
धृतिदेवी रहती परिकर सह, नवकूटों से अद्भुत दीखें।।
सुर सिद्धकूट वंदें नत हों, मणि मुकुटों से जिनपद चूमें।
हम अर्घ्य चढ़ाकर नित पूजें, फिर भव वन में न कभी घूमें।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलाचल छवि वैडूर्यमणी, द्रह केसरि मध्य कमल तामें।
कीर्तिदेवी रहती उसमें, इक सिद्धकूट नव कूटों में।।
मुनि वीतराग भी जा करके, जिनगृह को वंदन करते हैं।
जो पूजें उनको भक्ति सहित, वे भव वारिधि से तरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्मी पर्वत चांदी सम है, द्रह पुंडरीक में कमल खिले।
बुद्धिदेवी परिवार सहित, उसमें रहती मन कमल खिले।।
नित आठ कूट में सिद्धकूट, जिनभवन अनूपम तामें हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ाकर के, निरुपम सुखसंपति तामें हैं।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी कुलगिरि कंचन छविमय, ग्यारह कूटों युत शोभे हैं।
महपुंडरीक द्रह के भीतर, पंकज पर लक्ष्मी शोभे हैं।।
पूरब दिश में इक सिद्धकूट, उसमें जिनमंदिर रत्नों का।
जिनबिंब जजें हम अर्घ्य लिये, जिनभक्ती है भवदधि नौका।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य

अडिल्ल छंद – **माल्यवंत गजदंत विदिश ईशान में।**
नीलमणी समकांति कूट नव तास में।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय लहूँ गुण शिवमही।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमाल्यवंतगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु महान विदिश आग्नेय है।
हस्तिदंत सौमनस रजत छवि देय है।।मीनकेतु.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि चौथे भूमि विदिश नैऋत्य हैं।
विद्युत्प्रभ गजदंत कनक छवि देय हैं।।मीनकेतु.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमादनाचल वायव्य विदिश कहा।
कनक कांतिमय अकृत्रिम अनुपम रहा।।मीनकेतु.।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार जिनालय अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

मंदर मेरू सीतानदि के, उत्तर में वक्षारा।
भद्रसाल वेदी के सन्निध, चित्रकूट अति प्यारा।।
तापर चार कूट नदि सन्निध, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितचित्रकूटवक्षारसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनकूट वक्षार दूसरा, वन उपवन से सोहे।
सुर किन्नर गंधर्व खगेश्वर, जिनगुण गाते सोहें।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा राजें, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितनलिनकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मकूट वक्षार अचल हैं, अनुपम निधि को धारे।
देव-देवियाँ भक्तिभाव से, आ जिन सुयश उचारें।।
कर्मविजयि की प्रतिमा उसमें, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकशैल वक्षार अचल में, अगणित भविजन आते।
सम्यक्रत्न हाथ में लेते, जिनवर के गुण गाते।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितएकशैलवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर में, जो देवारण्य समीपे।
गिरि वक्षार त्रिकूट नाम का, कनक वर्णमय दीपे।।
तापर चार कूट नदि पासे, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितत्रिकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षाराचल नाम 'वैश्रवण', शोभे सुरभवनों से।
इन्द्र चक्रवर्ती धरणीपति, पूजें नित रत्नों से।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग वक्षार मनोहर, शाश्वत सिद्ध कहा है।
सुर ललनाएँ क्रीड़ा करतीं, अद्भुत ऋद्धि जहाँ है।।मृत्युं.।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितअंजनवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मांजन वक्षार आठवाँ, सुर किन्नर मिल आवें।
जिनमहिमा को समझ-समझकर, समकित ज्योति जगावें।।मृत्युं.।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह नदी सीतोदा, दक्षिण दिश में जानो।
भद्रसाल ढिग वक्षाराचल, श्रद्धावान बखानों।।मृत्युं.।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितश्रद्धावान्वक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजटावान अचल सुंदर है, वेदी उपवन तापे।
इन्द्र नमन करते मणियों से, विलसत मुकुट झुकाके।।मृत्युं.।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितविजटावानवक्षारगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीविष वक्षार अकृत्रिम, द्रुम पंक्ती वन सोहें।
विद्याबल से श्रावकगण, पूजन कर मन मोहें।।मृत्युं.।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितआशीविषवक्षारगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल सुखावह सुख को देता, जो जिनगुण आलापें।
गगन गमनचारी ऋषियों के, पावन युगल वहाँ पे।।मृत्युं.।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितसुखावहवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पे, भूतारण्य समीपे।
ताके सन्निध चन्द्रमालगिरि, रचना अद्भुत दीपे।।मृत्युं.।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितचन्द्रमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यमाल वक्षार सूर्यसम, सुवरण आभा धारे।
सुर वनिताएँ नित आ-आकर, जिनवर कीर्ति उचारें।।मृत्युं.।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितसूर्यमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागमाल वक्षार अनूपम, विद्याधरगण आवें।
जन्म-जन्म दुःख नाशन कारण, जिनवर के गुण गावें।।मृत्युं.।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितनागमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवमाल वक्षारगिरी पे, देव-देवियाँ आके।
वीणा ताल मृदंग बजाकर, नृत्य करें हर्षाके।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितदेवमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ्य

–गीता छंद –

मंदरसुमेरू पूर्व में, सीता नदी के उत्तरे।
वन भद्रसाल समीप ''कच्छा'', देश अति सुंदर खरे।।
ता मध्य रूपाचल अतुल, नवकूट से मन को हरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम ''सुकच्छा'' देश में, षट् खंड रचना जानिये।
ता मध्य विजयारध अतुल, बहुभाँति महिमा मानिये।।
विद्याधरी वीणा बजाकर, भक्तिभर पूजा करें।
श्री सिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर महाकच्छा कहा, तामध्य रूपाचल सही।
वन वेदिका वापी सुरों के, गेह की अनुपम मही।।
मुनिवृंद करते वंदना, निज कर्म कलिमल को हरें।
श्री सिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छकवती सुविदेह में, रचना अकृत्रिम जानिये।
तामध्य रूपाचल अतुल, नवकूट संयुत मानिये।।
आकाशगामी ऋषि मुनी, श्रावक सदा भक्ती करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकच्छकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश आवर्ता सरस, तामध्य विजयारध गिरी।
गाते जिनेश्वर का सुयश, नित यक्ष किन्नर-किन्नरी।।
शाश्वत जिनालय वंदना, करते भविक भक्ती भरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षेत्र लांगलवर्तिका, भविजन सदा जन्में वहाँ।
भव बल्लियों को काटकर, शिव प्राप्त कर सकते वहाँ।।
इस मध्य रजताचल सुखद, बहुभव्य के कल्मष हरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य पूरित संपदा, यह पुष्कला वर देश है।
जिस मध्य रूपाचल कहा, हरता भविक मन क्लेश है।।
देवांगनाएँ नित मधुर, संगीत जहाँ पर उच्चरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'पुष्कलावति' देश में, विजयार्ध बीचों बीच है।
नवकूट में इक जिनसदन, नाशे भविक भव कीच है।।

स्वात्मैक परमानंद अमृत, के रसिक गुण विस्तरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सा' विदेह अतुल्यता मधि, आर्यखंड निरापदा।
इस देश के बस बीच में है, रूप्यगिरि वर शर्मदा।।
त्रैलोक्य नायक के गुणों की, कीर्ति बुधजन विस्तरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर 'सुवत्सा' देश में, शाश्वत रजतगिरि सोहना।
नवकूट रत्नों के बने, सुरवृंद से मन मोहना।।
सुर अप्सरा मर्दल सुवीणा, को बजा नर्तन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर 'महावत्सा' विषें, विजयार्ध पर्वत सोहता।
गंधर्व देवों के मधुर, संगीत से मन मोहता।।
मुनिवीतरागी के वहाँ, ध्यानाग्नि से भववन जरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'वत्सकावति' देश में, रूपाद्रि अनुपम मानिये।
विद्याधरों की पंक्तियों से, भीड़ तहँ पर जानिये।
इन्द्रादिगण आके वहाँ, मणिमौलि नत वंदन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'रम्या' मध्य में, रजताद्रि रत्नों की खनी।
भव के विजेता नाथ की, महिमा जहाँ अतिशय घनी।।
सौ इन्द्र मिलकर पूजने को, आ रहे भक्ती भरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर 'सुरम्या' देश में, विजयार्ध पर्वत सोहना।
किन्नर गणों की बांसुरी-ध्वनि से मधुर मन मोहना।।
वर ऋद्धिधारी मुनि तहाँ, बहुभक्ति से विचरण करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'रमणीया' विषे, विजयार्ध गिरि रजताभ है।
विद्याधरों की श्रेणियाँ, जिनमंदिरों से सार्थ हैं।।
नग तीन कटनी से सहित, बहु भांति की रचना धरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मंगलावती'' वर देश में, रजताद्रि बीचों बीच हैं।
जो जन नहीं श्रद्धा करें, रुलते सदा भवबीच हैं।।
खगपति सदा परिवारयुत, जिनवर सुयश वर्णन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिवलक्ष्मी वरें।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमंगलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

मंदरमेरु अपर, नदी के दक्षिण जानो।
भद्रसाल के पास, ''पद्मादेश'' बखानो।।

मध्य अचल विजयार्ध, जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' जान, मधि रजताद्रि बखाना।
अनुपम सुख की खान, खेचरपति से माना।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापद्मा' सुविदेह, रजताचल अभिरामा।
नवकूटों युत श्रेष्ठ, सुर गावें जिन नामा।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती', तामधि रजतगिरी है।
कनक रतन से पूर्ण, अविचल सौख्यश्री है।।
सिद्धकूट तामाहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शंखा'' देश विदेह, देव असंख्य वहाँ पे।
आते रहते नित्य, प्रमुदित चित्त तहाँ पे।।
ताके मधि विजयार्ध, जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशंखादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह, भव्य नयन मन मोहे।
ताके मधि विजयार्ध, नव कूटों युत सोहे।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिनादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कुमुदा'' देश विदेह, मध्य रजत गिरि सोहे।
भविमन कुमुद विकास, चन्द्रकिरण सम सोहे।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सरिता'' देश सुमध्य, अनुपम रजतगिरी है।
जिनवच सरिता तत्र, भविमन पंक हरी है।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा नदि जान, ताके उत्तर भागे।
'वप्रा' देश महान्, रूपाचल मधि भागे।।सिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, तामधि रजतगिरी है।
सुर ललनाएँ नित्य, आवें भक्ति भरी है।।सिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावप्रा' देश, तामें रजत नगेशा।
जिनगुण गाते नित्य, ब्रह्मा विष्णु महेशा।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव-भव दुःख परिहारी।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती', रजताचल मधि धारे।
मुनिगण जिनवर दर्श, करते सुयश उचारें।।सिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''गंधा'' देश विदेह, रूपाचल से सोहे।
स्वातमरस पीयूष, पीके मुनि शिव जोहें।।सिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' रम्य, जिनवच सुरभि वहाँ है।
जन मन होत सुगंध, नग विजयार्ध वहाँ है।।सिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' जान, जन मन कमल खिलावें।
मध्य रजत नग सिद्ध, जिनवच सुधा पिलावें।।सिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश, मधि रजताद्रि तहाँ है।
श्रद्धावंत महंत, का सम्यक्त्व वहाँ है।।सिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मंदअवलिप्त कपोल छंद –

पूरब पुष्कर द्वीप अर्ध में, 'भरतक्षेत्र' दक्षिण दिश जान।
बीचों बीच कहा विजयारध, तिस ऊपर नव कूट महान।।
पूर्व दिशा के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अविचल अभिराम।
गर्भवास दुखनाशन कारण, अर्घ्य चढ़ाय करूँ परणाम।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू के उत्तर दिश, शुभ ऐरावत क्षेत्र महान।
मध्य रजतगिरि चांदी सम है, त्रयकटनी युत अतुलनिधान।।
तिस पर पूर्वदिशा में जिनगृह, अकृत्रिम अनुपम सुखकार।
पुनर्जन्म दुख नाशन हेतू, अर्घ्य चढ़ाय जजूँ रुचि धार।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

वर पुष्करार्ध पूरब में है, छह कुलपर्वत चउ गजदंता।
सोलह वक्षार रूप्यगिरि हैं, चौंतिस ये नग अतिशय कांता।।
इन पर जिनमंदिर अकृत्रिम, चारणऋषि वंदन करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे यम का खंडन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षाररूप्याचलस्थितषष्टि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन सब मंदिर में जिनप्रतिमा, चौंसठ सौ अस्सी राजे हैं।
पद्मासन नासा दृष्टि धरें, छवि वीतराग अति भासे हैं।।
जो इनका ध्यान धरें नितप्रति, वे चिन्मय मूर्ति प्रगट करते।
अठ कर्मपिंड शतखंड करें, मृत्युंजय मूर्ति प्रगट करते।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्यविराजमान-षट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में मंदरगिरि, चौथे मेरू पर जिनमंदिर।
पुष्करतरु शाल्मलितरु सोहें, कुलअद्रि आदि पर जिनमंदिर।।
कुल अट्ठत्तर शाश्वत जिनगृह, मैं नित परोक्ष वंदना करूँ।
सब रोग शोक दारिद्र नशा, मृत्यू की भी खंडना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन जिनगृह में जिनप्रतिमाएँ, चौरासी सौ चौबिस सोहें।
सुरपति जाकर वंदन करते, गणधर का भी ये मन मोहें।।
इनकी भक्ती भवदधि तरणी, निज आत्म सुधारस निर्झरणी।
जो इसमें अवगाहन करते, वे पा लेते मुक्ती सरणी।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयमध्य-विराजमानअष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–त्रिभंगी छंद –

जय जय जिनमंदिर, जजत पुरंदर,
अतिशय सुंदर पुण्य भरें।
जय पाप निकंदन, सब सुख कंदन,
मुनिगण वंदन नित्य करें।।
पाऊँ मैं साता, मेट असाता,
शिवसुख दाता, तुमहिं नमूँ।
जय जय जिनप्रतिमा, गुणमणि गरिमा,
अतिशय महिमा, नित प्रणमूँ।।1।

–स्रग्विणी छंद –

मैं नमूँ मैं नमूँ हे जिनंदा तुम्हें।
नाथ! त्रैलोक्य के पूर्ण चंदा तुम्हें।।

मोहतम नाशने हेतु भास्वान हो।
साधु चित्ताब्ज विकसावने भानु हो।।2।।

भव्य जन के पिता पालते प्यार से।
भक्त जन मातु हो पोषते लाड़ से।।
मुक्ति के मार्ग के विघ्न को टारते।
भक्त की सर्व आपत्ति संहारते।।3।।

जो तुम्हें ध्यावते सर्व के ध्येय हों।
कीर्ति जो गावते वे स्वयं गेय हों।।
जो तुम्हें पूजते सर्वजन पूज्य हों।
जो तुम्हें वंदते वे जगत् वंद्य हों।।4।।

धन्य मेरा जनम धन्य है ये घड़ी।
धन्य हैं नेत्र मेरे सफल है घड़ी।।
धन्य है शीश ये आज वंदन किया।
धन्य है हाथ ये आज अर्चन किया।।5।।

एक ही प्रार्थना नाथ! सुन लीजिए।
जन्म वाराशि से पार कर दीजिए।।
पास अपने प्रभो! अब बुला लीजिए।
''ज्ञानमति'' बंद कलिका खिला दीजिए।।6।।

दोहा – **जिनप्रतिमा जिनसारखी, नमूँ नमूँ नत भाल।**
करुणासागर! दयाकर, करो भक्त प्रतिपाल।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 17)

विद्युन्माली मेरु पूजा

स्थापना (गीता छंद)

श्री मेरु विद्युन्मालि पंचम, द्वीप पुष्कर अपर में।
तीर्थंकरों का न्हवन होता, है सदा तिस उपरि में।।
सोलह जिनालय हैं वहाँ, सुरवंद्य जिनप्रतिमा तहाँ।
आह्वान कर पूजूँ सदा, मैं भक्ति श्रद्धा से यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (शंभु छंद)

क्षीरोदधि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव-भव का कलिमल धोने को, श्रद्धा से अति हरषाया हूँ।।
विद्युन्माली मेरू पंचम, उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा, पूजत ही मिले सुखालय हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कुंकुम गंध लिये, जिन चरण चढ़ाने आया हूँ।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आया हूँ।।विद्युन्माली.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरांबुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धो करके लाया हूँ।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।विद्युन्माली.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाया हूँ।
मदनारिजयी तव चरणों में, मैं अर्पण करने आया हूँ।।विद्युन्माली.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाया हूँ।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।विद्युन्माली.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञान ज्योति निज में भासे।।विद्युन्माली.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटुकर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।विद्युन्माली.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूरों के, गुच्छे अति सरस मधुर लाया।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर सुख पाया।।विद्युन्माली.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू वर, दीप धूप फल लाया हूँ।
निज गुण अनंत की प्राप्ति हेतु, तुम अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।विद्युन्माली.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

पंचम मेरू जिनभवन, शाश्वत नित शोभंत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले स्वात्म आनंद।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद –

श्री मेरु पंचम की धरा पर, भद्रसाल सुवन कहा।
ता पूर्व दिश जिनधाम शाश्वत, मूर्ति से शोभित अहा।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर, मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्र्य सुख साम्राज्य हेतू, मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु विद्युन्मालि में, वन भद्रसाल जु सोहता।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, निज विभव से मन मोहता।। जल.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु प्रथमहि ''वन विषे'', पश्चिम दिशा में जिनभवन।
उसमें जिनेश्वर बिंब शाश्वत, राजते भव भय मथन।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु के भूवन विषै, उत्तरदिशी जिनसद्म हैं।
उसमें महामहनीय जिनवर, बिंब के पदपद्म हैं।।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में है, पाँचवाँ सुरगिरि कहा।
नंदन विपिन में पूर्वदिक्, जिनगृह अनूपम छवि लहा।।
चंचल मनोमर्कटविजेता[1], साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल पंचम में सदा, नंदन सुवन विख्यात है।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, पूजें भविक हरषात हैं।।चंचल.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुराचल[2] में विपिन[3], नंदन अतुल महिमा धरे।
पश्चिम दिशा में जैनगृह, अतिशयभरी प्रतिमा धरे।।चंचल.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल विद्युन्मालि में, नंदनवनी तरु पंक्ति से।
जन मन हरे उत्तरदिशा के, मणिमयी जिनसद्म[4] से।।चंचल.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **कनकाचल[5] पंचम विषे, वन सौमनस रसाल।**
पूरबदिश में जिनभवन, अर्च हरूँ जंजाल।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

1. मनरूपी बंदर को वश करने वाले 2. मेरु 3. वन 4. जिनमंदिर 5. मेरु।

सुरगिरि वन सौमनस में, दक्षिण दिश जिनधाम।
तिनकी जिनप्रतिमा जजूँ, पूर्ण होय सब काम।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्णाचल[1] वन सौमनस, पश्चिम दिश जिनगेह।
इन्द्रवंद्य जिनबिंब को, पूजूँ धर मन नेह।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरु में, वन सौमनस अनूप।
उत्तरदिश जिनवेश्म को, जजत मिले निजरूप।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

–मोतीदाम छंद –

सुराचल पंचम में अभिराम, वनी पांडुक अतिरम्य ललाम।
जिनालय पूरबदिश में जान, जजूँ कर जोड़ करो शिवथान।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुराद्री[2] विद्युन्माली नाम, सरस वन पांडुक मुनि विश्राम।
जिनालय दक्षिणदिश में सार, जजूँ कर जोड़ करो भव पार।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकपर्वत[3] पंचम शिवकार, सुवन पांडुक में सुर परिवार।
जिनालय पश्चिमदिश रत्नाभ, जजूँ जिननाथ करो शिवलाभ।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1-2-3. मेरु

सुवर्णाचल पंचम परधान, सु पांडुक वन है सौख्य निधान।
जिनेश्वर गृह उत्तर दिश जान, भरो मम आश जजूँ इह थान।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

विद्युन्माली मेरु में, सोलह जिनवर धाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ लहूँ शिवधाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सत्रह सौ अठबीस हैं, जिनवर बिंब महान।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, नमूँ-नमूँ गुणखान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्र-सप्तशतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन के विदिक् में, पांडुशिलादि प्रसिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भाव से, लहूँ आत्मसुख सिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालिमेरुविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–शंभु छंद –

जय-जय विद्युन्माली मेरू, जय-जय सुवरणमय जिनगेहा।
जय-जय मृत्युंजयि जिनप्रतिमा, जय-जय सुर पूजें धर नेहा।।
जय-जय ऋषि गगन गमनचारी, श्रद्धा से वंदन करते हैं।
जय-जय मुनि समरस आस्वादी, स्वात्मा का चिंतन करते हैं।।1।।

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, चित्पिंड अखंड अरूपी हूँ।
स्वाभाविक दर्शन ज्ञान वीर्य, सुखरूप अचिन्त्य स्वरूपी हूँ।।
मैं हूँ अनंत गुण रत्नराशि, मैं परम ज्योतिमय परमात्मा।
मैं सकल विमल औ अकल अमल, हूँ परमानन्दमयी आत्मा।।2।।

यद्यपि व्यवहारनयापेक्षा, मैं दीन दुखी संसारी हूँ।
इन कर्मों का कर्ता-भोक्ता, नाना प्रकार तनुधारी हूँ।।
भव पंच परावर्तन कर-कर, चहुँगति परिभ्रमण किया करता।
बस जन्म-मरण के चक्कर में, निशदिन ही भ्रमण किया करता।।3।।
फिर भी निश्चयनय से मैं ही, नित शुद्ध सिद्ध परमात्मा हूँ।
रस गंध वर्ण-स्पर्श रहित, चिन्मूरति चैतन्यात्मा हूँ।।
ये राग रु द्वेष विभाव भाव, सब कर्मोदय से आते हैं।
जब कर्मबंध संबंध नहीं, तब कैसे ये रह पाते हैं।।4।।

निश्चय व्यवहार उभयनय, से मैं तत्त्वों का ज्ञाता होऊँ।
फिर नय का आश्रय छोड़ सभी, इक निर्विकल्प में रत होऊँ।।
मैं ध्याता हूँ तुम ध्यान ध्येय, फल आदिक भेद समाप्त करूँ।
बस एकाकी एकत्व लिए, निज में ही निज को प्राप्त करूँ।।5।।

प्रभु ऐसी स्थिति आने तक, तुम चरण कमल का ध्यान करूँ।
पूर्णैक ''ज्ञानमति'' पाने तक, पूजूँ वंदूँ गुणगान करूँ।।
हे नाथ! तुम्हारी भक्ती का, मुझको फल केवल यही मिले।
बस पास तुम्हारे आ जाऊँ, ऐसा मेरा सौभाग्य खिले।।6।।

दोहा – **पश्चिम पुष्कर द्वीप में, विद्युन्माली मेरु।**
पूजत ही निज सुख मिले, मिटे जगत का फेर।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 18)

पश्चिम पुष्करार्ध पुष्करवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

(चाल-इह विध राज्य करे.....)

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, मध्य कनक गिरि सोहे।
ताके दक्षिण उत्तर दिश में, भोगधरा[1] मन मोहें।।
उत्तरकुरु ईशान कोण में, पुष्कर वृक्ष सुहावे।
दक्षिण[2] देवकुरू अग्नी दिश, शाल्मलि तरु मन भावे।।1।।

-दोहा-

दोनों तरु की शाख पर, भूकायिक[3] जिनगेह।
जिनमूर्ती की थापना, करूँ भक्ति भर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैऋत्यकोणसंबंधि-पुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैऋत्यकोण-संबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरोःईशाननैऋत्यकोण-संबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चाल-मेरी भावना....)

पद्माकर को जल अतिशीतल, पद्म पराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करूँ मन कंज[4] खिला।।

1. भोगभूमि 2. पूर्व दक्षिण के मध्य की दिशा 3. पृथ्वीकायिक 4. कमल।

पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियाँ आन पड़ें।
जिनपद पूजन से नश जाते, कर्म शत्रु भी बड़े-बड़े।।पृथ्वी.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति भरे।
अमृत कण सम निज समकितगुण, पाऊँ अतिशय शुद्ध खरे।।पृथ्वी.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
कामबाणविजयीजिनवल्लभ, चरण जजत नवलब्धि मिले।।पृथ्वी.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनपद पंकज पूज किये।।पृथ्वी.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से करते जिन पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।पृथ्वी.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्य कर्म भी भस्म करें ।।पृथ्वी.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

1. क्षायिक दर्शन आदि नव क्षायिक भाव। 2. मलाई।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरें।
नव क्षायिकलब्धी फल इच्छुक, पूजूँ तुम पादाब्ज[1] खरे।।पृथ्वी.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतू, तुम पदवारिज[2] अर्घ्य किया।।पृथ्वी.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मालती फूल, सुरभित निजकर से चुनें।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

मुक्तिवधू भरतार, श्रीजिनवर के बिंब हैं।
पूजूँ शिव करतार, पुष्पांजली चढ़ाय के।।1।।

अथ श्री विद्युन्मालीमेरुसंबंधिद्वयवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–रोला छंद –

पश्चिम पुष्कर द्वीप, सुरगिरि के ईशाने।
पद्म वृक्ष की शाख, उत्तर दिश परधाने।।
तापे श्रीजिनगेह, नाना रत्नमयी है।
मृत्युंजयि जिनबिंब, पूजूँ सौख्य मही है।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. चरणकमल। 2. चरणकमल।

कनकाचल नैऋत्य, शाल्मलि द्रुम मन भावे।
दक्षिण शाखा ऊपर, जिनवर भवन सुहावे।।
उनके श्री जिनबिंब, अकृत्रिम अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ शिवतिय प्यारी।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

इन तरु के परिवार, अगणित शास्त्र बखाने।
उन सब में सुरवृन्द, वैभव संयुत मानें।।
प्रतिदेवन[1] गृह माहिं, जिनगृह शाश्वत जानो।
पूरण अर्घ्य बनाय, पूजत ही शिव थानो।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसपरिवारपुष्कर-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सोलह जानिये, जिनप्रतिमा अभिराम।
नित प्रति अर्घ्य चढ़ायके, शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्ष-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयमध्य-विराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

वीतराग विज्ञान घन, सर्वसार में सार।
वंदूँ श्री जिनदेव को, जिनप्रतिमा अविकार।

चाल–हे दीनबन्धु.....

जय रत्नमयी वृक्ष ये, अनादि अनंता।
जय पंचरत्न वर्ण, सिद्धकूट धरंता।।

1. प्रत्येक देवों के।

जय जय जिनेन्द्र देव के, जो भवन कहे हैं।।
जय जय जिनेन्द्र मूर्तियाँ, जो पाप दहे हैं।।1।।

जिनमंदिरों में घंटिका, औ किंकिणी बजे।
वीणा मृदंग बांसुरी, संगीत हैं सजे।।
मंगल कलश औ धूप घट, अनेक धरे हैं।।
जो देव देवियों के सदा, चित्त हरे हैं।।2।।

रत्नों की स्वर्ण मोतियों की, मालिकाएँ हैं।
कौशेय[1] वस्त्र सदृश रत्न, की ध्वजाएँ हैं।।
उनमें बने हैं सिंह, हस्ति हंस बैल जो।
मयूर, चक्र, गरुड़, चंद्र सूर्य कमल जो।।3।।

इन दश प्रकार चिन्ह से चिन्हित हैं ध्वजायें।
जो भक्त गणों को सदा ही पास बुलायें।।
ये रत्नमयी होय के भी वायु से हिलें।
अद्भुत असंख्य रत्न हैं इस रूप में मिलें।।4।।

प्रत्येक जैनगेह में रचना अनंत है।
प्रत्येक में ही इक सौ आठ जैनबिंब हैं।।
प्रत्येक में तोरण सु द्वार रत्न के बने।
जिनदेव मानस्तंभ वहाँ मान को हनें।।5।।

ये जैनभवन हैं सदा सन्मार्ग के दाता।
निज आश्रितों को सत्य में हैं मुक्ति प्रदाता।।
इन नाम के जपे से नशे भूत की बाधा।
व्यंतर पिशाच प्रेत क्रूर, ग्रहों की बाधा।।6।।

इनके करें जो दर्श वे भवसिंधु तरे हैं।
जो भक्ति से पूजन करें वे सौख्य भरे हैं।।
इस लोक में धन धान्य पुत्र पौत्र को पाते।
चक्रेश की सी संपदा पा मौज उड़ाते।।7।।

1. रेशमी।

जिनधर्म में अतिगाढ़ प्रेम धारते सदा।
परलोक के इन्द्रादि विभव पावते मुदा।।
पश्चात् यहाँ तीर्थ की पदवी को धरा के।
तीर्थंकरों का धर्मचक्र जग में चलाके।।8।।

आर्हन्त्य विभव पाय के भगवंत बनेंगे।
वे मुक्ति वल्लभा के भी तो कंत बनेंगे।।
इस विध से नाथ आपकी मैं कीर्ति है सुनी।
अतएव शरण आपकी ली सुन के तुम धुनी।।9।।

बस एक आश आज मेरी पूरिये प्रभो।
मोहादि कर्म वैरियों को चूरिये प्रभो।।
बस मैं स्वयं निज आत्मा को शुद्ध करूँगा।
सम्यक्त्व शुद्ध 'ज्ञानमती' सिद्धि वरूँगा।।10।।

–दोहा–

प्रभु तुम महिमा अगम है, तुम गुणरत्न अनंत।
इक गुण लव भी पाय मैं, तरूँ भवाब्धि अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थश्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्ष-स्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 19)

पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में, छह कुलगिरी पर जिनगृहा।
गजदंत चउ वक्षार सोलह, के जिनालय अघदहा।।
चौंतीस रजताचल जिनालय, सर्व की पूजा करूँ।
आह्वान कर मैं थापहूँ, मन में अतुल श्रद्धा धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलचतुःगजदन्तषोडशवक्षार-चतुस्त्रिंशत्रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलचतुःगजदन्तषोडशवक्षार-चतुस्त्रिंशत्रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलचतुःगजदन्तषोडशवक्षार-चतुस्त्रिंशत्रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (चाल शेर)

गंगा नदी सुनीर स्वर्ण भृंग में भरूँ।
प्रभुपाद में त्रय धार दे भव रोग को हरूँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ति मैं भव वन में ना फिरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंध चर्ण चर्चते।
भवताप दाह दूर हो प्रभु आप अर्चते।।हे.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान श्वेत शालि पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अखंड सौख्य को प्रभु अर्चते पाऊँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ति मैं भव वन में ना फिरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब पुष्प वर्ण वर्ण के लिये।
प्रभु चर्ण में चढ़ाय सर्व संपदा किये।।हे.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस व बालूसाही हलुआ चढ़ायके।
उदराग्नि को प्रशमित करूँ प्रभु को रिझायके।।हे.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे मैं आरती करूँ।
अज्ञान अंधकार नाश भारती भरूँ।।हे.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप खेय धूपघट में धूम्र उड़ाऊँ।
जो दुःख दे रहे हैं ऐसे कर्म जलाऊँ।।हे.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बदाम काजू अखरोट चढ़ाऊँ।
बस एक मोक्ष फल की ही आश लगाऊँ।।हे.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ लेय रजत पुष्प मिलाऊँ।
निज आत्मनिधि हेतु आप अर्घ्य चढ़ाऊँ।।हे.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।11।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

पश्चिम पुष्कर द्वीप, साठ जिनालय सोहते।
नमूँ-नमूँ धर प्रीति, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

छह कुलाचल अर्घ्य

–चौबोल छंद –

विद्युन्माली दक्षिण दिश में, 'हिमवन' नग कलधौत समान।
ग्यारह कूटों में अनुपम इक, सिद्धकूट जिनमंदिर जान।।
बीचों बीच पद्म सरवर में, कमल बीच श्रीदेवी थान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि दक्षिण दिश में, चांदी सदृश महाहिमवान।
बीच सरोवर महापद्म में, कमल मध्य ह्री देवी मान।।

आठ कूट में पूर्वदिशा पर, सिद्धकूट अविचल गुणखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकाचल पंचम दक्षिणदिश, निषध तप्त सुवरण छवि मान।
बीच तिगिंछ सरोवर मध्ये, कमल बीच धृति देवी जान।।
नवकूटों में पूर्वदिशा का, सिद्धकूट शिवमारग मान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरू उत्तर, नीलाचल वैडूर्य समान।
मध्य केशरी द्रह में पंकज, बीच कीर्ति देवी द्युतिमान।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर, मणि रत्नों से खचित बखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरनग के उत्तर में, रजतवर्ण रुक्मीगिरि जान।
मध्य सरोवर पुंडरीक में, कमल बीच बुद्धीसुरि मान।।
आठ कूट में पूर्व दिशागत, सिद्धकूट शिवपंथ महान ।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिरुक्मीपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल पंचम के उत्तर, शिखरी पर्वत स्वर्ण समान।
मध्य महा पुंडरीक सरोवर, जलज बीच लक्ष्मी सुरि मान।।
ग्यारह कूटों में पूरब गत, सिद्धकूट शाश्वत सुखखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिशिखरीपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ्य

–चौबोल छंद –

मेरू के ईशान कोण में, माल्यवंत गजदंत रहे।
छवि वैडूर्य मणीसम अनुपम, नवकूटों युत संत कहें।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृह शाश्वत सिद्ध कहा।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरणग्रहाँ।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमाल्यवद्गजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि के आग्नेय विदिश में, सौमनस्य गजदंत कहा।
रतनमयी यह पर्वत सुंदर, सात कूट से शोभ रहा।।
मेरु निकट श्री सिद्धकूट पर, जिनमंदिर छवि रतनमयी।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसौमनसगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल नैऋत्य विदिश में, विद्युत्प्रम गजदंत दिपे।
नवकूटों युत तप्त कनकछवि, दिनकर लज्जित संत छिपे।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनमंदिर शिवगमन मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिविद्युत्प्रभगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि के वायव्ये, गंधमादनाचल सोहे।
स्वर्णवर्णमय सात कूटयुत, सुरनर किन्नर मन मोहे।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृह अनुपम अचल मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिगंधमादनगजदंतस्थितसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार जिनालय अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, सुरगिरि पूर्व दिशा में।
सीता नदि के उत्तर तट पे, भद्रसाल ढिग तामे।।
'चित्रकूट' वक्षार अचल पर, जिनमंदिर सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिचित्रकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिन कूट वक्षार दूसरा, पुष्करार्ध में जानो।
उसके चार कूट में अनुपम, सिद्धकूट इक मानो।।
जिन चैत्यालय शाश्वत अविचल, पूजूँ कर्म विडारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिनलिनकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मकूट वक्षार अतुल है, पाप पंक मल धोवें।
जो जन इसके सिद्धकूट को, पूजें सब दुःख खोवें।।
जिनगृह की छवि अतिशय प्यारी, भविजन मन सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार अनूपम, सुर किन्नर मन भावे।
सुवरण छवि से सूर्य तेजहर, जिनमंदिर मन भावे।।
विद्याधर विद्याधरियाँ भी, गुण गावें चितहारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिएकशैलवक्षारसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य समीपे।
नग 'त्रिकूट' वक्षार सुवर्णिम, चार कूट से दीपे।।
सिद्धकूट जिनमंदिर अद्भुत, मुनिमन सम अविकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धित्रिकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि ''वैश्रवण'' कहा वक्षारा, शाश्वत मुकुट मणी है।
सिद्धकूट का श्रीजिनमंदिर, चिंतारत्नमणी है।।
वंदन करने वाले भवि के, भव भय संकटहारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अंजन नग वक्षार अकृत्रिम, अमर गणों से सोहे।
इस ऊपर परमात्मनिरंजन, का जिनमंदिर सोहे।।
वन वेदी वापी तोरण से, सुरगृह से चित हारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिअंजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मांजन वक्षार आठवाँ, अतुल निधी को धारे।
इस पे सिद्धकूट को जो जन, पूजें मोक्ष सिधारें।।
मृत्युंजयि जिनवर का मंदिर, अखिल अमल गुणधारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के पश्चिम दिश में है, अपर विदेह कहाता।
सीतोदा सरिता बहने से, उभय भाग बँट जाता।।

सरिता दक्षिण भद्रसाल के, ढिग वक्षार गिरी है।
श्रद्धावान उपरि जिनमंदिर, पूजूँ पाप हरी है।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिश्रद्धावानवक्षारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''विजटावान्'' अचल वक्षारा, चार कूट युत सोहै।
कनककांति से सिद्धकूट से, अतुल अपूरब सोहै।।
जिनमंदिर में मृत्युंजयि की, प्रतिमा सौख्यकरी है।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, भव भय ताप हरी है।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिविजटावानवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''आशीविष'' वक्षार स्वर्णसम, विविध गृहों को धारे।
सिद्धकूट पे श्रीजिनमंदिर, कर्म कालिमा टारे।।
पद्मासन जिनप्रतिमा सुंदर, सिंहासन पे राजे।
जो जन पूजन वंदन करते, कर्म अरीदल भाजे।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिआशीविषवक्षारपर्वतजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल ''सुखावह'' बहु सुखदाता, चार कूट से सोहे।
जो जन सिद्धकूट को वंदे, त्रिभुवन के पति होहैं।।
साधूजन आकाशमार्ग से, जिनवंदन को आते।
जो जन पूजें श्रद्धा धर मन, वे अनुपम सुख पाते।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुखावहवक्षारगिरिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट में, भूतारण्य निकट में।
''चंद्रमाल'' वक्षार मनोहर, देव रमें उस तट में।।
चार कूट में सिद्धकूट इक, जिनमंदिर अभिरामा।
मैं भी अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, पाऊँ शिव विश्रामा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिचंद्रमालवक्षारगिरिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सूर्यमाल'' वक्षार अनोखा, सूरज तेज लजावे।
सिद्धकूट में जिनवर मंदिर, मुनिमन कुमुद खिलावें।।
भवविजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नितप्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसूर्यमालवक्षारगिरिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''नागमाल'' वक्षार भूमिधर, नवनिधि वैभव शाली।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, अनुपमछवि मणिमाली।।
भवविजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नितप्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिनागमालवक्षारगिरिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''देवमाल'' वक्षार सोलवाँ, स्वर्गपुरी सम शोभा।
चारकूट में एक कूटपर, जिनगृह अतुल अनोखा।।
भवविजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नितप्रति ध्यान धरें जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिदेवमालवक्षारगिरिजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सीतानदि उत्तर तरफ, भद्रसाल वन पास।
कच्छादेश रजतगिरि, जिनगृह जजूँ हुलास।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकच्छामध्यस्थितविजयार्धगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुकच्छा'' मध्य में, रूपाचल मनहार।
सिद्धकूट में जिनभवन, जजूँ सदा सुखकार।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''महाकच्छा'' मधी, रूपाचल अभिराम।
सिद्धकूट का जिनभवन, पूजूँ करुँ प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमहाकच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''कच्छकावति'' विषें, विजयारध सुखकार।
भवविजयी के जिनभवन, पूजूँ भव दुःखटार।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिकच्छकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''आवर्ता'' सुविदेह में, रूपाचल रजताभ।
ताके श्री जिनगेह को, पूजूँ करो कृतार्थ।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिआवर्तादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''लांगलावर्त'' में, रजताचल सुखकार।
सिद्धकूट पर जिनभवन, पूजूँ सुयश उचार।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिलांगलावर्तादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''पुष्कला'' में अचल, विजयारध मनहार।
ताके श्रीजिनगेह को, पूजूँ शिव सुखकार।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपुष्कलादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''पुष्कलावती'' मधि, रूपाचल सुखधाम।
जिनगृह के जिनबिंब को, पूजूँ नित शिवधाम।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता के दक्षिण तरफ, देवारण्य समीप।
''वत्सा'' के विजयार्ध का, जिनगृह जजूँ पुनीत।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुवत्सा'' मध्य में, विजयारध गुणधाम।
उसपे जिनमंदिर जजूँ, परमानंद प्रदाम्।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुवत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''महावत्सा'' मधी, रूपाचल मनहार।
जिनमंदिर के बिंब को, पूजूँ शिव करतार।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमहावत्सादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वत्सकावति'' देश में, रूपाचल सुखधाम।
तापे जिनगृह जिनछवि, पूजूँ भुवन ललाम।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिवत्सकावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''रम्या'' देश विदेह में, रजताचल गुणमाल।
जिनगृह के जिनबिंब को, पूजूँ जग प्रतिपाल।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुरम्या'' मध्य में, रूपाचल अभिराम।
जिन चैत्यालय को जजूँ, पाऊँ मोक्ष निकाम।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुरम्यादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया सुविदेह में रूप्यगिरी रूपाभ।
जिनगृह की जिनमूर्ति को, जजूँ नमाऊँ माथ।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिरमणीयादेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''मंगलावति'' देश में, खग पर्वत सुखपाल।
जिनमंदिर में मूर्ति की, पूजा करूँ त्रिकाल।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमंगलावतीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

भद्रसाल वन पास, सीतोदा नदि दायें।
''पद्मादेश'' विदेह, मधि रूपाद्रि कहाये।।
तापे श्रीजिनगेह, सब भवचक्र विनाशे।
जो पूजें धर नेह, केवलज्ञान प्रकाशें।43।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुपद्मा'' माहिं, रजताचल मन मोहे।
तापे श्री जिनधाम, सुर किन्नर मन मोहे।।
ताके श्री जिनबिम्ब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुपद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महपद्मा'' सुविदेह, तामे रजतगिरी है।
उसपे श्री जिनवेश्म, अद्भुत सौख्यसिरी है।।ताके.।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमहापद्मादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''पद्मकावति'' मधि में रूप्यगिरी है।
त्रयकटनी युत रम्य, जिनगृह अतुलश्री है।।ताके.।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिपद्मकावतिदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शंखा'' देश विदेह, शंख ध्वनी जहं गूँजे।
बीच रजतगिरि एक, जिनमंदिर सुर पूजें।।ताके.।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिशंखादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''नलिनादेश'' अपूर्व, शाश्वत सिद्ध कहा है।
बीच रजतगिरि शीश, जिनगृह नित्य कहा है।।ताके.।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिनलिनादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''कुमुदा'' देश अनूप, शिव का मार्ग प्रकासे।
बीच रजतगिरि श्रेष्ठ, जिनगृह अनुपम भासे।।ताके.।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिकुमुदादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सरिता'' देश विदेह, छह खंडों युत सोहे।
बीच कहा-विजयार्ध, जिनगृह से मन मोहे।।ताके.।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसरितादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदि के उत्तर माहिं, भूतारण्य समीपे।
''वप्रादेश'' विदेह, बीच रजतगिरि दीपे।।ताके.।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश ''सुवप्रा'' मध्य, रूपाचल अविकारी।
नव कूटों में एक, जिनमंदिर सुखकारी।।ताके.।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुवप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''महावप्रादेश'', अगणित विभव धरे है।
बीच रजतगिरि श्वेत, जिनवर सद्म धरे है।।ताके.।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमहावप्रादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''वप्रकावतिदेश'', बीच रजतगिरि धारे।
नवकूटों में एक, जिनगृह भवदधि तारे।।ताके.।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिवप्रकावतिदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधादेश' विदेह, रौप्य अचल से सोहै।
त्रयकटनीयुत रम्य, ऊपर जिनगृह सोहै।।
ताके श्री जिनबिम्ब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' भव्य, खगपर्वत मन मोहै।
इंद्रादिक से वंद्य, जिनमंदिर इक सोहै।।ताके.।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिसुगंधादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' बीच, रजतगिरी रजताभा।
नवकूटों में एक, जिनमंदिर मणि आभा।।ताके.।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिगंधिलादेशमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश, रूप्यगिरी मधि धारे।
रत्नमयी इक कूट, जिनमंदिर को धारे।।ताके.।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिगंधमालिनीदेशमध्यविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, सुरगिरि दक्षिण
ज । । ॱ । । ` ।
भरतक्षेत्र के मध्य रूप्यगिरि, नवकूटों युत मानों।।
सिद्धकूट के जिनमंदिर में, रतनमयी प्रतिमा हैं।
जो जन अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, लहें अतुल महिमा हैं।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली के उत्तर में, ऐरावत शुभ जानो।
मध्य रजतगिरि पे इकसौ दश, खग नगरी सरधानो।।सिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिऐरावतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

पश्चिम सु पुष्कर द्वीप में, कुलगिरि व गजदंताद्रि हैं।
वक्षार रूप्याचल इन्हों पर, साठ जिनवर गेह हैं।।
ये मोह अहि के विष उतारन, हेतु गारुत्मणि कहें।
इनको जजूँ ये भक्त लोहा, हेतु पारसमणि कहें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन धाम में चौंसठ शतक, अस्सी जिनेश्वर मूर्तियाँ।
इनको जजें वे बन सकें, चैतन्य धातू मूर्तियाँ।।
मृत्युंजयी इन मूर्तियों को, कोटि कोटी वंदना।
मैं जजूँ नित प्रति भाव से, हो जाय यम की वंचना।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूट-जिनालयमध्यविराजमानषट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्कर द्वीप में, इकमेरु विद्युन्मालि है।
पुष्करतरू शाल्मलितरू, कुलपर्वतादि विशाल हैं।।
इन पर अकृत्रिम अठत्तर, जिनधाम पुण्य निधान हैं।
इनको जजूँ वर भक्ति से, ये मोक्ष सुख की खान हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन मेरु तरुवर पर्वतों पर, जैन मंदिर सोहते।
प्रत्येक में जिनबिम्ब इक सौ-आठ मुनिमन मोहते।।

चौरासि सौ चौबिस जिनेश्वर को यहाँ मैं नित जजूँ।
निज सौख्य परमानंद हेतू, आपको अतिशय भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयमध्य-विराजमानअष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

पश्चिम पुष्कर द्वीप के, जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शत-शत करूँ प्रणाम।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय कुलगिरि के जिनमंदिर, जय गजदंताचल के मंदिर।
जय वक्षाराचल के मंदिर, जय रूप्याचल के जिनमंदिर।।
जय जय जय जिनवर प्रतिमाएँ, अज्ञान अंधेरा हरती हैं।
वे भक्तों के मन मंदिर में, सज्ज्ञान ज्योति को भरती हैं।।2।।

हिमवन पर्वत वर चार सहस, दो सौ दस योजन विस्तृत है।
महाहिमवन सोलह सहस आठ सौ, ब्यालिस योजन विस्तृत है।।
नग निषध सु सड़सठ सहस तीन सौ अड़सठ योजन विस्तृत है।
नग नील निषध सम फिर आधे-आधे होते दोनों नग हैं।।3।।

ये पर्वत सौ दो सौ चउसौ, योजन तक ऊँचे माने हैं।
इन पर पद्मादि सरोवर में, भूकायिक कमल बखाने हैं।।
उन कमलों में श्री ह्री धृति अरु, कीर्ती बुद्धी लक्ष्मी रहतीं।
जिनमाता की सेवा करने, आतीं अति गूढ़ प्रश्न करतीं।।4।।

गजदंत वहाँ पर मेरू की, विदिशा में नग को छूते हैं।
पूर्वापर उभय विदेहों में, वक्षाराचल अति लंबे हैं।।

इनसे व विभंगा नदियों से, बत्तिस विदेह हो जाते हैं।
वहाँ पर तीर्थंकर प्रभु विहरें, नित धर्मामृत बरसाते हैं।।5।।

इन बत्तीसों हि विदेहों में, भरतैरावत में रजताचल।
विद्याधर की शुभनगरी से, त्रय कटनी से सोहें अविचल।।
ये क्षेत्र बराबर लंबे हैं, योजन पचीस ही ऊँचे हैं।
योजन पचास चौड़े सुंदर, चाँदी के बने अनोखे हैं।।6।।

इन पर्वत के जिनमंदिर को, हम भी परोक्ष वंदन करते।
इनकी जिनवर प्रतिमाओं का, वंदन कर दुख खंडन करते।।
निज अल्प ''ज्ञानमति'' बुद्धी से, जिनवर का गुण कीर्तन करते।
बस पूर्ण ज्ञानमति होने तक, प्रभु का पूजन अर्चन करते।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 20)

मानुषोत्तर जिनमंदिर पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

वरद्वीप सोलह लाख योजन, नाम पुष्कर जानिये।
इस मध्य चूड़ी के सदृश, नग मानुषोत्तर मानिये।।
इस पर चतुर्दिश चार अनुपम, शाश्वते जिनगेह हैं।
उनके जिनेश्वर बिंब पूजूँ, धार मन अति नेह हैं।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक (चाल-नंदीश्वर पूजा)

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
पर बुझी न मन की प्यास, आखिर ऊब गया।।
इस हेतू से जल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अग्नि की दाह, मुझको दहन करे।
हिमकण चंदन बर्फादि, नहिं भव ताप हरे।।
इस हेतू चंदन लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य विभव को पाय, नहिं व्यय को चाहूँ।
पर अब तक इनकी नाथ, रक्षा नहिं पाऊँ।।
इसलिये धवल ले शालि, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन नयन घ्राणहर पुष्प, सुरभी खूब लिया।
पर भगवन्! तुम गुण गंध, अब तक नाहिं लिया।।
इसलिये विविध सुम लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में बहु पकवान, खाके तृप्ति नहीं।
तुमने प्रभु क्षुध की व्याधि, नाशी तृप्ति लही।।
इसलिये मधुर चरु लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं चाहूँ दीपक सूर्य, मन का तपन हरे।
पर झूठ हुई सब आश, समकित पाय खरे।।
निज द्युति हित दीपक लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख दूर करन हित नाथ! बहुते यत्न करे।
पर दुःख हरन में अन्य, कोई नाहिं अरे।।
इस हेतू धूप जलाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव के सुख फल हेतु, बहुते देव यजे।
पर अब तक कोई नाहिं, शिवफल देय सके।।
इसलिये सरस फल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुमूल्य अतुल फल हेतु, सब जग घूम चुका।
पर मिली न अब तक तृप्ति, बहु पद चूम चुका।।
शिव फलहित अर्घ्य चढ़ाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव-भव तपन हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

स्वच्छ बावड़ी नीर, धार देय जिनपद कमल।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती फूल, सुरभित करते दश दिशा।
मार मल्लहर देव, तुम पद अर्पूं मैं सदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

मनुजोत्तर नग चार दिश, जिन चैत्यालय सार।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, करो सकल सुखसार।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद –

नग मानुषोत्तर से परे नहिं, मनुज जा सकते कभी।
इस हेतु सार्थक नाम पर्वत, शास्त्र हैं कहते सभी।।

इस अद्रि पर पूरब जिनालय, मूर्तियाँ जिनराज की।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ्य ले, पदवी मिले जिनराज की।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर अद्रि पर दक्षिण दिशी, जिनधाम शाश्वत सोहता।
आकाशऋद्धीधर मुनीश्वर, विहरते मन मोहता।।
जिनमूर्तियों की वंदना से, शांति हो आत्यंतिकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ्य ले, पदवी मिले जिनराज की।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत नरोत्तर पर अपरदिश, रत्नमय जिनगेह है।
संसार सागर पार हेतू, मैं जजूँ धर नेह है।।
षट्क्रिया आवश्यक प्रपूरण, हेतु पूजा आपकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ्य ले, पदवी मिले जिनराज की।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर अद्रि पर उत्तर दिशी, जिनधाम स्वर्णिम मन हरे।
इसमें जिनेश्वर मूर्तियाँ, नर नारियाँ वंदन करें।।
वर सप्तपरमस्थान देती, है सुभक्ती आपकी।
पूजूँ चढ़ाकर अर्घ्य ले, पदवी मिले जिनराज की।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

इस मानुषोत्तर के जिनालय, चार शाश्वत मणिमयी।
चारणऋषी वंदन करें, जिनध्याय पाते निजमही।।
विद्याधरों की टोलियाँ, आकर प्रभू वंदन करें।
सौ इंद्र पूजित मंदिरों की, हम सदा अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में, जिनमूर्तियाँ वर रत्न की।
ये चार सौ बत्तीस हैं, पद्मासनों से राजतीं।।
इन वीतरागी नग्न जिनवर, मूर्तियों की वंदना।
जो भव्य भक्ती से करें, वे करें यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयमध्यविराजमान-चतुःशतद्वात्रिंशत्जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **समयसार शुद्धात्मा, चिच्चैतन्य प्रधान।**
जिनप्रतिमा अमलात्मा, नमूँ-नमूँ गुणखान।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय मनुजोत्तर नग जग में, जय जय जिनगृह की अति महिमा।
जय जय जय जिनवर की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर गुण गरिमा।।
यह नग सत्रह सौ इक्किस ही, योजन उत्तुंग कहा श्रुत में।
इक हजार बाइस योजन ही, नीचे विस्तृत घटता क्रम में।।2।।
यह मध्य भाग में सात शतक, तेईस मात्र योजन जानो।
ऊपर में चार शतक चौबिस, योजन स्वर्णिम है सरधानो।।
भीतर टंकोत्कीर्ण सदृश, बाहिर तरफी घटता दीखे।
इस पर हैं बाइस कूट कहे, चहुँदिश जिनगृह ऊँचे दीखे।।3।।
इस जंबुद्वीप में मेरु सुदर्शन, एक लाख चालिस योजन।
ऊँचा है उस पर पांडुक वन तक, जाते नर खग अरु ऋषिगण।।
यह मनुजोत्तर नग कुछ ऊँचा, इससे आगे नर नहिं जाते।
यह मात्र नियोग समझ लीजे, जो इसको लाँघ नहीं पाते।।4।।
इस पर्वत तक पैंतालिस लाख, सुयोजन मानव लोक कहा।
इस तक ही मनुज जनमते हैं, आगे नहिं मानव जन्म कहा।।

नग मनुजोत्तर के जिनमंदिर, श्री सिद्धकूट पर माने हैं।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उनके सब पातक हाने हैं।।5।।
रत्नों से बनी ध्वजायें हैं, जो पवन झकोरे हिलती हैं।
मणि कनक कुसुम की मालायें, वे चारों तरफ लटकती हैं।।
मंगलघट पूर्ण कलश शोभें, धूपों के घट महकाते हैं।
वसु मंगलद्रव्य प्रत्येक एक सौ, आठ-आठ चमकाते हैं।।6।।
वसु प्रातिहार्य शोभें अनुपम, भामंडल रत्नमयी कोरे।
त्रय छत्र फिरें चौंसठ चमरों को, यक्ष युगल मिलकर ढोरें।।
रत्नों के सिंहासन ऊपर, पद्मासन जिनप्रतिमा राजें।
जिनके दर्शन वंदन करते, भव भव के पाप तुरत भाजें।।7।।
तुम पूजन करते नाथ! अभी, मेरे मन एक हुई वांछा।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो बोधी लाभ यही यांचा।।
नित सुगति गमन होवे मेरा, संन्यास विधी से मरना हो।
जिनगुण संपति मिल जाय मुझे, फिर कभी न यांचा करना हो।।8।।

–दोहा–

अकृत्रिम जिनरूप को, प्रणमूँ बारंबार।
ज्ञानमती निजरूप को, तुरतहिं लेउं निहार।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 21)

नंदीश्वरद्वीप जिनमंदिर पूजा

स्थापना (गीता छंद)

वर द्वीप नंदीश्वर सुअष्टम, तीन जग में मान्य है।
बावन जिनालय देवगण से, वंद्य अतिशयवान हैं।।
प्रत्येक दिश तेरह सु तेरह, जिनगृहों की वंदना।
थापूँ यहाँ जिनबिंब को, नितप्रति करूँ जिन अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक (चामर छंद) –

स्वर्णभृंग में सुशीत गंगनीर लाइये।
शाश्वते जिनेन्द्र बिंब पाद में चढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्रदेव आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग ताप ज्वर विनाश हेतु गंध है।
नाथ पाद पूजते मिले निजात्म गंध है।।आठवें.।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों के हारवत् सफेद धौत शालि हैं।
आप को चढ़ावते निजात्म सौख्यमालि है।।आठवें.।।3।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मालती गुलाब कुंद मोगरा चुनाइये।
आप पाद पूजते सुकीर्ति को बढ़ाइये।।आठवें.।।4।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जकादि पूरियाँ चढ़ाइये।
भूख व्याधि जिष्णु को अनंतशक्ति पाइये।।आठवें.।।5।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नादि काल से लगे अनंत मोहध्वांत को।
दीप से जिनेश पूज नाशिये कुध्वांत को।।आठवें.।।6।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप लाल चंदनादि मिश्र अग्नि में जले।
आतमा विशुद्ध होत कर्म भस्म हो चलें।।आठवें.।।7।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षुदंड सेव दाडिमादि थाल में भरें।
मोक्ष संपदा मिले जिनेश अर्चना करें।।आठवें.।।8।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य ले अनर्घ्य मूर्तियों को पूजिये।
अष्टकर्म नाश के त्रिलोकनाथ हूजिये।।आठवें.।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

अमल बावड़ी नीर, जिनपद में धारा करूँ।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण समर्प्य, सर्व सौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

बावन जिनगृह चार दिश, पूजूँ चित्त लगाय।
श्रावक की त्रेपन क्रिया, पूर्ण करो जिनराय।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–रोला छंद –

नंदीश्वर वर द्वीप, चारों दिश मधि जानो।
अंजनगिरि गुण नाम, अतिशय रम्य बखानो।।
ईश निरंजन सिद्ध, प्रभु का निलय कहा है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मन संताप दहा है।।1।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चार, दिश में चउ द्रह जानो।
नीर भरे कमलादि, कुमुदों से पहचानों।।
पूरब नंदा वापि, दक्षिण नग जिनगेहा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मेटूँ मन संदेहा।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती द्रह माहिं, दधिमुख दधिसम सोहै।
तापे जिनवर धाम, सुर किन्नर मन मोहै।।
तिन में श्रीजिनबिंब, सुवरण रतनमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्ष मही है।।3।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दवतीवापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदोत्तरा सुवापि, मधि दधिमुख नग भारी।
पश्चिम दिश में जान, लख योजन द्रह भारी।।
तापे श्रीजिनधाम, शाश्वत सिद्ध सही है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्षमही है।।4।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापि, उत्तर दिश में जानो।
तामधि दधिमुख आदि, उसपे जिनगृह मानो।।
त्रिभुवनपति जिनबिंब, अनुपम रत्नमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ मोक्षमही है।।5।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दिघोषावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छन्द –

नंदा द्रह ईशान कोण में, रतिकर नग स्वर्णाभा।
ताके ऊपर सिद्धकूट हैं, जिनमंदिर रत्नाभा।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदा द्रह आग्नेय दिशा में, रतिकर दुतिय कहा है।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, अतिशय रम्य कहा है।।रति.।।7।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती द्रह अग्निकोण में, रतिकर तृतिय सुहाता।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, इंद्रादिक मन भाता।।रति.।।8।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दवतीवापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती वापी नैऋत में, रतिकर नग अतिसोहै।
सिद्धकूट जिनआलय तापे, सुर वनिता मन मोहै।।
रतिपतिविजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दवतीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिमवापी नंदोत्तर है, नैऋतकोण सुहावे।
रतिकरनग पर सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भावे।।रति.।।10।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी नंदोत्तरा अपरदिश, ता वायव्यदिशा में।
रतिकर स्वर्ण अचल के ऊपर, सिद्धकूट अभिरामें।।रति.।।11।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दोत्तरावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी विदिशा, वायु कोण में जानो।
रतिकर पर्वत सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भानो।।रति.।।12।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दिघोषावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह नंदीघोषा ईशाने, रतिकर पीत सुहाता।
तापे सिद्धकूट चैत्यालय, पूजत मन हरषाता।।रति.।।13।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दिघोषावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–कुसुमलता छंद –

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, मधि 'अंजनगिरि' तुंग महान।
इंद्रनीलमणि सम छवि ऊपर, नित्य निरंजन का गृह मान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।14।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के पूरब 'अरजा', वापी सजल कमल की खान।
ताके मधि दधिमुख पर्वत पर, जिनमंदिर अविचल सुखदान।।जल.।।15।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग दक्षिणदिश वापी, विरजा कही अमल जल खान।
मध्य अचल दधिमुख के ऊपर, जिन चैत्यालय पावन जान।।जल.।।16।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग पश्चिम दिश वापी, नाम अशोका शुच उपहार।
बीच अचल दधिमुख के ऊपर, शोक रहित जिनगृहसुखकार।।जल.।।17।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश में अंजनगिरि के, वापि वीतशोका अमलान।
दधिमुख पर्वत सिद्धकूट पर, वीतशोक जिनमंदिर जान।।जल.।।18।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजाद्रह ईशान कोण पर, रतिकर पर्वत सुंदर जान।
सिद्धकूट जिन चैत्यालय में, रतनमयी जिनबिम्ब महान।।जल.।।19।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजा वापी अग्निकोण में, रतिकर दुतिय स्वर्ण द्युतिमान।
सिद्धकूट जिनमंदिर सुन्दर, जिनप्रतिमा सब सौख्य निधान।।जल.।।20।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजावापी आग्नेय पर, रतिकर नग अद्भुत मणिमान।
सिद्धकूट जिननिलय अकृत्रिम, मणिमय जिन आकृति शिवदान।।जल.।।21।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकाआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजावापी नैऋत दिश में, रतिकर पर्वत पीत सुहाय।
सिद्धकूट जिनभवन अकृत्रिम, जिनवर छवि वरणी नहिं जाय।।जल.।।22।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदि शिविरजावापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम अशोकाद्रह नैऋत में, रतिकर पर्वत अतुल निधीश।
सिद्धकूट जिनमहल अनूपम, जिनवर प्रतिमा त्रिभुवन ईश।।जल.।।23।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि अशोका वायुविदिश में, रतिकर नग शोभे स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनवेश्म अमल है, श्रीजिनबिंब अतुल रत्नाभ।।जल.।।24।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सजल वीतशोका के, वायु कोण रतिकर रतिनाथ।
रतिपतिविजयी जिनमंदिर में, रुचिकर जिनछवि त्रिभुवननाथ।।जल.।।25।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकावायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतशोकद्रह में ईशान पर, रतिकर तप्तस्वर्ण सम कांत।
सिद्धकूट जिनआलय दुखहर, जिनवरबिंब सौम्यछवि शांत।।जल.।।26।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकाईशानकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अडिल्ल छंद –

द्वीप आठवें पश्चिम दिश अंजनगिरी।
तापे जिनगृह अतुल सौख्य संपति भरी।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरूँ भक्ति की नाव से।।27।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी मध्य, दधीमुख जानिये।
सिद्धकूट पर शाश्वत, जिनगृह मानिये।।स्वयं.।।28।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन दक्षिण वैजयंति, वापी कही।
बीच अचल दधिमुख पे, जिनगृह सुखमही।।स्वयं.।।29।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तीवापिकामध्यदधिमुखपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन पश्चिम वापि, जयंती सोहती।
मधि दधिमुख पे जिनगृह, से मन मोहती।।स्वयं.।।30।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि उत्तर, वापी अपराजिता।
मधि दधिमुख पर्वत पे, जिनगृह शासता।।स्वयं.।।31।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापीमध्यदधिमुखपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी रुद्रकोण पे रतिकरा।
तापे सिद्धकूट जिनगृह, भवि मनहरा।।स्वयं.।।32।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयाद्रह आग्नेय कोण रतिकरगिरी।
सिद्धकूट जिनमंदिर से, अनुपम सिरी।।स्वयं.।।33।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंतिवापी के, अग्नीकोण में।
रतिकर गिरि पर श्रीजिनवर के वेश्म में।।स्वयं.।।34।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंतिद्रह के नैऋत में जानिये।
रतिकर नग में अकृत्रिम गृह मानिये।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरूँ भक्ति की नाव से।।35।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि जयंती नैऋत में रतिकर कहा।
सिद्धकूट जिनमंदिर निज सुखकर कहा।।स्वयं.।।36।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि जयंती वायु, विदिश रतिकर महा।
सिद्धकूट अकृत्रिम जिनगृह दुःख दहा।।स्वयं.।।37।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजिता सुवापी वायवकोण में।
रतिकर पर्वत पे जिनगृह अतिरम्य में।।स्वयं.।।38।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह अपराजित की विदिशा ईशान है।
तापे रतिकर चामीकर छवि शान है।।स्वयं.।।39।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

उत्तरदिश इस द्वीप में, अंजनगिरि नीलाभ।
सिद्धकूट जिनसद्म को, पूज मिले शिवलाभ।।40।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग पूरबदिशी, रम्यावापी स्वच्छ।
मधि दधिमुख गिरि जिनभवन, पूजत कर्म विपक्ष।।41।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के दक्षिण दिशी, रमणीया द्रह जान।
दधिमुख नग पर जिननिलय, पूजत ही निजथान।।42।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के पश्चिम दिशी, द्रह सुप्रभा अनूप।
दधिमुख ऊपर जिनभवन, पूजत हो शिवभूप।।43।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग उत्तर दिशी, सर्वतोभद्रा वापि।
मधि दधिमुख पे जिनसदन, जजत न जन्म कदापि।।44।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्याद्रह ईशान में, रतिकरनग स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनगेह को, पूजत हो निष्पाप।।45।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीईशानकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्याद्रह आग्नेयदिशि, रतिकर गिरि अमलान।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिलें नवों निधि आन।।46।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया द्रह अग्नि दिशि, रतिकर नग सिरताज।
सिद्धकूट पर जैनगृह, जजत मोक्ष साम्राज।।47।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया द्रह नैऋते, रतिकरनग सुखदान।
शाश्वत जिनमंदिर जजूँ, मिले स्वपर विज्ञान।।48।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिसुप्रभा नैऋते, रतिकर पर्वत सिद्ध।
मणिमय जिनमंदिर जजूँ, पाऊँ ऋद्धि समृद्ध।।49।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सुप्रभा सुवायु दिशि, रतिकरनग रतिकार।
तापे जिनगृह नित जजूँ, मिले स्वपद अविकार।।50।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर वायव कोण।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिले भवोदधि कोण।।51।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर दिशि ईशान।
तापे जिनगृह पूजते, हो अनंत श्रीमान्।।52।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य – **नंदीश्वर के चार दिश, बावन जिनगृह सिद्ध।**
नमूँ-नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्संबंधिद्वापंचाशत्जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन सौ सोलह कहीं, जिनप्रतिमा अभिराम।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ायके, शत-शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशत्जिनालयमध्यविराजमानपंचसहस्रषट्शत-षोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

चाल–शेर– जय आठवाँ जो द्वीप नाम नंदिश्वरा है।
जय बावनों जिनालयों से पुण्यधरा है।।
इक सौ तिरेसठे करोड़ लाख चुरासी।
विस्तार इतने योजनों से द्वीप विभासी।।2।।

चारों दिशा के बीच में अंजनगिरी कहे।
जो इंद्रनील मणिमयी रत्नों से बन रहे।।
चौरासी सहस योजनों विस्तृत व तुंग हैं।
जो सब जगह समान गोल अधिक रम्य हैं।।3।।

इस गिरि के चार दिश में चार चार वापियाँ।
जो एक लाख योजन जलपूर्ण वापियाँ।।
पूर्वादि दिशा क्रम से नंदा नंदवती हैं।
नंदोत्तरा व नंदिघोषा नाम प्रभृति हैं।।4।।

प्रत्येक वापियों में कमल फूल रहे हैं।
प्रत्येक के चउ दिश में भी उद्यान घने हैं।।
अशोक सप्तपत्र चंप आम्र वन कहे।
पूर्वादि दिशा क्रम से अधिक रम्य दिख रहे।।5।।

दधिमुख अचल इन वापियों के बीच में बने।
योजन हजार दश उतुंग विस्तृते इतने।।
प्रत्येक वापियों के दोनों बाह्य कोण में।
रतिकर गिरी हैं शोभते जो आठ-आठ हैं।।6।।

योजन हजार एक चौड़े तुंग भी इतने ।
सब स्वर्ण वर्ण के कहे रतिकर गिरी जितने।।
दधिमुख दधी समान श्वेत वर्ण धरे हैं।
ये बावनों ही अद्रि सिद्धकूट धरे हैं।।7।।

इनमें जिनेंद्र भवन आदि अंत शून्य हैं।
जो सर्व रत्न से बने जिनबिम्ब पूर्ण हैं।।
उन मंदिरों में देव इंद्रवृंद जा सकें।
वे नित्य ही जिनेन्द्र की पूजादि कर सकें।।8।।

आकाशगामी साधु मनुज खग न जा सकें।
वे सर्वदा परोक्ष में ही भक्ति कर सकें।
मैं भी यहाँ परोक्ष में ही अर्चना करूँ।
जिनमूर्तियों की बार-बार वंदना करूँ।।9।।

प्रभु आपके प्रसाद से भवसिंधु को तिरूँ।
मोहारि जीत शीघ्र ही निजसंपदा वरूँ।।
हे नाथ! बार मेरी अब न देर कीजिये।
अज्ञानमती विज्ञ में अब फेर दीजिये।।10।।

–दोहा–

नंदीश्वर के चार दिश, जिनमंदिर जिनदेव।
उनको पूजूँ भाव से, ''ज्ञानमती'' हित एव।।11।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिग्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 22)

कुण्डलगिरि जिनमंदिर पूजा

स्थापना (अडिल्ल छंद)

द्वीप ग्यारवाँ कुंडल नाम प्रमानिये।
ताके मधि में कुंडल पर्वत जानिये।।
वलयाकृति गिरि पे चउ दिश जिनधाम हैं।
इनके जिनवर बिंब जजूँ इह ठाम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक चाल (मराठी पूजा)

सिंधु स्रोतस्विनी का जल है। जो स्वातम का हरता मल है।
पूजते ही मिले मोक्ष फल है। जिनेद्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय महिमा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर केशर मेला। सौगंधित सुमिश्रित एला।
तापसंताप हरत अकेला। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हार मोती सदृश तंदुल हैं। पुंज धारे हृदय निर्मल है।
लाभ होता सुगुण उज्ज्वल है। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही॥
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय महिमा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार सुमनस माला। काम मल्ल निमूल कर डाला।
आत्म संपद् गुणों की माला। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती भरके। पूजते भूख रोगादि हरके।
आत्म पीयूष अनुभव करके। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।5।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेम दीपक शिखा उज्ज्वल है। आरती ये हरे मोह मल्ल है।
होय आत्मा अपूर्व विमल है। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।6।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुरभि दशगंधी। धूप फैले दशों दिश गंधी।
होय कर्म अरी शत खंडी। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर दाडिम फल हैं। जो फल दें उत्तम सुफल हैं।
तीन रत्नों की संपत्ति फल हैं। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।8।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंधादि द्रव्य मिलाके। पूर्ण सौख्यादि होवे चढ़ाके।
अष्ट कर्मारि बंधन हटा के। जिनेंद्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।आवो.।।9।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

शाश्वत श्री जिनबिंब, जलधारा से पूजते।
मिटे सकल दुखद्वंद, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते सर्वदिक्।
मिले आत्मसुखपूर्ण, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

स्वयंसिद्ध जिनबिंब, सर्वसिद्धि में हैं निमित।
नमूँ-नमूँ हर द्वंद, कुसुमांजलि कर भक्ति से।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

कुण्डलगिरि पर पूर्वदिशा में, पाँच कूट मनहारी।
अभ्यंतर के सिद्धकूट पर, जिनमंदिर सुखकारी।।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुँग पचहत्तर सहस सुयोजन, कुंडलनग वलयाकृति।
दक्षिण दिश में पाँचकूट हैं, अभ्यंतर जिनगृह नित।।

जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम कुंडल भूधर पर, पश्चिम दिश जिनगेहा।
पाँचकूट में अभ्यंतर पर, सिद्धकूट जिनगेहा।।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमावंत अचल कुंडल पर, उत्तरदिश अभिरामा।
स्वयंसिद्ध जिनधाम अनूपम, जजत मिले निजधामा।।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

कुण्डलगिरि के जिनभवन, वांछित फल दातार।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, मिले भवोदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलगिरि जिनगेह में, जिनप्रतिमाएँ सिद्ध।
चार शतक बत्तीस हैं, जजत कार्य सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्जिनालयमध्यविराजमानचतुःशतद्वात्रिंशत् जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, वांछित फल दातार।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले सौख्य भंडार।।1।।

–नरेन्द्र छंद–

कुंडलद्वीप कहा ग्यारहवाँ, कुंडलनग मधि राखे।
एक खरब अठ अरब पचासी, कोटि छियत्तर लाखे।।
इतने योजन विस्तृत द्वीपे, बीचों बीच गिरी है।
वलयाकार हजार पचहत्तर, योजन तुंग गिरी है।।1।।

तल में विस्तृत दश हजार दो, सौ बिस योजन गाया।
मध्य सुव्यास बहत्तर सौ अरु, तीस प्रमाण बताया।।
ऊपर चौड़ा ब्यालिस सौ, चालिस योजन तुम जानो।
पर्वत ऊपर चारों दिश में, बीस कूट सरधानो।।2।।

दिशा-दिशा में पाँच कूट हैं, चउ-चउ पर सुर गेहा।
अभ्यंतर के सिद्धकूट पर, अकृत्रिम जिनगेहा।।
कुण्डल पर्वत हेमवर्णमय, शाश्वत तीर्थ कहाता।
देव-देवियाँ अप्सरियों में, इन्द्रों के मन भाता।।3।।

चार दिशा के सिद्धकूट में, जिनवर बिंब विराजें।
मैं परोक्ष ही वंदन करता, कर्मअरी डर भाजें।।
जिनवंदन से आत्म विशुद्धी, हो परमात्म प्रकासे।
जिनवर प्रवचन हृदय महल में, समयसारमय भासे।।4।।

प्रभू यही अब मेरी इच्छा, रत्नत्रय निधि पाऊँ।
नित व्यवहार रतनत्रय बल से, निश्चय शिवपथ पाऊँ।।
वीतराग निश्चयरत्नत्रय, निर्विकल्प निज आत्मा।
परमसमाधी में तन्मय हो, बनूँ सिद्ध परमात्मा।।5।।

यही कामना पूरी करिये, कल्पवृक्ष सम दाता।
त्रिभुवन की संपति देने में, तुम हो जग विख्याता।।
प्रभु अज्ञानमती हर मेरी, सम्यग्ज्ञान प्रकासो।
पुनरपि केवल ''ज्ञानमती'' कर, ज्ञानभानु घट भासो।।6।।

–दोहा–

गणपति नरपति सुरपति, खगपति रुचि मन धार।
त्रिभुवनपति गुणगणमणी, तुम गुण गावत सार।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 23)

रुचकगिरि जिनमंदिर पूजा

स्थापना (गीताछंद)

वर द्वीप तेरहवाँ रुचकवर, बहुरुचिक विख्यात है।
इस मध्य वलयाकार सुंदर, रुचकवर नग ख्यात है।।
योजन चुरासी सहस विस्तृत, तुंग भी इतना कहा।
चारों दिशा के जिनभवन को, भक्तिवश पूजूँ यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक (राग टप्पा–मोहिराखो हो शरना)

सुरसरिता का मधुर सलिल ले, कनक कलश में भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज केशर गंध सुगंधित, कनक कटोरी भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल तंदुल धोय अखंडित, पुंज चरण डिग धरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद कमल मचकुंद चमेली, ले आयो तुम चरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, कनक थाल में भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।5।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक में कर्पूर जलाकर, अंतरंग तम हरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।6।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्निपात्र में, खेवत ही अघ हरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।7।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सेव कपित्थ सुपारी, पूर्ण थाल फल भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।8।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध अक्षत आदिक ले, अर्घ्य करूँ जिन चरणा।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आयो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।
मैं आयो तुम शरणा.।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **जिनपद सरसिज मांहि, मैं जल से धारा करूँ।**
भव जल को जल देय, परम शांति पाऊँ सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार सुलेय, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
आतम गुण की गंध, फैले चारों दिश विषें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **चिच्चेतन चिंतामणी, अनुपम सुख दातार।**
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले सर्व सुखसार।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– गीता छंद–

जो मुक्तिकन्या परिणयन हित, अतुल मंडप सम दिखे।
जिनवर जिनालय सासता, मुनिगण जहाँ निजरस चखें।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते सब सुख मिले।
मन कामना सब पूर्ण हों, भविजन हृदय सरसिज खिले।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न कंचन से जड़ित, शाश्वत जिनालय सोहता।
पर्वत रुचकवर के उपरि, दक्षिणदिशी मन मोहता।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियाँ मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस रुचकपर्वत के उपरि, पश्चिम दिशा में जानिये।
वर सिद्धकूट सुवर्णमय पर, जैनमंदिर मानिये।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियाँ मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौ इंद्र से पूजित चरण-पंकज जिनेश्वर देव हैं।
ईप्सित पदारथ हेतु भविजन, करें तुम पद सेव हैं।।
नग रुचकगिरि उत्तरदिशी, जिनगृह जजत निधियाँ मिलें।
मनकामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्यं–

इस तेरवें पर्वत उपरि, चारों दिशी जिनधाम हैं।
ये विघ्नपर्वत चूर्ण हेतू, वज्रसम सुखधाम हैं।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियाँ मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँखिलें।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में, जिनमूर्तियाँ मणिरत्न की।
सब चार सौ बत्तीस हैं, सुर अप्सराएँ वंदतीं।।

जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियाँ मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियाँ खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्जिनालयमध्यविराजमानचतुःशत-द्वात्रिंशत् जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– **रुचकवराद्री स्वर्णमय, महातीर्थ महनीय।**
गाऊँ जयमाला सुखद, महाताप हरणीय।।1।।

–शंभु छंद–

वर द्वीप तेरहवें के मधि में, स्वर्णाभ रुचकवर अद्री है।
योजन चौरासी सहस तुंग, इतना ही विस्तृत अद्री है।।
इसपे सु चवालिस दिव्यकूट, जिनका वर्णन है मन भाता।
पूरब दिश आठ सुकूट जहाँ, दिक्कन्याओं का नित दाता।।1।।

विजया विजयंत जयंता अरु, अपराजित नंदा नंदवती।
नंदोत्तर नंदीषेणा जिन-जन्मोत्सव में झारी धरतीं।।
दक्षिण दिश आठ कूट ऊपर, इच्छा रु समाहारा देवी।
सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मी, अर शेषवती चित्रगुप्ता भी।।2।।

अष्टम हैं वसुंधरा देवी, ये दिक्कन्याएँ रहती हैं।
जिन जन्मकल्याणक में आकर, दर्पण को धारण करती हैं।।
पश्चिम के आठ कूट ऊपर, हैं इला सुरादेवी पृथ्वी।
पद्मा अरु इकनासा नवमी, सीता भद्रा आठों देवी।।3।।

जिन जन्मोत्सव में जिनमाता के, ऊपर छत्र लगाती हैं।
उत्तर दिश आठों कूटों की, दिक्कन्या चंवर ढुराती हैं।।
इन नाम अलंभूषा दूजी, मिश्रकेशि तथा पुंडरीकिणि हैं।
वारुणी रु आशा सत्या ह्री, श्री देवी ये अतिरूपिणि हैं।।4।।

इन कूट वेदि के अभ्यंतर, उत्तर दिश के क्रम में जानों।
वर चार महाकूटों पे भी, दिक्कन्याओं को पहचानों।।
सौदामिनि कनका शत्रपदा, औ कनकसुचित्रा रहती हैं।
जिन जन्मकल्याणक में ये सब, दशदिश को निर्मल करती हैं।।5।।
इन कूटों अभ्यंतर भागे, पूर्वादि दिशाओं के क्रम से।
चारों कूटों पे दिक्कन्या, रहती हैं अगणित वैभव से।।
रुचका औ रुचककीर्ति देवी, सुरुचककान्ता अर रुचकप्रभा।
जिनमाता का ये जातकर्म, करती हैं भक्ती भरित शुभा।।6।।
इन चालिस कूटों की चालिस, देवी जिन जन्मकल्याणक में।
निज-निज परिवार विभव संयुत, बहु पुण्य कमाती हैं सच में।।
इन कूटों के अभ्यंतर में, श्रीसिद्धकूट हैं चार कहे।
जो पूरब दक्षिण अपरोत्तर, चारों दिश मणिमय भास रहे।।7।।
इनपे शाश्वत जिन चैत्यालय, अकृत्रिम जिनवर प्रतिमाएँ।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनको शिवमारग दर्शाएँ।।
मैं भी श्रद्धा से आ करके, जिनवर की पूजन करता हूँ।
निज केवल ''ज्ञानमती'' हेतू, सब विघन करम को हरता हूँ।।8।।

–दोहा–

अचल रुचकवर चार दिश, जिनवर भवन विशाल।
विघ्नहरण मंगलकरण, नमूँ-नमूँ नत भाल।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 24)

तेरहद्वीप देवभवन चैत्यालय पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

तेरहद्वीप के गजदंतादिक, नग पर देवभवन हैं।
सर्वभवन में शाश्वत जिनगृह, रत्नमयी उत्तम हैं।।
प्रति जिनगृह में जिनप्रतिमाएँ, इक सौ आठ प्रमित हैं।
उन सब जिनगृह जिनप्रतिमा को, पूजत पाप नशतहैं।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-हिमवन्पर्वतादि देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-हिमवन्पर्वतादि देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-हिमवन्पर्वतादि देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

पद्मसरोवर को उज्ज्वल जल, सुवरण भृंग भराऊँ।
भक्तिभाव से जिनचैत्यालय, पूजत पाप नशाऊँ।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिस चंदन, दाह निवारण काजे।
शाश्वत जिनगृह पूजन करते, रोग शोक डर भाजे।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

देवजीर सुखकार अखंडित, अक्षत धोकर लाया।
ज्ञान अखंड करने के हेतू, बहुविध पुंज रचाया।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सम सुरभित फूलों से, जिनगृह पूजों भाई।
आनंद कंद चिदानंद अनुपम, सुख पावो अधिकाई।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंडलनी बरफी रसगुल्ला, दालमोट भर थाली।
शाश्वत जिनगृह पूजन करते, क्षुधा रोग दुख टाली।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जगमग दीपशिखा यह, पापतिमिर हरणारी।
जिनगृह की नित करूँ आरती, भव आरत परिहारी।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित खेय अग्नि में, महक उठी चहुंदिश में।
आतम गुण की सौरभ फैले, पूजत ही दश दिश में।।

तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अनंनास औ, श्रीफल सरस मंगाए।
मोक्ष महाफल पावन हेतू, जिनपद निकट चढ़ाए।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-चंदन-अक्षत-माला-चरु, दीप-धूप-फल लाके।
अर्घ्य चढ़ाऊँ वाद्य बजाऊँ, पुनि वंदूँ शिर नाऊँ।।
तेरहद्वीप के देवभवन में, जिनचैत्यालय सोहें।
उनको पूजूँ भक्ती से, वे कर्म कालिमा धोवें।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

गंगानदि को नीर, जिनपद में धारा करूँ।
शीघ्र हरो भवपीर, सर्व अशांती परिहरूँ।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, पुष्पांजलि से पूजते।
आधि व्याधि दुःख शून्य, हो जाते क्षणमात्र में।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(कुल 1024 अर्घ्य)

जंबूद्वीप के देवभवन के 174 अर्घ्य

दोहा– **नित्य निरंजन सिद्ध की, जिनप्रतिमा मनहार।**
उनकी पूजन हेतु मैं, पुष्प चढ़ाऊँ सार।।1।।

अथ जम्बूद्वीपसंबंधि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जंबूद्वीपभरतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणार्धभरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमालदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्रदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्धकुमार-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्रदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमालदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य उत्तरार्धभरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जंबूद्वीप हिमवान पर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हिमवानदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य भरतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य इलादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य गंगादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य श्रीदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य रोहितास्यादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सिंधुदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सुरादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य वैश्रवणदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

जंबूद्वीप महाहिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य महाहिमवानदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य रोहितादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य ह्रीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिकांतादेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिवर्षदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य वैडूर्यदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

जंबूद्वीप-निषधपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य निषधदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरिवर्षदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरित्देवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य धृतिदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य सीतोदादेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य रुचकदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

जंबूद्वीप-नीलपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नीलदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य सीतादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य कीर्तिदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नरकांतादेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपदर्शनदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

जंबूद्वीप-रुक्मीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रुक्मिदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य नारीदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य बुद्धिदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रूप्यकूलादेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य मणिकांचनदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

जंबूद्वीप-शिखरीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य शिखरीदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रसदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तादेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य लक्ष्मीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य सुवर्णकूलादेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तवतीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य गंधवतीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य ऐरावतदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

जंबूद्वीप-ऐरावतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य ऐरावतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमालदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्रदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्धकुमारदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्रदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमालदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणैरावत-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ईशानदिशा में माल्यवानगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य माल्यवानदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरुदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य कच्छदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सुभोगादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य भोगमालिनीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य पूर्णभद्रदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सीतादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य हरिसहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

आग्नेयदिशा में सौमनसगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सौमनसदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य देवकुरुदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य मंगलदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य वत्समित्रादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सुमित्रादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य विशिष्टदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

नैऋत्य दिशा में विद्युत्प्रभगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य विद्युत्प्रभदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य देवकुरुदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य पद्मदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य वारिषेणादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य बलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य शतज्वालदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य सीतोददेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य हरिसहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

वायव्यदिशा में गंधमादन गजदंतपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमादनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरुदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमालीदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगंकरादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य आनंददेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

जंबूद्वीप वक्षार देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य चित्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य सुकच्छादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य नलिनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य महाकच्छदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छकावतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य पद्मदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य आवर्तदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य लांगलावतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य एकशैलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलावतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य त्रिकूटदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य वत्सदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य सुवत्सादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य महावत्सदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वत्सकावतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य अंजनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य सुरम्यादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य आत्मांजनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य रमणीयदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य मंगलावतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य श्रद्धावानदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य सुपद्मादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य विजटावान्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य महापद्मदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मकावतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य आशीविषदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य शंखदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य नलिनीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सुखावहदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य कुमुददेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सरितादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य चन्द्रमालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य वप्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य सुवप्रादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य सूर्यमालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य महावप्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य वप्रकावतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य नागमालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य गंधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य सुगंधादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य देवमालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधिलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधमालिनीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

छह सरोवर कमलसंबंधि देवीभवन के 6 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मसरोवरस्य श्रीदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्मसरोवरस्य ह्रीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-तिगिंछसरोवरस्य धृतिदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-केशरिसरोवरस्य कीर्तिदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापुण्डरीकसरोवरस्य बुद्धिदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुण्डरीकसरोवरस्य लक्ष्मीदेवीभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

वृषभाचल देवभवन के 2 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित वृषभनामदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित वृषभनामदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

नाभिगिरि देवभवन के 4 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हैमवतक्षेत्रस्य शब्दवाननाभिगिरिपर्वतस्थस्वाति-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हरिक्षेत्रस्य विजयवाननाभिगिरिपर्वतस्थचारण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्यक्क्षेत्रस्य पद्मवाननाभिगिरिपर्वतस्थपद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हैरण्यवतक्षेत्रस्य गंधवाननाभिगिरिपर्वतस्थप्रभास-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

गंगादेवी आदि के महल के भगवान के 14 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंगादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सिंधुदेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रोहित्देवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रोहितास्यादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हरित्देवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हरिकांतादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सीतादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सीतोदादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नारीदेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नरकांतादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवर्णकूलादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रूप्यकूलादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रक्तादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूटसहित-जिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रक्तोदादेवीप्रासादस्योपरि विराजमानजटाजूट-सहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतेषु अष्टादश-देवभवनसंबंधि-द्विशतषट्पंचाशद् देवभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थद्वात्रिंशद्वृषभाचलपर्वतेषु वृषभनामदेवभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चतुर्यमकगिरिपर्वतेषु चित्र-विचित्र-यमक-मेघनाम देवभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अष्टदिग्गजपर्वतेषु पद्मोत्तर-नील-स्वस्तिक-अंजन-कुमुद-पलाश-अवतंस-रोचन देवभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-द्विशतकांचनपर्वतेषु द्विशतकांचननामदेवभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सीता-सीतोदानदीमध्ये नील-उत्तरकुरु-चंद्र-ऐरावत-माल्यवंत-निषध-देवकुरु-सूर-सुलस-विद्युत्नाम दश दश सरोवरेषु नागकुमारी देवीभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।

–पूर्णार्घ्यं –

रजताचल कुलपर्वत वृषभाचल गजदंत यमकगिरि।
श्री ह्री आदिक देवीगृह गंगा आदि के गृह उपरि।।
गृह चैत्यालय में जिनप्रतिमा, इन सबको नित वंदन।
मैं पूजूँ पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, करूँ कोटि अभिनंदन।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजयार्धपर्वतादि-चतुःसप्तत्यधिक एकशतदेव-देवीभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

धातकीखण्डद्वीप-इष्वाकारपर्वत के देवभवन के 6 अर्घ्य

दोहा– **द्वीप धातकी खण्ड में, पर्वत इष्वाकार।**
सुरगृह के जिनगेह को, पूजूँ श्रद्धाधार।।1।।

अथ धातकीखण्डद्वीपस्य दक्षिणोत्तरसंबंधि-इष्वाकारपर्वतस्योपरि देवभवनस्थितजिन-प्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

–पूर्णार्घ्यं-दोहा –

शाश्वत जिनगृह के भवन, जिनप्रतिमा अभिराम।
पूजूँ नित पूर्णार्घ्य से, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-दक्षिणोत्तरदिशायां इष्वाकारपर्वतयोः देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप के देवभवन के 174 अर्घ्य

दोहा– **पूर्व धातकी द्वीप के, सुरगृह के जिनधाम।**
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले निजातम धाम।।1।।

अथ पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य उत्तरार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप हिमवान पर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हिमवानदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य भरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य इलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य गंगादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य रोहितास्यादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सिंधुदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सुरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप महाहिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य महाहिमवानदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य रोहितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य ह्रीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिकांतादेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिवर्षदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य वैडूर्यदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 25।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप-निषधपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य निषधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरिवर्षदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरित्देवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य धृतिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य सीतोदादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य रुचकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 33।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप-नीलपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नीलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य सीतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य कीर्तिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नरकांतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपदर्शनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रुक्मिदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य नारीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य बुद्धिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रूप्यकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य मणिकांचनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप-शिखरीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य शिखरीदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रसदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य लक्ष्मीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य सुवर्णकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य गंधवतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य ऐरावतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप-ऐरावतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य ऐरावत-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणैरावत देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ईशानदिशा में माल्यवानगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य माल्यवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य उत्तरकौरव-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य कच्छ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सुभोगा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य भोगमालिनी-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सीतादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य हरिसह-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

आग्नेयदिशा में सौमनसगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सौमनस-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य मंगल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य वत्समित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सुमित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य विशिष्ट-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

नैऋत्यदिशा में विद्युत्प्रभगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य विद्युत्प्रभ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य पद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य वारिषेणा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य बलादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य शतज्वाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य सीतोद-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य हरिसह-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

वायव्यदिशा में गंधमादन गजदंतपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमादन-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमाली-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगवती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगंकरादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य आनंददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप वक्षार देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य चित्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य सुकच्छादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य नलिनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य महाकच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य आवर्तदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य लांगलावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य एकशैलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य त्रिकूटदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य वत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य सुवत्सादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वैश्रवणदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य महावत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वत्सकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य अंजनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य रम्यक्देव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य सुरम्यादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य आत्मांजन-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य रमणीय-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य मंगलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य श्रद्धावान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य सुपद्मादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य विजटावान्-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य महापद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य आशीविष-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य शंखदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य नलिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सुखावहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य कुमुददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सरितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य चंद्रमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य वप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य सुवप्रादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य सूर्यमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य महावप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य वप्रकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य नागमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य गंधदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य सुगंधादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य देवमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधिलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधमालिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

छहसरोवर कमलसंबंधि देवी भवन के 6 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मसरोवरस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्मसरोवरस्य ह्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-तिगिंछसरोवरस्य धृतिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-केशरिसरोवरस्य कीर्तिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापुण्डरीकसरोवरस्य बुद्धिदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुण्डरीकसरोवरस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

वृषभाचल देवभवन के 2 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

नाभिगिरि देवभवन के 4 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हैमवतक्षेत्रस्य शब्दवाननाभिगिरि-पर्वतस्थस्वातिदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हरिक्षेत्रस्य विजयवाननाभिगिरि-पर्वतस्थचारणदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्यक्क्षेत्रस्य पद्मवाननाभिगिरि-पद्मदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हैरण्यवतक्षेत्रस्य गंधवाननाभिगिरि-पर्वतस्थप्रभासदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

गंगादेवी आदि के महल के भगवान के 14 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंगादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सिंधुदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रोहित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रोहितास्यादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हरित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हरिकांतादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सीतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सीतोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नारीदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नरकांतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवर्णकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रूप्यकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रक्तादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रक्तोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतेषु अष्टादशदेवभवन-संबंधि-द्विशतषट्-पंचाशद्देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थद्वात्रिंशद् वृषभाचलपर्वतेषु वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चतुर्यमकगिरिपर्वतेषु चित्र-विचित्र-यमक-मेघनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अष्टदिग्गजपर्वतेषु पद्मोत्तर-नील-स्वस्तिक-अंजन-कुमुद-पलाश-अवतंस-रोचनदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-द्विशतकांचनपर्वतेषु द्विशतकांचननाम देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सीता-सीतोदानदीमध्ये नील-उत्तरकुरु-चंद्र-ऐरावत-माल्यवंत-निषध-देवकुरु-सूर-सुलस-विद्युत्नाम दश दश सरोवरेषु नागकुमारी देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पूर्व धातकी खण्ड में, देवभवन श्रुतमान्य।
उनमें जिनगृह मूर्तियाँ, जजत मिले धन-धान्य।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयार्धपर्वतादिदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप के देवभवन के 174 अर्घ्य

दोहा– **अपरधातकी खण्ड में, सुरगृह में जिनसद्म।**
पुष्पांजलि से पूजते, पाऊँ निजसुख सद्म।।1।।

अथ पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा-प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य उत्तरार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप हिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हिमवानदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य भरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य इलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य गंगादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य रोहितास्यादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सिंधुदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सुरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप महाहिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य महाहिमवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य रोहितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य ह्रीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिकांतादेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिवर्षदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य वैडूर्यदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

पश्चिमधातकी खण्डद्वीप-निषधपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य निषधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरिवर्षदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरित्देवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य धृतिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य सीतोदादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य रुचकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप नीलपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नीलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य सीतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य कीर्तिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नरकांतादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपदर्शनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रुक्मिदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रम्यक्देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य नारीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य बुद्धिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रूप्यकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य मणिकांचनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप-शिखरीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य शिखरीदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रसदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य सुवर्णकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य गंधवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य ऐरावतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप-ऐरावतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य ऐरावतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमालदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्रदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्धकुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्रदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमालदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणैरावतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ईशानदिशा में माल्यवानगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य माल्यवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य उत्तरकौरव-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य कच्छ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सुभोगा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य भोगमालिनी-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सीतादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य हरिसह-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

आग्नेयदिशा में सौमनसगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सौमनस-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य मंगल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य वत्समित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सुमित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य विशिष्ट-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

नैऋत्यदिशा में विद्युत्प्रभगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य विद्युत्प्रभ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य पद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य वारिषेणा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य बलादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य शतज्वालदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य सीतोददेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य हरिसहदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

वायव्यदिशा में गंधमादन गजदंतपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमादनदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरुदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमालीदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगवतीदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगंकरादेवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य आनंददेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप वक्षार देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य चित्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य सुकच्छादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य नलिनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य महाकच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य आवर्तदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य लांगलावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य एकशैलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य त्रिकूटदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य वत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य सुवत्सादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वैश्रवणदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्य महावत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वत्सकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्य अंजनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्य रम्यक्देव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्य सुरम्यादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारपर्वतस्य आत्मांजन-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारपर्वतस्य रमणीय-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारपर्वतस्य मंगलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य श्रद्धावान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिश्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य सुपद्मादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिविजटावद्वक्षारपर्वतस्य विजटावान्-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य महापद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिविजटावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिआशीविषवक्षारपर्वतस्य आशीविष-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य शंखदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिआशीविषवक्षारपर्वतस्य नलिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसुखावहवक्षारपर्वतस्य सुखावहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य कुमुददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसुखावहवक्षारपर्वतस्य सरितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचंद्रमालवक्षारपर्वतस्य चंद्रमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य वप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य सुवप्रादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्य सूर्यमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्य महावप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य वप्रकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिनागमालवक्षारपर्वतस्य नागमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य गंधदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिनागमालवक्षारपर्वतस्य सुगंधीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिदेवमालवक्षारपर्वतस्य देवमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिदेवमालवक्षारपर्वतस्य गंधिलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधमालिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

छहसरोवर कमलसंबंधि देवी भवन के 6 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपद्मसरोवरस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमहापद्मसरोवरस्य ह्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-तिगिंछसरोवरस्य धृतिदेवीभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिकेशरिसरोवरस्य कीर्तिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिमहापुण्डरीकसरोवरस्य बुद्धिदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपुण्डरीकसरोवरस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

वृषभाचल देवभवन के 2 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

नाभिगिरि देवभवन के 4 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिहैमवतक्षेत्रस्य शब्दवाननाभिगिरि-पर्वतस्थस्वातिदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिहरिक्षेत्रस्य विजयवाननाभिगिरि-पर्वतस्थचारणदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिरम्यक्क्षेत्रस्य पद्मवाननाभिगिरि-पद्मदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिहैरण्यवतक्षेत्रस्य गंधवाननाभिगिरि-पर्वतस्थप्रभासदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

गंगादेवी आदि के महल के भगवान के 14 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिगंगादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसिंधुदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिरोहित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रोहितास्यादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिहरित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हरिकांतादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिसीतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सीतोदादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिनारीदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नरकांतादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवर्णकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रूप्यकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिरक्तादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिरक्तोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतेषु अष्टादशदेवभवन-संबंधि-द्विशतषट्-पंचाशद्देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थद्वात्रिंशद् वृषभाचलपर्वतेषु वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुर्यमकगिरिपर्वतेषु चित्र-विचित्र-यमक-मेघनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिअष्टदिग्गजपर्वतेषु पद्मोत्तर-नील-स्वस्तिक-अंजन-कुमुद-पलाश-अवतंस-रोचनदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-द्विशतकांचनपर्वतेषु द्विशतकांचन-नाम देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सीता-सीतोदानदीमध्ये नील-उत्तरकुरु-चंद्र-ऐरावत-माल्यवंत-निषध-देवकुरु-सूर-सुलस-विद्युत्नाम दश दश सरोवरेषु नागकुमारी देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

अपर धातकीखण्ड द्वीप में, देवभवन जितने हैं।
उनमें गृहचैत्यालय शाश्वत, रत्नमयी दिखते हैं।।
सबमें जिनवर प्रतिमा अनुपम, पूजत पाप नशाऊँ।
शाश्वत अनुपम निज सुख पाकर, पुनः न जग में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयार्धपर्वतादिसर्वदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पुष्करार्धद्वीप-इष्वाकारपर्वत के देवभवन के 6 अर्घ्य

दोहा– **स्वयंसिद्ध जिनबिम्ब हैं, सुरभवनों में नित्य।**
पुष्पांजलि से पूजहूँ, मिले स्वात्मसुख नित्य।।1।।

अथ पुष्करार्धद्वीपस्य दक्षिणोत्तरसंबंधि-इष्वाकारपर्वतस्योपरि देवभवनस्थितजिन-प्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-उत्तरदिशि इष्वाकारपर्वतस्य देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

पूर्णार्घ्य (दोहा) – **स्वर्णिम इष्वाकार गिरि, देवभवन जिनसद्म।**
जिनबिम्बों को नित जजूँ, पाऊँ अविचल सद्म।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-दक्षिणोत्तरदिशोः इष्वाकारपर्वतस्य देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्व पुष्करार्धद्वीप के देवभवन के 174 अर्घ्य

दोहा– **पूरब पुष्करद्वीप में, सुरगृह में जिनगेह।**
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जिनवच में धरनेह।।1।।

अथ पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य उत्तरार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 8।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप हिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हिमवानदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य भरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य इलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य गंगादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य रोहितास्यादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सिंधुदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सुरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 18।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप महाहिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य महाहिमवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य रोहितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य ह्रीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिकांतादेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिवर्षदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य वैडूर्यदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।25।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप-निषधपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य निषधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरिवर्षदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरित्देवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य धृतिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य सीतोदादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य रुचकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।33।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप-नीलपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नीलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य सीतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य कीर्तिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नरकांतादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपदर्शनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रुक्मिदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य नारीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य बुद्धिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रूप्यकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य मणिकांचनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप-शिखरीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य शिखरीदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रसदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य सुवर्णकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य गंधवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य ऐरावतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप-ऐरावतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य ऐरावत-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणैरावत देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवणदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ईशानदिशा में माल्यवानगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य माल्यवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य उत्तरकौरव-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य कच्छ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सुभोगा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य भोगमालिनी-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सीतादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य हरिसह-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

आग्नेयदिशा में सौमनसगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सौमनस-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य मंगलदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य वत्समित्रादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सुमित्रादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य विशिष्टदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

नैऋत्यदिशा में विद्युत्प्रभगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य विद्युत्प्रभ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य देवकुरुदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य पद्मदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य वारिषेणादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य बलादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य शतज्वाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य सीतोददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य हरिसहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

वायव्यदिशा में गंधमादन गजदंतपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमादनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरुदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमालीदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगवतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगंकरादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य आनंददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप वक्षार देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य चित्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य सुकच्छादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य नलिनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य महाकच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य आवर्तदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य लांगलावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य एकशैलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य त्रिकूटदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य वत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य सुवत्सादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वैश्रवणदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य महावत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वत्सकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य अंजनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य रम्यक्देव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य सुरम्यादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य आत्मांजन-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य रमणीय-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य मंगलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य श्रद्धावान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य सुपद्मादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य विजटावान्-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य महापद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य आशीविष-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य शंखदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य नलिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सुखावहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य कुमुददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सरितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य चंद्रमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य वप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य सुवप्रादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य सूर्यमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य महावप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य वप्रकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य नागमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य गंधदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य सुगंधादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य देवमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधिलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधमालिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

छहसरोवर कमलसंबंधि देवी भवन के 6 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मसरोवरस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्मसरोवरस्य ह्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-तिगिंछसरोवरस्य धृतिदेवीभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-केशरिसरोवरस्य कीर्तिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापुण्डरीकसरोवरस्य बुद्धिदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुण्डरीकसरोवरस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

वृषभाचल देवभवन के 2 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

नाभिगिरि देवभवन के 4 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हैमवतक्षेत्रस्य शब्दवाननाभिगिरिपर्वतस्थ-स्वातिदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरिक्षेत्रस्य विजयवाननाभिगिरिपर्वतस्थ-चारणदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्यकक्षेत्रस्य पद्मवाननाभिगिरिपर्वतस्थ-पद्मदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हैरण्यवतक्षेत्रस्य गंधवाननाभिगिरिपर्वतस्थ प्रभासदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

गंगादेवी आदि के महल के भगवान के 14 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंगादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सिंधुदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रोहित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रोहितास्यादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरिकांतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीतोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नारीदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नरकांतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवर्णकूलादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रूप्यकूलादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रक्तादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रक्तोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतेषु अष्टादशदेवभवन-संबंधि-द्विशतषट्-पंचाशद् देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थद्वात्रिंशद् वृषभाचल-पर्वतेषु वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुर्यमकगिरिपर्वतेषु चित्र-विचित्र-यमक-मेघनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अष्टदिग्गजपर्वतेषु पद्मोत्तर-नील-स्वस्तिक-अंजन-कुमुद-पलाश-अवतंस-रोचनदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्विशतकांचनपर्वतेषु द्विशतकांचननाम देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीता-सीतोदानदीमध्ये नील-उत्तरकुरु-चंद्र-ऐरावत-माल्यवंत-निषध-देवकुरु-सूर-सुलस-विद्युत्नाम दश दश सरोवरेषु नागकुमारी देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।

–पूर्णार्घ्यं–

वर पूर्व पुष्करद्वीप में, सुर के गृहों में जिनभवन।
उनमें जिनेश्वर मूर्तियाँ, पूजत मिले निज स्वात्म धन।।
पूर्णार्घ्य से पूजूँ सदा, पाऊँ अनूपम सौख्य को।
शाश्वत जिनालय वंदना, हरती अखिल दुख दोष को।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजयार्धपर्वतादि-सर्वदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिम पुष्करार्धद्वीप के देवभवन के 174 अर्घ्य

दोहा– पश्चिम पुष्कर द्वीप में, सुरगृह में जिनधाम।
पूजन हेतू मैं करूँ, पुष्पांजलि इत ठाम।।1।।

अथ पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनायपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीपभरतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य उत्तरार्ध-भरतदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 8।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप हिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हिमवानदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य भरतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य इलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य गंगादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य रोहितास्यादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सिंधुदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य सुरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप महाहिमवानपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य महाहिमवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हैमवतकदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य रोहितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य ह्रीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिकांतादेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य हरिवर्षदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्य वैडूर्यदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप-निषधपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य निषधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरिवर्षदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य हरित्देवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य धृतिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य सीतोदादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्य रुचकदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप-नीलपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नीलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य पूर्वविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य सीतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य कीर्तिदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य नरकांतादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपरविदेहदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य रम्यक्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्य अपदर्शनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रुक्मिदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रम्यक्देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य नारीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य बुद्धिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य रूप्यकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्य मणिकांचनदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप-शिखरीपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य शिखरीदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य हैरण्यवतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रसदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य सुवर्णकूलादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य रक्तवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य गंधवतीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य ऐरावतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरीपर्वतस्य वैश्रवणदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप-ऐरावतक्षेत्र विजयार्धपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य ऐरावतदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य कृतमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य मणिभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य विजयार्ध-कुमारदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य पूर्णभद्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य नृत्यमाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य दक्षिणैरावत देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रविजयार्धपर्वतस्य वैश्रवण-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ईशानदिशा में माल्यवानगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य माल्यवान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य उत्तरकौरव-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य कच्छ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सुभोगा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य भोगमालिनी-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य पूर्णभद्र-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य सीतादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवानगजदंतपर्वतस्य हरिसह-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

आग्नेयदिशा में सौमनसगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सौमनस-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य मंगल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य वत्समित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य सुमित्रा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सौमनसगजदंतपर्वतस्य विशिष्ट-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

नैऋत्यदिशा में विद्युत्प्रभगजदंत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य विद्युत्प्रभ-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य देवकुरु-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य पद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य वारिषेणा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य बलादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य शतज्वाल-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य सीतोददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्य हरिसहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

वायव्यदिशा में गंधमादन गजदंतपर्वत देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमादनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य उत्तरकुरुदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य गंधमालीदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगवती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य भोगंकरा-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्य आनंददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप वक्षार देवभवन अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य चित्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्य सुकच्छादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य नलिनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्यमहाकच्छदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्य कच्छकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य आवर्तदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्य लांगलावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य एकशैलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्य पुष्कलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य त्रिकूटदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य वत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्य सुवत्सादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।109।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वैश्रवणदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।110।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य महावत्सदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।111।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्य वत्सकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।112।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य अंजनदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।113।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य रम्यक्देव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।114।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्य सुरम्यादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।115।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य आत्मांजन-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।116।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य रमणीय-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।117।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्य मंगलावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।118।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य श्रद्धावान-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।119।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।120।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्य सुपद्मादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।121।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य विजटावान्-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।122।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य महापद्म-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।123।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्य पद्मकावती-देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।124।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य आशीविष-देवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।125।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य शंखदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।126।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्य नलिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।127।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सुखावहदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।128।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य कुमुददेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।129।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्य सरितादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।130।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य चंद्रमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।131।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य वप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।132।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चंद्रमालवक्षारपर्वतस्य सुवप्रादेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।133।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य सूर्यमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।134।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य महावप्रदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।135।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्य वप्रकावतीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।136।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य नागमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।137।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य गंधदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।138।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्य सुगंधीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।139।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य देवमालदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।140।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधिलदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।141।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्य गंधमालिनीदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।142।।

छहसरोवर कमलसंबंधि देवी भवन के 6 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मसरोवरस्य श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।143।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्मसरोवरस्य ह्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।144।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-तिगिंछसरोवरस्य धृतिदेवीभवनस्थित जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।145।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-केशरिसरोवरस्य कीर्तिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।146।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापुण्डरीकसरोवरस्य बुद्धिदेवी-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।147।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुण्डरीकसरोवरस्य लक्ष्मीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।148।।

वृषभाचल देवभवन के 2 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।149।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्य वृषभाचलपर्वतस्थित-वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।150।।

नाभिगिरि देवभवन के 4 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हैमवतक्षेत्रस्य शब्दवाननाभिगिरि-पर्वतस्थस्वातिदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।151।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरिक्षेत्रस्य विजयवाननाभिगिरि-पर्वतस्थचारणदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।152।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरम्यक्क्षेत्रस्य पद्मवाननाभिगिरिपर्वतस्थ-पद्मदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।153।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हैरण्यवतक्षेत्रस्य गंधवाननाभिगिरि-पर्वतस्थ प्रभासदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।154।।

गंगादेवी आदि के महल के भगवान के 14 अर्घ्य

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंगादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।155।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सिंधुदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।156।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रोहित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।157।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रोहितास्यादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।158।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरित्देवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हरिकांतादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीतादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीतोदादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नारीदेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नरकांतादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवर्णकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रूप्यकूलादेवीप्रासादस्योपरि-विराजमानजटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रक्तादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रक्तोदादेवीप्रासादस्योपरिविराजमान-जटाजूटसहितजिनप्रतिमायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतेषु अष्टादशदेवभवन-संबंधि-द्विशतषट्-पंचाशद् देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रस्थद्वात्रिंशद् वृषभाचलपर्वतेषु वृषभनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।170।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुर्यमकगिरिपर्वतेषु चित्र-विचित्र-यमक-मेघनामदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।171।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अष्टदिग्गजपर्वतेषु पद्मोत्तर-नील-स्वस्तिक-अंजन-कुमुद-पलाश-अवतंस-रोचनदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।172।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-द्विशतकांचनपर्वतेषु द्विशतकांचननाम देवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।173।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सीता-सीतोदानदीमध्ये नील-उत्तरकुरु-चंद्र-ऐरावत-माल्यवंत-निषध-देवकुरु-सूर-सुलस-विद्युत्नाम दश दश सरोवरेषु नागकुमारी देवीभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।174।।

–कुसुमलता छन्द –

पूर्णार्घ्य – विजयार्ध पर्वत हिमवदादिक, पर्वतों पर सुरभवन।
इनमें जिनालय शाश्वते, जिनमूर्तियों से सुखसदन।।
पूजूँ सदा पूर्णार्घ्य ले, सब रोग शोक विनाश हों।
शाश्वत अतीन्द्रिय सौख्य पाऊँ, जहाँ पूर्ण विकास हो।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजयार्धपर्वतादिसर्वदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मानुषोत्तरपर्वत देवभवन अर्घ्य

सोरठा– शाश्वत जिन आगार, सुरगृह में रत्नों खचित।
प्रभु करिए भव पार, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

अथ मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मानुषोत्तर देवभवन के 18 अर्घ्य

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-पूर्वदिशि यशस्वान्देवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-पूर्वदिक्संबंधि-यशस्कांतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-पूर्वदिक्संबंधि-यशोधरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-दक्षिणदिक्संबंधि-नंदनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-दक्षिणदिक्संबंधि-नंदोत्तरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-दक्षिणदिक्संबंधि-अशनिघोषदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-पश्चिमदिक्संबंधि-सिद्धार्थदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-पश्चिमदिक्संबंधि-वैश्रवणदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-पश्चिमदिक्संबंधि-मानसदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-उत्तरदिक्संबंधि-सुदर्शनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-उत्तरदिक्संबंधि-अमोघदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रबुद्धदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-आग्नेयदिक्संबंधि-स्वातिदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-आग्नेयदिक्संबंधि-वेणुदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-ईशानदिक्संबंधि-वेणुधारीदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-ईशानदिक्संबंधि-हनुमानदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-वायव्यदिक्संबंधि-वेलंबदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-नैऋत्यदिक्संबंधि-वेणुनीतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पूर्णार्घ्य (अडिल्लछंद)

मनुजोत्तर नग ऊपर, सुरगृह जानिये।
जिन आलय जिनप्रतिमा, को सरधानिये।।
सब प्रतिमा को शिव सुख, हेतू मैं जजूँ।
अष्टकर्म नग चूर, भक्ति से नित भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्योपरि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मध्य के शेष द्वीपस्थित देवभवन के अर्घ्य

दोहा– **जिनप्रतिमाएँ विघ्नघन, करतीं चकनाचूर।**
इसी हेतु मैं पूजहूँ, मिले आत्म रस पूर।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपरतः तृतीयपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरनामचतुर्थद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरनाम पंचमद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं घृतवरनाम षष्ठद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं क्षौद्रवरनाम सप्तमद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर नामाष्टमद्वीपसंबंधि-वापी-पर्वतोपरिदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं अरुणवरनाम नवमद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं अरुणाभासनाम दशमद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं शंखवरनाम द्वादशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

–पूर्णार्घ्य -नरेन्द्र छंद –

तेरहद्वीप मध्य के जो हैं, द्वीप आठ अति सुन्दर।
उनमें देवभवन में जिनवर, चैत्यालय अति मनहर।।
उन सबमें जिनप्रतिमाओं को, भक्तिभाव से पूजूँ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाकर रुचि से, सर्व दुःखों से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीप-वारुणीवरद्वीप-क्षीरवरद्वीप-घृतवरद्वीप-क्षौद्रवरद्वीप-नंदीश्वरद्वीप-अरुणवरद्वीप-अरुणाभासद्वीप-शंखवरनामद्वीपेषु तिरश्चां युगलानां जघन्यभोगभूमिषु यत्र यत्र व्यन्तरदेवभवनानि सन्ति, तेषु देवगृहचैत्यालय जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलवर पर्वत देवभवन के 16 अर्घ्य

सोरठा– **स्वयंसिद्ध जिनबिम्ब, कुण्डलगिरि सुरगेह में।**
नमूँ नमूँ नत शीश, कुसुमांजलि कर भक्ति से।।1।।

अथ कुण्डलवरद्वीपमध्यास्थित कुण्डलवरपर्वतस्योपरि देवभवनस्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-वज्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-वज्रप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-कनकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-कनकप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-रजतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-रजतप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-सुप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-महाप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-अंकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-अंकप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-मणिकूटदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-मणिप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-रुचकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-रुचकाभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-हिमवानदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-मंदरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

–पूर्णार्घ्य–

अकृत्रिम कुण्डलपर्वत पर, देवभवन में जिनवर धाम।
इनमें रतनमयी जिनप्रतिमा, भक्तिभाव से करूँ प्रणाम।।
पूरण अर्घ्य चढ़ाकर जजते, पूर्ण अतीन्द्रिय सौख्य मिले।
भव-दुख दूर भवोदधि तीर, मिले निज आतम कमल खिले।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपमध्यस्थित कुण्डलवरपर्वतस्योपरिषोडशदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

तेरहवें रुचकवरद्वीपमध्यस्थित रुचकवरपर्वत देवभवन के अर्घ्य

दोहा– **रुचकवराद्री सुरभवन, उनमें जिनवरगेह।**
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, प्रभु में अतिशय नेह।।1।।

अथ त्रयोदशम रुचकवरद्वीपमध्यस्थित रुचकवरपर्वतस्योपरि चत्वारिंशद्देवभवन-स्थितजिनप्रतिमापूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-विजयादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-वैजयन्तीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-जयंतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-अपराजितादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-नंदादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-नंदवतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-नंदिषेणादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-इच्छादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-समाहारादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-सुप्रकीर्णादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-यशोधरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-लक्ष्मीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-शेषवतीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-चित्रगुप्तादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-वसुंधरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-इलादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-सुरादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-पृथिवीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-पद्मादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-एकनासादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-नवमीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-सीतादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-भद्रादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-अलंभूषादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-मिश्रकेशीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-पुण्डरीकिणीदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-वारुणीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-आशादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-सत्यादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-ह्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-श्रीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-सौदामिनीदेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-कनकादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-शतह्रदादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-कनकचित्रादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पूर्वदिक्संबंधि-रुचकादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि दक्षिणदिक्संबंधि-रुचककीर्तिदेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि पश्चिमदिक्संबंधि-रुचककान्तादेवीभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि उत्तरदिक्संबंधि-रुचकप्रभादेवीभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

–पूर्णार्घ्य–

नित शचीपति पूजित चरण-पंकज जिनेश्वर देव हैं।
ईप्सित पदारथ हेतु भविजन, करें तुम पद सेव हैं।।
नग रुचकवर पर देवियों के, भवन शाश्वत शोभते।
उनमें जिनालय जैन प्रतिमा, पूजते मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्योपरि सर्वदेवीभवनस्थितजिनचैत्यालय-जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

तेरहद्वीप-समुद्रों के अधिपति

दोहा– **द्वीपजलधि के अधिपती, उन गृह में जिनबिम्ब।**
पुष्पांजलि से पूजते, निजसुख मिले अनिंद्य।।1।।

अत्र त्रयोदशद्वीपसमुद्राधिपतिदेवभवनगृहचैत्यालय पूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-आदरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-अनादरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं लवणसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-प्रभासदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं लवणसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-प्रियदर्शनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-प्रियदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-दर्शनदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-कालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-महाकालदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-पद्मदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-पुण्डरीकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-चक्षुष्मान्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-सुचक्षुष्मान्देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-श्रीप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पुष्करवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-श्रीधरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-वरुणदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-वरुणप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-मध्यदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-मध्यमदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-पांडुरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-पुष्पदंतदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-विमलप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-विमलदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-सुप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-घृतवरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-उत्तरदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-महाप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं क्षौद्रवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-कनकदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं क्षौद्रवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-कनकप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं क्षौद्रवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-पूर्णदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं क्षौद्रवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-पूर्णप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-गंधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-महागंधप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-नंदिदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-नंदिप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं अरुणवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-चंद्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं अरुणवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-सुभद्रदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं अरुणवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-अरुणदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं अरुणवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-अरुणप्रभदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं अरुणाभासद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-सुगंधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं अरुणाभासद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वगंधदेवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं अरुणाभाससमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं अरुणाभाससमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं शंखवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं शंखवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं शंखवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं शंखवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपाधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपाधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थितजिन-चैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं रुचकवरसमुद्राधिपति-दक्षिणदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं रुचकवरसमुद्राधिपति-उत्तरदिक्संबंधि-देवभवनस्थित-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

पूर्णार्घ्य (गीताछंद)

तेरहों द्वीप-समुद्र के, अधिपति जिनागम में कहे।
इनके गृहों में चैत्य आलय, स्वर्ण मणि निर्मित रहें।।
उनमें रतनमय जैन प्रतिमा, पूजते दुःख दूर हों।
सुख शांति संपत्ती मिले, सब मनोवांछित पूर्ण हों।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपादारभ्य रुचकवरसमुद्रपर्यंत-अधिपति देवानां गृहचैत्यालय-स्थितसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जम्बूद्वीपरक्षक-अनावृतयक्ष अर्घ्य

दोहा– **द्वीप-द्वार रक्षक कहें, उन गृह में जिनधाम।**
पुष्पांजलि से पूजते, मिले निजातम राम।।1।।

अथ जम्बूद्वीपरक्षक-विजयद्वाराधिरक्षकदेवभवनजिनचैत्यालयपूजाप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपरक्षक-अनावृतयक्षदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

विजयद्वार आदि के देवभवन के अर्घ्य

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपादिरुचकवरद्वीपपर्यंत पूर्वद्वाराधिपति-विजयदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपादिरुचकवरद्वीपपर्यंत दक्षिणद्वाराधिपति-वैजयंतदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपादिरुचकवरद्वीपपर्यंत पश्चिमद्वाराधिपति-जयंतदेवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपादिरुचकवरद्वीपपर्यंत उत्तरद्वाराधिपति-अपराजितदेव-भवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

–पूर्णार्घ्य–

सब द्वीप के द्वाराधिपति के, सुरनगर विख्यात हैं।
उनमें जिनालय शाश्वते, अतिशायि महिमा प्राप्त हैं।।
उनमें विराजें मणिमयी, जिनराज प्रतिमाएँ सदा।
उन पूजते दुःख दरिद नाशें, सर्वसुख पावें सदा।।1।।

ॐ ह्रीं अनावृतयक्ष-विजयदेव-वैजयंतदेव-जयंतदेव-अपराजित-देवभवन-स्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य - **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधि नवदेवताभ्यो नमः।**

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय सुरगृह के जिन आलय, जय जय उनकी सब जिनप्रतिमा।
जय जय जिनगृह समकित आलय, जय जय उनकी अद्भुतमहिमा।।
इन जिनगृह को सुरगण पूजें, संगीत नृत्य कर भक्ति करें।
भव भव के संचित पापों को, जिनभक्ती से निःशक्ति करें।।1।।

हिमवन शिखरी पर दश दश मह-हिमवन् रुक्मी पर सात-सात।
निषधादि नील पर आठ-आठ, गजदंत पे छह-छह आठ-आठ।।
वक्षारों पर अड़तालिस हैं, सब विजयार्धों पे आठ-आठ।
तेरहद्वीपों के पर्वत पर, हैं देवभवन शाश्वत विख्यात।।2।।

सबमें जिनगृह प्रति जिनगृह में, जिनप्रतिमा इक सौ आठ कहीं।
उनका जो वंदन करते हैं, वे पा लेते हैं मोक्ष मही।।
जिनगृह में मानस्तंभ चैत्य, सिद्धार्थ वृक्ष में जिनप्रतिमा।
स्तूप व तोरण द्वार आदि में, जिनप्रतिमा हैं अनूपमा।।3।।

मंगल घट मंगल द्रव्य धूप, घट मालाएँ भी स्वर्णमयी।
जिनप्रतिमाएँ छवि वीतराग, धारें जो शाश्वत रत्नमयी।।
हम सब जिनगृह जिनप्रतिमा की, पूजा अर्चा वंदना करें।
निज आत्मनिधी को पा करके, भव-भव दुःख की खंडना करें।।4।।

इन जिनप्रतिमाओं की भक्ती, मंगलकरणी भवदधितरणी।
चिन्मय चिंतामणि चेतन को, परमानन्दामृत निर्झरणी।।
जिनभक्ती गंगा महानदी, सब कर्ममलों को धो देती।
मुनिगण का मन पवित्र करके, तत्क्षण शिवसुख भी दे देती।।5।।

हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों का आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे देवो।।
तब तक तुम चरणकमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल ''ज्ञानमती'', तब तक मम वच तव गुण गावें।।6।।

–दोहा–

एक सहस चौबीस ये, देवभवन हैं मुख्य।
इनके जिनगृह जिनकृती, जजत मिले सब सौख्य।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 25)

दश चौबीसी पूजा

(भरत-ऐरावत वर्तमान तीर्थंकर पूजा)

–स्थापना–

ढाईद्वीपों में पाँच भरत, औ पाँच क्षेत्र ऐरावत हैं।
इनमें चौबिस तीर्थेश चतुर्थ-काल में जिनवर भाषित हैं।।
इन वर्तमान दश चौबीसी को, मन-वच-तन से मैं पूजूँ।
सम्पूर्ण अमंगल दोष दूर कर, भव-भव के दुख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकर-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकर-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकर-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (स्रग्विणी छन्द)–

सिंधु को नीर भृंगार में लाय के, धार देऊँ प्रभो पाद में आय के।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य कर्पूर केशर मिली, पाद चर्चंत सम्यक्त्व कलिका खिली।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिए, पुंज को धारते स्वात्म संपत मिले।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद हैं, नाथ पद पूजते कामशर भंग हैं।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती कनक थाल में, पूजते भूख व्याधी हरूँ हाल में।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की, नाथ की आरती मोह को चूरती।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते, कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।7।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर केला अनंनास ले, नाथ पद चर्चते मुक्तिकांता मिले।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में, अर्घ्यअर्पण करूँ नाय के भाल मैं।
इंद्र शतवंद्य तीर्थंकरों को जजूँ, जन्मव्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।9।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीन दशचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(दश चौबासी के कुल 240 अर्घ्य)

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **शुद्ध बुद्ध परमात्मा, पाया ज्ञान प्रभात।**
परमानंद निजात्म में, मग्न रहें दिन-रात।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअजितनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअभिनंदननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपद्मप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीचंद्रप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीवासुपूज्यनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअरहनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्यं (दोहा)

ऋषभदेव को आदि ले, महावीरपर्यंत।
श्री चौबीस जिनेन्द्र को, पूजत हो भव अंत।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीऋषभदेवादिमहावीरस्वामिपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **कर्ममलीमस आत्मा, प्रभु तुम भक्ति प्रसाद।**
शुद्ध बुद्ध होवे तुरत, अतः नमूँ तुम पाद।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीबालचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसुव्रतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअग्निसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदिसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीश्रीदत्तनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीव्रतधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसोमचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीधृतदीर्घनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीशतायुष्यनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीविवसितनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीश्रेयोनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीविश्रुतजलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रासिंहसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीउपशांतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीगुप्तशासननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअनंतवीर्यनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअभिधाननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमरुदेवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री श्रीधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीश्यामकंठनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअग्निप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअग्निदत्तनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीवीरसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य (सोरठा)

श्री चौबीस जिनेश, जो ऐरावत क्षेत्र के।
देवें सौख्य हमेश, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीबालचंद्रादिवीरसेननाथपर्यंत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्ड भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **धर्मचक्र के अधिपती, त्रिभुवनपति जिनराज।**
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, नमूँ-नमूँ नतमाथ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीयुगादिदेवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसिद्धांतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमहेशनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपरमार्थनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसमुद्धरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीभूधरप्रभनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीउद्योतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीआर्जवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअभयनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअप्रकंपनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपद्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपद्मनंदिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रियंकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुकृतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीभद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमुनिचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपंचमुष्टिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीत्रिमुष्टिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीगांगिकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीगणनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसर्वांगनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीब्रह्मेन्द्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीइंद्रदत्तनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीनायकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पूर्वधातकी खण्ड के, धर्म चक्रधर धीर।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ मैं भवतीर।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीन श्रीयुगादि-देवप्रभृति-नायकनाथपर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **ज्ञान-दरश-सुख-वीर्यमय, गुण अनंत विलसंत।**
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, हरूँ सकल जग फंद।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअपश्चिमनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपुष्पदंतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअर्हदेवनाथ-

तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीचारित्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसिद्धानंदनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदगनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपद्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीउदयनाभिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीरुक्मेन्द्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीकृपालुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीप्रौष्ठिलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसिद्धेश्वरनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअमृतेन्दुनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीस्वामिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीभुवनलिंगनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसर्वरथनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमेघनंदनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदिकेशनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीहरिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअधिष्ठनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीशांतिकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदिस्वामितीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीकुंदपार्श्वनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीविरोचननाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्यं (नाराच छंद)

तोय गंध शालि पुष्प, आदि अष्टद्रव्य ले।
तीन रत्न हेतु आप, अर्घ्य से जजूँ भले।।
वर्तमान तीर्थनाथ, वंदना सदा करूँ।
धर्म्य शुक्लध्यान हेतु, अर्चना मुदा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **कोटिसूर्य से प्रभ अधिक, अनुपम आतम तेज।**
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, कर्माञ्जन हर हेत।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविश्वचंद्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीकपिलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रियतेजोनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रशमनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविषमांगनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीचारित्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रभादित्यनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमुंजकेशनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीवीतवासनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुराधिपनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीदयानाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसहस्रभुजनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीजिनसिंहनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीरैवतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीबाहुस्वामी-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमालिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअयोगनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअयोगिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीकामरिपुनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीआरंभनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीनेमिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीगर्भज्ञातिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीएकार्जितनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य (स्रग्विणी छंद) – सर्व संपत्ति धर नाथ अनमोल हो,
अर्घ्य से पूजते स्वात्म कल्लोल हो।
तीर्थकरतार चौबीस को मैं जजूँ,
कर्म निर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

सोरठा– **त्रिभुवन गुरु भगवान्, अनुपम सुख की खान हो।**
मैं पूजूँ धर ध्यान, सकल विघ्न घन को हरो।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसाधितनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीजिनस्वामि-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीस्तमितेन्द्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअत्यानंदनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपुष्पोत्फुल्लनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमंडितनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीप्रहतदेवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमदनसिद्धनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीहसदिंद्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीचंद्रपार्श्वनाथ-

तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअब्जबोधनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीजिनबल्लभनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसुविभूतिकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीककुदभासनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसुवर्णनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीहरिवासनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीप्रियमित्रनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीधर्मदेवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीप्रियरतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअश्वानीकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपर्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपार्श्वनाथ-

तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीचित्रहृदयनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य (अडिल्ल छंद)

वर्तमान चौबीस जिनेश्वर को जजूँ।
श्रद्धा भक्ति समेत, सतत उनको भजूँ।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, नमाऊँ भाल मैं।
जिनगुण संपति लहूँ, तुरत खुशहाल मैं।।।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

सोरठा– **ज्ञान चेतना रूप, परमेष्ठी चिद्रूप हैं।**
पुष्पांजलि से पूज, सकल दुःख दारिद हरूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीजगन्नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रभासनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीस्वरस्वामितीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीभरतेशनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीदीर्घाननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविख्यातकीर्तिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअवसानिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रबोधनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीतपोनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपावकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीत्रिपुरेश्वरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसौगतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीवासवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमनोहरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीशुभकर्मईशनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीइष्टसेवितनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविमलेन्द्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीधर्मवासनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रसादनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रभामृगांकतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीउज्झितकलंकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीस्फटिकप्रभनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीगजेन्द्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीध्यानजयनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य (दोहा) –**जल गंधादिक अर्घ्य, लिया भर थाल में।**
रत्नत्रय निधि हेतु, जजूँ त्रयकाल में।।
वर्तमान चौबीस, जिनेश्वर को जजूँ।
रोग शोक भय नाश, सहज निज सुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

सोरठा– **सिद्धिवधू भरतार, निज में ही रमते सदा।**
भक्ति-मुक्ति दातार, इसी हेतु भविजन जजें।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीशंकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअक्षवासनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनग्ननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनग्नाधिपतिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनष्टपाखंडनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीस्वप्नवेदनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीतपोधननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीपुष्पकेतुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीधार्मिकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीचंद्रकेतुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअनुरक्तज्योतिर्नाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीवीतरागनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीउद्योतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीतमोपेक्षनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमधुनादनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमरुदेवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीदमनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीवृषभस्वामितीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीशिलाताननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीविश्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमहेन्द्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनंदनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीतमोहरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीब्रह्मजनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्यं (गीता छंद) – **नीरादि में वररत्न धर के, अर्घ्य सुन्दर ले लिया।**
अनमोल निज संपत्ति हेतू, अर्घ्य तुम अर्पण किया।।
चौबीस तीर्थंकर जगत में, सर्वसुख दातार हैं।
जो पूजते तुम चरण अंबुज, वे भवोदधि पार हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के अर्घ्य

दोहा– **अलंकार भूषण रहित, फिर भी सुन्दर आप।**
आयुध शस्त्रविहीन हो, नमूँ नमूँ निष्पाप।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसर्वांगस्वामितीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपद्माकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीप्रभाकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीबलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीयोगीश्वरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसूक्ष्मांगनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीव्रतचलातीतनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीकलंबकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपरित्यागनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीनिषेधिकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीपापापहारिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुस्वामिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमुक्तिचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअप्राशिकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीजयचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमलाधारिनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीसुसंयतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीमलयसिंधुनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीअक्षधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीदेवधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीदेवगणनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीआगमिकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीविनीतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ श्रीरतानंदतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्यं (भुजंगप्रयात)

जलादी मिला अर्घ्य चरणों चढ़ाऊँ, निजात्मीक संपत्ति मैं शीघ्र पाऊँ।
जजूँ तीर्थकर के चरण पंकजों को, मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थ वर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीसी के

अर्घ्यं

दोहा– **समवसरण प्रभु आपका, दिव्य सभा का रूप।**
मध्य कमल आसन उपरि, राजें तिहुँ जग भूप।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीगांगेयकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीनल्लवासवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीभीमनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीदयाधिकनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसुभद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीस्वामिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीहनिकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावक्षेत्रस्थ श्रीनंदिघोषनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावक्षेत्रस्थ श्रीरूपबीजनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीवज्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसंतोषनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसुधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीफणीश्वरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीवीरचंद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीमेधानिकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीस्वच्छनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीकोपक्षयनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीअकामनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीधर्मधामनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीसूक्तिसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीक्षेमंकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीदयानाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीकीर्तिपनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थ श्रीशुभंकरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्यं (नाराच छंद)

तीनलोक संपदा जिनेन्द्रभक्त को मिले,
अर्घ्य को चढ़ावते निजात्म की कली खिले।

धर्मतीर्थनाथ की सदैव अर्चना करें,
पूर्ण हों स्वतंत्र वे यहाँ पे जन्म ना धरें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य - **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधि नवदेवताभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

अनंत दर्शन ज्ञान औ, सुख औ वीर्य अनंत।
अनंत गुण के तुम धनी, नमूँ नमूँ भगवंत।।1।।

–शेरछंद–

जैवंत तीर्थकर अनंत सर्वकाल के।
जैवंत धर्मवंत न हों वश्यकाल के।।
जै पाँच भरत पाँच ऐरावत में हो रहे।
जै भूत वर्तमान औ भविष्य के कहे।।1।।

इस जम्बुद्वीप में हैं भरत और ऐरावत।
इन दो ही क्षेत्र में सदा हो काल परावृत।।
जो पूर्व धातकी औ अपर धातकी कहे।
इन दोनों में भी भरत ऐरावत सदा कहे।।2।।

वर पुष्करार्ध पूर्व अपर में भी दोय जो।
हैं क्षेत्र भरत और ऐरावत प्रसिद्ध जो।।
इस ढाईद्वीप में प्रधान क्षेत्र दश कहे।
षट्काल परावर्तनों से चक्रवत् रहें।।3।।

इनके चतुर्थकाल में तीर्थेश हुए हैं।
जो वर्तमान काल के प्रसिद्ध हुए हैं।।
इस विध से दशों क्षेत्र के चौबीस जिनेश्वर।

ये दो सौ चालीस कहे धर्म के ईश्वर।।4।।

इनकी त्रिकाल बार-बार वंदना करूँ।
मैं भक्तिभाव से सदैव अर्चना करूँ।।
सम्पूर्ण कर्मपर्वतों की खण्डना करूँ।
निज 'ज्ञानमती' पाय, फेर जन्म ना धरूँ।।5।।

–घत्ता –

जय जय तीर्थंकर, धर्मचक्रधर, भव संकट हर तुमहिं भजूँ।
जय तीन रतनधर, निज संपतिवर, अनुपम सुख को नित्य चखूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पंचभरतपंचैरावतक्षेत्रसंबंधि-वर्तमानकालीनदशचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्य जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्ति करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 26)

विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा

स्थापना (गीता छंद)

सीमंधरादिक बीस तीर्थंकर विदेहों में रहें।
जिनकी सभा में आज भी, भविवृंद निजकल्मष दहें।।
उन विद्यमान जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।
पूजन करूँ अतिभक्ति से, निजतत्त्व की हो साधना।।1।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक (स्रग्विणी छंद)

पद्मद्रह का सलिल गंधवासित लिया।
नाथ चरणाब्ज में तीन धारा किया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर चंदन घिसा के लिया।
आप पादाब्ज में चर्च के अर्चिया।।बीस.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कौमदी धौत तंदुल लिये थाल में।
आप पादाग्र में पुंज को धार मैं।।बीस.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मौलसिरि मालती पुष्प ताजे लिए।
कामशर के जयी आपको अर्पिए।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ियाँ लड्डुकादी भरे थाल में।
पूजते भूख व्याधी नशे हाल में।।बीस.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति कर्पूर की ध्वांतहर जगमगे।
दीप से अर्चते ज्ञान ज्योती जगे।।बीस.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध खेऊं सदा अग्नि में।
कर्म संपूर्ण हों भस्म तुम भक्ति में।।बीस.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर नींबू बिजौरा लिया।
मोक्षफल हेतु प्रभु आपको अर्पिया।।बीस.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य में रत्न सुंदर मिले हैं भले।
पूजते आपको स्वात्म निधियाँ मिले।।बीस.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ नाथ पादाब्ज में।
शांति आत्यंतिकी शीघ्र हो नाथ में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुंद कल्हार जूही चमेली खिले।
पुष्प अंजलि करूँ सौख्य संपत मिले।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीसीमंधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीयुगमंधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीबाहुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीसुबाहुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीसंजातकनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीस्वयंप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीऋषभाननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीअनंतवीर्यनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीसूरिप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीविशालकीर्तिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीवज्रधरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीचन्द्राननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीचंद्रबाहुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीभुजंगमनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीईश्वरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीनेमिप्रभनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीवीरसेननाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीमहाभद्रनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीदेवयशोनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रसंबंधि-विद्यमानश्रीअजितवीर्यनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

पूर्णार्घ्य (कुसुमलता छंद)

ढाई द्वीप में पाँच मेरु, संबंधित पाँच विदेह महान।
प्रत्येकों में चार-चार, तीर्थंकर विद्यमान सुखखान।।
पंच कल्याणक के सब स्वामी, पंचपरावर्तन से दूर।
मैं पंचांग नमूँ प्रभु करिये, पंचमगति के सुख भरपूर।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादि अजितवीर्यपर्यंतविंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य - **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधि नवदेवताभ्यो नमः।**

जयमाला

–पंच चामर छंद –

जयो जयो जयो जिनेन्द्र इंद्रवृंद बोलते।
त्रिलोक में महागुरू सु आप नाम तोलते।।
सुधन्य धन्य धन्य आप साधुवृंद बोलते।
जिनेश आप भक्त ही तो निज किवाड़ खोलते।।1।।

समोसरण में आपके महा विभूतियाँ भरी।
अनेक ऋद्धि सिद्धियाँ सुआप पास में खड़ी।।
अनंत अंतरंग गुणसमूह आप में भरें।
गणीन्द्र औ सुरेन्द्र चक्रि आप संस्तुती करें।।2।।

हरिन्मणी के पत्र पद्मराग के सुपुष्प हैं।
अशोक वृक्ष देखते समस्त शोक अस्त हैं।।
अनेक देववृंद पुष्पवृष्टि आप पे करें।
सुगंध वर्ण-वर्ण के सुमन खिले-खिले गिरें।।3।।

जिनेश आपकी ध्वनी अनक्षरी सुदिव्य है।
समस्त भव्य कर्ण में करे सुअर्थ व्यक्त है।।
न देशना कि चाह है न तालु ओंठ पुट हिलें।
असंख्य जीव के धुनी से चित्तपद्मिनी खिलें।।4।।

सुचामरों कि पंक्तियाँ ढुरें सुसूचना करें।
नमें तुम्हें सुभक्त वे हि ऊर्ध्व में गमन करें।।
सुसिंहपीठ आपका अनेक रत्न से जड़ा।
विराजते सुआप हैं अतः महत्त्व है बढ़ा।।5।।

प्रभासुचक्र कोटि सूर्य से अधिक प्रभा धरे।
समस्त भव्य के उसी में सात भव दिखा करें।
सु देवदुंदुभी सदा गभीर नाद को करे।
असंख्य जीव का सुचित्त खींच के वहाँ करे।।6।।

सफेद छत्र तीन जो जिनेश शीश पे फिरें।
प्रभो त्रिलोकनाथ आप सूचना यही करें।।
सुप्रातिहार्य आठ ये हि बाह्य की विभूतियाँ।
सुरेश ने रचे तथापि आप पुण्य राशियाँ।।7।।

प्रभो तुम्हें महान मुक्ति बल्लभापती कहे।
प्रभो तुम्हीं प्रधान ईश सर्व विश्व के कहे।।

प्रभो तुम्हें सदा नमें सु भक्ति आप में धरें।
अनंतकाल तक वहीं अनंत सौख्य को भरें।।8।।

–दोहा–

तुम गुण सूत्र पिरोय स्रज, विविधवर्णमय फूल।
धरें कंठ उन 'ज्ञानमति', लक्ष्मी हो अनुकूल।।

ॐ ह्रीं सीमंधरादिविंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 27)

ढाईद्वीप नवदेवता पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

तेरहद्वीपों में ढाईद्वीप तक, कर्मभूमियाँ मानी हैं।
सब इक सौ सत्तर भव्यहेतु, ये शिवपथ की रजधानी हैं।
इनमें नवदेव रहें उत्तम, उन सबको पूजूँ भक्ती से।
आह्वानन स्थापन करके, गुणमणि को ध्याऊँ युक्ती से।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद)

सरयूनदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्यसुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।

कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल अक्षत से, प्रभु नव पुंज चढ़ाऊँ।
निजगुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरें मनोरथ खाली।।
कर्मभूमि के नवेदवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे, सब ज्ञान भारती प्रगटे।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्निपात्र में, खेवत उठे सुगंधी।
कर्म जलें सब सौख्य प्रगट हों, फैले सुयश सुगंधी।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आडू लीची सेब संतरा, आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू, शत-शत शीश झुकाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
भक्तिभाव से गीत नृत्य कर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
कर्मभूमि के नवदेवों को, पूजत निजसुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र भगाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिनचरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ निजगुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

जम्बूद्वीप की 34 कर्मभूमि के 34 अर्घ्य

–दोहा–

इन सब ढाईद्वीप में, कर्मभूमि चहुँदिक्क।
नवदेवों को नित जजूँ, पुष्पांजलि कर नित्य।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसरितदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखेपअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिदक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिउत्तरदिग्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डेअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

जलगंधादिक लेय, वसुविध अर्घ्य चढ़ाऊँ।
अतुल अनघपद हेतु, पूजूँ ध्यान लगाऊँ।।
नवदेवों को नित्य, श्रद्धा-भक्ति जजूँ मैं।
परमानंद स्वरूप, निजपद मुक्ति भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिकसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप की 34 कर्मभूमि के 34 अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – पूर्वधातकीखण्ड में, कर्मभूमि चौंतीस।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, नमूँ नमाकर शीश।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसरितदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्ड अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिदक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिउत्तरदिग्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

नवदेवता नित पूज्य हैं, इंद्रादि गण से वंद्य हैं।
जो भक्तगण नित पूजते, वे भी जगत् अभिनंद्य हैं।।
जल गंध आदिक अर्घ्य ले, इस हेतु मैं अर्चन करूँ।
अति शीघ्र ही सब कर्महन कर, मुक्ति कन्या वश करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशतत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक-सर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप की 34 कर्मभूमि के 34 अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

परम पुरुष परमात्मा, परमानंद निमग्न।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, करूँ मोह अरि भग्न।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्य-खण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसरितदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्ड अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिदक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिउत्तरदिग्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्यं (अडिल्ल छंद)

जल गंधादिक लेकर, अर्घ्य बनायके।
पूजूँ भक्ति समेत, अर्घ्य उर लायके।।
नवदेवों को नित्य, जजूँ मन लायके।।
समकित निधि ले हर्षूं, जिनगुण गाय के।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक सर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप की 34 कर्मभूमि के 34 अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – पूरब पुष्करद्वीप में, कर्मभूमि चौंतीस।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, नमूँ नमूँ नत शीश।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसरितदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिदक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिउत्तरदिग्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

श्री नवदेव इंद्रगण वंदित, जन-जन के हितकारी।
जो जन वंदन-पूजन करते, वे लभते शिवनारी।।
जल गंधादिक अर्घ्य चढ़ाकर, पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
चिन्मय चिंतामणि निज आतम, पाऊँ पुण्य कमाके।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक-सर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप की 34 कर्मभूमि के 34 अर्घ्य

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा – पश्चिम पुष्करद्वीप में, जिनवर मुनिगण नित्य।
जिनगृह जिनप्रतिमा जजूँ, पुष्पांजलि कर इत्य।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहआवर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहलांगलावर्तादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहमंगलावतीदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसरितदेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितार्यखण्ड अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितार्यखण्डे अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिदक्षिणदिग्भरतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिउत्तरदिग्ऐरावतक्षेत्रस्थितार्यखण्डे-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (नाराच छंद)

तोय गंध शालि पुष्प, आदि अष्ट द्रव्य ले।
तीन रत्न हेतु नव-देव को जजूँ भले।।
तीर्थनाथ आदि की, सदैव वंदना करूँ।
धर्मशुक्ल ध्यान हेतु, नित्य अर्चना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितत्रैकालिक-सर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधि नवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

–नरेन्द्र छंद –

जय जय श्री अरिहंत देव, जय सिद्धप्रभू सुखकारी।
जय जय सूरी पाठक साधू, भव-भव दुःख परिहारी।।
जय जिनधर्म जिनेश्वर वाणी, जय जिनबिंब जिनालय।
नवदेवों को नित्य नमूँ मैं, ये हैं सर्व सुखालय।।1।।

जंबूद्वीप का भरतक्षेत्र है, पण शत छब्बिस योजन।
छह खण्डों में आर्यखण्ड इक, यहाँ काल परिवर्तन।।
चौथे युग में अर्हंतादिक, नवों देव रहते हैं।
पंचम युग में आचार्यादिक, सात देव रहते हैं।।2।।

ऐरावत में भरतक्षेत्र सम, सर्व व्यवस्था मानी।
बत्तिस क्षेत्र विदेहों में नित, वर्ते जिनवर वाणी।।
कच्छा देश विदेह दो सहस, दो सौ बारह योजन।
भरतक्षेत्र में चतुर्गुणाधिक, सब विदेह हैं उत्तम।।3।।

चौंतिस आर्यखण्ड में इक-इक, उपसागर हैं माने।
यहाँ भरत में उपसागर, उपनदियाँ बहुत बखाने।।
कर्मभूमि में मनुष धर्म कर, स्वर्ग-मुक्ति पद पाते।
रत्नत्रय से निज निधि पाकर, शाश्वत सुख पा जाते।।4।।

ऐसे ही धातकी खण्ड में, पुष्करार्ध में जानो।
सब मिल कर्मभूमियाँ इक सौ-सत्तर हैं सरधानो।।
शाश्वत कर्मभूमियाँ इक सौ-साठ विदेहों की हैं।
पाँच भरत पंचैरावत की, दश अशाश्वत की हैं।।5।।

शुभ से पुण्यास्रव पापास्रव, अशुभ भाव से होता।
इससे आठ कर्म बंध जाते, फल पाते दुःख होता।।
कोई ज्ञान प्रशंसा करते, उसमें ईर्ष्या होती।
जानबूझकर ज्ञान छिपावे, तब निन्हव का दोषी।।6।।

नहीं बताना ज्ञान अन्य को, यह मात्सर्य दुखारी।
ज्ञान-ध्यान में विघ्न डालना, अंतराय है भारी।।
अन्य प्रकाशित ज्ञान रोककर, आसादन कर लेना।
सत्य ज्ञान में दोष लगा, उपघात दोष कर लेना।।7।।

ज्ञान विषय में इन कार्यों से, ज्ञानावरण बंधे है।
दर्शनविषयक इन कार्यों से, दर्शनरज चिपके है।।

हे प्रभु! मुझ घर कर्मशत्रु ये, प्रतिक्षण आते रहते।
रुक जाते फिर समय पायकर, ज्ञान दरस हैं ढकते।।8।।

नाथ! इन्हीं से मैं अज्ञानी, पूर्ण ज्ञान नहिं प्रगटे।
प्रभो! युक्ति ऐसी दे दीजे, 'ज्ञानमती' बन चमके।।
केवलज्ञान स्वभावी आत्मा, केवलदर्श स्वभावी।
नाथ! आपकी कृपा प्राप्तकर, बनूँ निजात्म स्वभावी।।9।।

–दोहा–

इंद्रवंद्य नवदेवता, कर्मभूमि में सिद्ध।
अन्य जगह बस दो रहें, जिनगृह जिनवर बिंब।।10।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 28)

पंचकल्याणक तीर्थ पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

वर पंचकल्याणक जगत में, इंद्रगण से वंद्य हैं।
त्रैलोक्यपति तीर्थंकरों की, चरणरज से धन्य हैं।।
मैं स्वात्मसिद्धी प्राप्ति हेतू, सर्व तीर्थों को जजूँ।
आह्वाननादी विधि करूँ, सम्पूर्ण कल्याणक भजूँ।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरपंचकल्याण्क क्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रसमूह! अत्रअवतर अवतर संवौष्ट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरपंचकल्याण्क क्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरपंच-कल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (भुजंगप्रयातछंद)

पयोसिंधु को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो! आपके पाद धारा कराऊँ।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन कपूरादि वासा।
चढ़ाते तुम्हें सर्व संताप नाशा।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःचंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोराशि के फेन सम तंदुलों को।
चढ़ाऊँ तुम्हें सौख्य अक्षय मिले जो।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केवड़ा चंपकादी सुमन हैं।
तुम्हें पूजते काम व्याधी शमन है।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःपुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू भरा थाल लाऊँ।
क्षुधा डाकिनी नाश हेतू चढ़ाऊँ।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणी दीप ज्योती भुवन को प्रकाशे।
करूँ आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशे।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःदीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप खेऊँ दशांगी।
करम धूम्र फैले चहूँ दिक् सुगंधी।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःधूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरंगी मुसम्बी अनन्नास लाऊँ।
महामोक्ष फल हेतु आगे चढ़ाऊँ।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःफलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से थाल भर के।
चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य रत्नादि धर के।।
महापंचकल्याण तीर्थादि पूजूँ।
महापंच संसार से शीघ्र छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित तीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्रसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य दुःख अंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रस्थ पंचकल्याणक भूमि आदि के 27 अर्घ्य

दोहा– **तीर्थंकर कल्याण से, भूमी पावन मान्य।**
पुष्पांजलि से पूजते, भव्य लहें धन-धान्य।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर-गर्भजन्मकल्याणक-अजित-अभिनंदनसुमति-अनंतनाथ-गर्भ-जन्म-दीक्षा-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र शाश्वत अयोध्या-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरि तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पार्श्वनाथगर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र चंद्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र-काकंदीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र-भद्रिकावतीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणक-पवित्र चंपापुरी-मंदारगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र कंपिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्ररत्नपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुश्चतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-नमिनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-गर्भजन्मकल्याणकपवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामी-गर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र कुण्डलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव-दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रप्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र अहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामि-केवलज्ञानकल्याणकपवित्रजृंभिकाग्रामतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव-निर्वाणकल्याणकपवित्रकैलाशगिरिसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-दीक्षा-केवलज्ञान-निर्वाणकल्याणकपवित्र गिरनार-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ-पद्मप्रभु-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-पुष्पदंत-शीतल-श्रेयांस-विमल-अनंत-धर्म-शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ-मल्लिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-नमिनाथ-पार्श्वनाथविंशति-तीर्थंकरनिर्वाणकल्याणकपवित्र श्रीसम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामि-निर्वाणकल्याणकपवित्र पावापुरीसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थ श्रीऋषभसेनादिद्वापंचाशदधिकचतु-र्दशशतगणधरदेवतत्तन् निर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थ चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित-अष्टाविंशतिलक्ष-अष्टचत्वारिंशत्सहस्रसर्वसाधुगणतत्तन् निर्वाणक्षेत्र-समाधिक्षेत्र-परम्परागतसर्वसाधुगणतत्तन् निर्वाणक्षेत्र-समाधिक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थितमांगीतुंगीपर्वतादिसिद्धक्षेत्र-महावीरजीपद्मपुरादि-अतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थ चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित ब्राह्मीप्रमुख पंचाशल्लक्ष-षट्पंचाशत्सहस्रद्वयशतपंचाशदार्यिका-परम्परागत सर्वार्यिका तत्तत्समाधिक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

कर्म मर्महर तीर्थकर, प्रीतिंकर सुखकार।
उन कल्याणक तीर्थ को, प्रणमूँ बारम्बार।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थितवर्तमानकालीनतीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ढाईद्वीप के पंचकल्याणकभूमि आदि के 10 अर्घ्य

दोहा– ढाईद्वीप के तीर्थ हैं, शत इन्द्रों से वंद्य।
पुष्पांजलि से पूजते, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकरपंचकल्याणक-क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितमहामुनिनिर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकरपंच-कल्याणकक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितमहामुनि-निर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित-तीर्थंकरपंचकल्याणकक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितमहामुनि-निर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितमहामुनिनिर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थिततीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थितमहामुनि-निर्वाणक्षेत्र सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

पूर्णार्घ्य (तोटक छंद)

जल गंध प्रभृति वसु अर्घ्य लिया।
शिव हेतू अर्घ्य समर्प्य दिया।।
सब ढाईद्वीप के तीर्थ जजूँ।
शिव प्राप्ति हेतु निज आत्म भजूँ।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थितसर्वतीर्थंकर-पंचकल्याणकक्षेत्र सर्वमहामुनिनिर्वाणसर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।।1।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

—दोहा—

तीनलोक की सम्पदा, करें हस्तगत भव्य।
तुम जयमाला कंठधर, पूरें सब कर्तव्य।।1।।

चाले-हे दीनबंधु.....

जैवंत मुक्तिकन्त देव देव हमारे।
जैवंत भक्त जंतु भवोदधि से उबारें।।

हे नाथ! आप जन्म के छह मास ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मातु के महले।।1।।

माता की सेवा करती थीं श्री आदि देवियाँ।
अद्भुत अपूर्व भाव धरें सर्व देवियाँ।।
जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्तिभाव से।।2।।

प्रभु गर्भकल्याणक महा उत्सव विधी करें।
माता-पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।
हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कंप से आश्चर्य हो उठे।।3।।

इन्द्रों के मुकुट आप से ही आप झुके हैं।
सुरकल्पवृक्ष हर्ष से ही फूल उठे हैं।।
वे सुरतरु स्वयमेव सुमनवृष्टि करे हैं।
तब इन्द्र आप जन्म जान हर्ष भरे हैं।।4।।

तत्काल इन्द्र सिंहपीठ से उतर पड़ें।
प्रभु को प्रणाम करके बार-बार पग पड़ें।।
भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।5।।

सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिलके महोत्सव को मनाते।।
जब आप हों विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षाविधि उत्सव महामुद से मनावते।।6।।

जब घातिया को घात ज्ञानसम्पदा भरें।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण विभव करें।
तुम दिव्य वच पीयूष को पीते असंख्यजन।
क्रम से करें वे मुक्तिवल्लभा का आलिंगन।।7।।

जब आप मृत्यु जीत मुक्तिधाम में बसें।
सिद्ध्यंगना के साथ परमानंद सुख चखें।।
सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणकपती को शीश नावते।।8।।

इन ढाईद्वीप में समस्त कर्मभूमि में।
आचार्य उपाध्याय साधुओं को नित नमें।।
वे साधु कर्मनाश मोक्ष प्राप्त कर रहे।
उन सबको नमूँ भक्ति से वे सिद्ध हो रहे।।9।।

सब गणधरों के चरण-कमल नित्य मैं नमूँ।
उनके सभी निर्वाणक्षेत्र को भि नित नमूँ।।
सब तीन न्यून नव करोड़ साधु को नमूँ।
उनके समाधिक्षेत्र-मुक्तिक्षेत्र को नमूँ।।10।।

जो ब्राह्मी आदि गणिनी और आर्यिकाएँ भी।
इन सबकी वंदना से गुणरत्न भरें भी।।
इनके समाधिक्षेत्र भी पवित्र मान्य हैं।
उनकी करूँ मैं वंदना वे सौख्य खान हैं।।11।।

इन सर्व तीर्थक्षेत्र की मैं वंदना करूँ।
निज आत्मा को तीर्थ बनाकर सुखी करूँ।।
अतिशायि क्षेत्र की सदैव अर्चना करूँ।
सम्पूर्ण अतिशयों से स्वात्म संपदा भरूँ।।12।।

जिन पादपद्म से पवित्र तीर्थ बन रहे।
उन तीर्थनाथ को हृदय में धार सुख लहें।।
तीर्थंकरों को तीर्थ को निर्वाण तीर्थ को।
मैं बार-बार नित्य नमूँ सिद्धि हेतु जो।।13।।

हे नाथ! आप कीर्ति कोटि ग्रंथ गा रहे।
इस हेतु से ही भव्य आप शरण आ रहे।।
मैं आप शरण पाय के सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस 'ज्ञानमती' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।14।।

–दोहा–

पाँच कल्याणक पुण्यमय, हुए आपके नाथ।
बस एकहि कल्याण मुझ, कर दीजे हे नाथ।।15।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वीयद्वीपसंबंधि सर्वपंचकल्याणकक्षेत्र महामुनिनिर्वाण सर्वअतिशयक्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 29)

समवसरण पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

कर्मभूमि के आर्यखण्ड में, तीर्थंकर विहरे हैं।
समवसरण के मध्य राजते, भविजन पाप हरे हैं।।
देश विदेहों में तीर्थंकर, समवसरण नित रहता।
भरतैरावत में चौथे ही, काल में यह दिख सकता।।1।।

–दोहा–

जिनवर समवसरण यही, धर्मसभा की भूमि।
आह्वानन कर मैं जजूँ, मिले आठवीं भूमि।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव-समवसरणसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव-समवसरणसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव-समवसरणसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (सोरठा)

सिंधुनदी को नीर, जल से पूजत मन शुची।
मिलता ज्ञान शरीर, समवसरण पूजूँ सदा।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल गंध सुगंध, चंदन चर्चे अघ टले।
मिलता सौख्य अनिंद्य, समवसरण पूजूँ सदा।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि स्वच्छ अखंड, पुंज चढ़ाते अखय पद।
होवे ज्ञान अखंड, समवसरण पूजूँ सदा।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला कमल गुलाब, पुष्प सुगंधित अर्पते।
मिटे सुतन-मन व्याधि, समवसरण पूजूँ सदा।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, बहुविध चरू चढ़ावते।
होवे क्षुधा विदूर, समवसरण पूजूँ सदा।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाय, करूँ आरती तम टले।
भेद ज्ञान प्रगटाय, समवसरण पूजूँ सदा।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर से मिश्र, धूप सुगंधित खेवते।
घातिकर्म हो भस्म, समवसरण पूजूँ सदा।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लीची आम अनार, सरस फलों से पूजते।
मिले आत्म सुखसार, समवसरण पूजूँ सदा।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक लेय, अर्घ बनाकर पूजते।
मिलता सौख्य अमेय, समवसरण पूजूँ सदा।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा देत, शांती हो सब विश्व में।
पूर्ण स्वस्थता हेत, समवसरण पूजूँ सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

मल्ली हरसिंगार, पुष्पांजलि अर्पण किए।
हो नवनिधि भण्डार, समवसरण पूजूँ सदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक 170 समवसरण अर्घ्य

–दोहा–

समवसरण यजते मिले, सर्व ऋद्धि नवनिद्धि।
पुष्पांजली चढ़ावते, सर्व मनोरथ सिद्ध।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जम्बूद्वीप के 34 समवसरण के 34 अर्घ्य

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

त्रिभुवनपति त्रिभुवन धनी, त्रिभुवन के गुरु आप।
त्रिभुवन के चूड़ामणी, नमूँ नमूँ नत माथ।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेव समवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप के 34 समवसरण के 34 अर्घ्य

दोहा– चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फल दातार।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, पाऊँ सौख्य अपार।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

जो समवसरण के स्वामी हैं, वे जिनवर शिवलक्ष्मी वरते।
वे शरणागत के रक्षक हैं, भक्तों को मोक्ष दिला सकते।।
मैं निज समतारस का इच्छुक, अतएव शरण में आया हूँ।
बस पूरण अर्घ्य चढ़ा करके, गुण पूरण करने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप के 34 समवसरण के 34 अर्घ्य

दोहा– **धर्मामृतमय वचन की, वर्षा से भरपूर।**
भविजन कलिमल धोवते, करो हमें सुखपूर।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे - अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

तीर्थंकर जिनदेव को, पूजूँ भक्ति समेत।
पूरण अर्घ्य चढ़ायहूँ, पूर्ण सौख्य के हेतु।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप के 34 समवसरण के 34 अर्घ्य

दोहा— **सब कर्मों में एक ही, मोहकर्म बलवान।**
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्यं (तोटक छंद)

वसु द्रव्य मिलाकर अर्घ्य लिया।
तुम अर्पत सौख्य अनर्घ्य लिया।।
तीर्थेश समवसृति सौख्य प्रदा।
शत इंद्र जजें प्रभुपाद मुदा।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप के 34 समवसरण के 34 अर्घ्य

सोरठा– स्थिति औ अनुभाग, बंध कषायों से कहा।
इसके नाशन हेतु, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यविभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

परमहंस परमेश श्री तीर्थेश जिनेशा।
परमपिता भुवनेश नमत शतेन्द्र हमेशा।।
सात भयों से दूर पूर्ण अभयदाता।
जो पूजें तुम नित्य पावें अनुपम साता।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चतुस्त्रिंशत्कर्मभूमिस्थित अचिन्त्य-विभूतियुक्त श्रीतीर्थंकरदेवसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य–

इक सौ सत्तर कर्मभूमि में, भूत भावि संप्रति में।
तीर्थंकर के समवसरण थे, होते अरु होवेंगे।।
उन सबको पूर्णार्घ्य समर्पित, करके निजपद पाऊँ।
चौंतिस अतिशय सहित देव, तीर्थंकर के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित अचिन्त्यविभूतियुक्तश्रीतीर्थंकरदेव-समवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – समवसरण तीर्थेश के, जिनमंदिर सत्यार्थ।
गाऊँ गुणमाला अबे, सिद्ध करें सर्वार्थ।।1।।

छंद-हे दीनबंधु.....

जय जय जिनेन्द्र तीर्थनाथ, गुणमणी भरें।
जय जय जिनेन्द्र तीर्थनाथ, जग सुखी करें।।
जब घाति कर्म को हना, तब केवली हुए।
तुम ज्ञान में तब लोक अरु, अलोक दिख गए।।2।।

तब इंद्र की आज्ञा से, धनपती यहाँ आया।
अद्भुत अपूर्व रम्य, समवसरण बनाया।।
रवि बिंब सदृश गोल, इंद्र नीलमणी का।
इस भूमि से वह बीस सहस, हाथ था ऊँचा।।3।।

चारों दिशा में सीढ़ियाँ हैं, बीस सहस ही।
वे एक एक हाथ ऊँची, सर्व सुखमयी।।
चारों दिशा में चार, मानस्तंभ बने हैं।
जो दर्श से ही मानियों का, मान हरे हैं।।4।।

पहला है धूलिसाल कोट, सर्व रत्न का।
फिर चैत्य के प्रासाद की, मानी है भूमिका।।
फिर नाट्यशाला फेर, मानस्तंभ की भूमी।
फिर वेदिका प्रथम है पुनः, खातिका वनी।।5।।

वेदी लता भूमी के बाद, कोट दूसरा।
उपवन वनी व नाट्यशाला, वेदि ध्वज धरा।।
परकोट तृतीय कल्पभूमि, नाट्यशालिका।
वेदी भवन धरा स्तूप, कोट चतुर्था।।6।।

पश्चात् श्रीमंडप की भूमि, जो फटिकमयी।
वेदी के बाद प्रथम द्वितिय, तृतिय पीठ ही।।
इसके उपरि है गंधकुटी, मध्य सिंहासन।
उस पर सहस्रदलमयी, स्वर्णिम कमल आसन।।7।।

चतुरंगुल अधर तीर्थनाथ, इस पे राजते।
निज दिव्यध्वनी से, असंख्य भव तारते।।
बालक व वृद्ध अंध बधिर, पंगु आदि भी।
मुहूर्त में ही चढ़ते लोग, सीढ़ियाँ सभी।।8।।

नाटक गृहों में अप्सरा, अभिनय विविध करें।
तीर्थंकरों के पंच-कल्याणक को विस्तरें।।
गणधर व चक्रवर्ति, पुण्य पुरुष चरित का।
नाटक करें सब लोक का, मन हर रहीं नीका।।9।।

मिथ्यादृशी पाखंडि शूद्र, जन वहाँ नहीं।
जो दर्श करें नाथ का, वे भव्य हैं सही।।
बाधा बिना बैठे सभी, निज निज के ही कोठे।
मुनिगण व आर्यिका व, देव देवि असंख्ये।।10।।

नर पशु सभी निज निज के, वैरभाव छोड़ के।
प्रभु का सुनें उपदेश, रुचि से हाथ जोड़ के।।
प्रभु वीर का समवसरण, योजन सु एक था।
फिर भी असंख्य देव का, निवास वहाँ था।।11।।

अतिशय जिनेन्द्र देव की, अवगाहना शक्ती।
जो भव्य हैं वे ही वहाँ, कर सकते हैं भक्ती।।
भव्यों के पुण्य से प्रभू का, श्रीविहार हो।
दुर्भिक्ष रोग शोक, उपद्रव न वहाँ हो।।12।।

इन ढाईद्वीप में ही रहें, कर्मभूमियाँ।
जो एक सौ सत्तर कहीं हैं, धर्मभूमियाँ।।
ये कर्मभूमि शाश्वत, मानी विदेह की।
जो इक सौ साठ जानिए, वे धर्मभूमि ही।।13।।

इनमें सदा ही काल, मोक्षमार्ग चल रहा।
तीर्थेश चक्रवर्ती आदि, जन्मते यहाँ।।

जो पाँच भरत पाँच-ऐरावत प्रसिद्ध हैं।
इनमें चतुर्थकाल में ही, तीर्थकर कहें।।14।।

यदि एक साथ एक सौ-सत्तर ही भूमि में।
तीर्थेश जन्म लेवें तो, अधिकतम रहें।।
कहते हैं श्री अजितनाथ के समय हुए।
ये एक सौ सत्तर जिनेन्द्र-समवसरण में।।15।।

इन तीर्थनाथ की सदा मैं वंदना करूँ।
निज आत्मा को तीर्थ बना, भवजलधि तरूँ।।
ये सार्वभौम नाथ की हैं, धर्मसभाएँ।
जो इनको नमें निज को, सर्वगुण को सजाएँ।।16।।

–दोहा–

जो तीर्थंकर पूजते, समवसरण पूजंत।
सकल 'ज्ञानमति' संपदा, वे पा लेत तुरंत।।17।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थिततीर्थंकरदेव-समवसरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(पूजा नं. 30)

सिद्ध पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

इन ढाईद्वीपों में यहाँ जो, जन्मते नरश्रेष्ठ हैं।
वे ही करम हन सिद्ध होते, वे प्रमुख परमेष्ठि हैं।।
इन कर्मभूमी से हुए, सब सिद्ध की पूजा करूँ।
सब सिद्ध का आह्वान कर, वर भक्ति से अर्चा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद)

सीतानदि को तीरथमय जल, पयसम मुनि मनहारी।
जन्म जरा मृति ताप तीन हर, धार करूँ हितकारी।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनद्रव सम कुंकुम केशर, भ्रमर समूह रमे हैं।
सिद्धों की अर्चा करने से, भव वन में न भ्रमे हैं।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध सिंधु के फेन सदृश अति, उज्ज्वल अक्षत लाए।
अमृत सम पुंजों को सब, सिद्धों के निकट चढ़ाएँ।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही चमेली मल्ली चंपा, सुवरण पुष्प मंगाए।
घ्राण नयन प्रिय सिद्धप्रभू को, पुष्पांजली चढ़ाएँ।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा मोदक खाजे, पूरणपोली लाए।
क्षुधारोग हर सिद्धचक्र को, पूजन मध्य चढ़ाएँ।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीप रतनमय ज्योती, दशदिश तम हरता है।
सिद्धगणों की करें आरती, मोहतिमिर नशता है।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागरु चंदन मलयागिरि, धूप सुगंधित लेके।
दशदिश सुरभित करूँ धूम से, धूप अगनि में खेके।।

ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला सेव मोसम्बी, श्रीफल बहुफल लाए।
घ्राण नयन सुखकारी फल को, शिवफल हेतु चढ़ाएँ।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य संजोकर, उसमें रतन मिलाऊँ।
सिद्धप्रभू को अर्घ्य चढ़ाकर, स्वयंसिद्ध पद पाऊँ।।
ढाईद्वीप से सिद्ध हुए जो, होते हैं होवेंगे।
उनको मैं पूजूँ वे मुझको, सर्वसिद्धि देवेंगे।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिसर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **प्रासुक मिष्ट पवित्र जल, क्षीर जलधि सम श्वेत।**
प्रभुपद धारा मैं करूँ, तिहुंजग शांती हेत।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प ले, पुष्पांजली करंत।
इंद्र चक्रिपद पायकर, अनुपम सौख्य धरंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक 8 अर्घ्य

दोहा – **भूत भविष्यत् काल के, वर्तमान के सिद्ध।**
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सिद्धि नव निद्धि।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं लवणसमुद्रस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्त-सर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसमुद्रस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्य सर्वस्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पूर्णार्घ्यं (मोतीदाम छंद)- **लिया मैं अर्घ्य भराकर थाल।**
चढ़ाऊँ भक्ती से नत भाल।।
त्रिकालिक सब सिद्धों को आज।
जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिजल-स्थल-कर्मभूमि-भोगभूमि-आर्यखण्ड-म्लेच्छखण्ड-नदी-वृक्षादिस्थानेभ्यः उपसर्ग-अनुपसर्गादिनिमित्त सिद्धापदप्राप्त-सर्वसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सिद्धशिला पैंतालिस लाख, सुयोजन मनुज लोक प्रम है।
सर्वत्र अनंतानंत सिद्ध से, भरी अकृत्रिम अनुपम है।।
गणधर मुनिगण से वंद्य शिला, इसको मेरा शत-शत वंदन।
यह सिद्ध शिला न मिले जब तक, तब तक इसको शत-शत वंदन।।2।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितपंचचत्वारिंशल्लक्षयोजनप्रमाणसिद्धशिलायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

—त्रिभंगी छंद—

जय जय सब सिद्धा, कहे अनंता, लोकशिखर पर राज रहे।
जय अष्टगुणों युत, नंत गुणों युत, नहिं किंचित् भी पास रहे।।
जय नित्य निरंजन, भवि आनंदन, मुनि मन कमल विकास करें।
जब त्रिभुवन के गुरु, गुणमणि से गुरु, भविजन ही तुम ध्यान धरें।।1।।

—शंभु छंद—

इन ढाईद्वीप में कर्मभूमियाँ, इक सौ सत्तर मानी हैं।
इन सबसे मनुज सिद्ध होते, यह कहती श्रीजिनवाणी है।।
जो भोगभूमियाँ म्लेच्छखंड, नदियाँ पर्वत वृक्षादिक हैं।
उपसर्ग निमित्त महामुनिगण, उन स्थल से भी सिद्धि लहें।।2।।
कोई नर साढ़े तीन हाथ, कुछ सवा पाँच सौ धनुष तुंग।
नर शिव पाते जघन्य उत्तम, मध्यम भी मधि ऊँचाई युत।।
इन अगणित अवगाहन संयुत, जो सिद्ध हुए उन त्रैकालिक।
सब सिद्धों को नितप्रति पूजूँ, मेरी आत्मा हो स्वयंसिद्ध।।3।।
कोई मानव कुछ अधिक आठ, वर्षों की जघन आयु लेकर।
कोई इक कोटी पूर्व वर्ष की, उत्तम आयू को लेकर।।
मध्यम के भेद मध्यगत सब, इन आयू से जो सिद्ध हुए।
उन सबको पूजूँ भक्ति लिए, अपमृत्यु टले बस इसीलिए।।4।।
कोई नर स्त्रीभाववेद, व नपुंसक भाववेद लेकर।
कोई नर पुरुष भाववेदी, ये शिवपद पाते तीनों नर।।
पर निश्चित ही हो द्रव्यपुरुष, सिद्धान्त यही बतलाता है।
सम विषमवेद से सिद्ध हुए, उन वंदूँ वे सुखदाता हैं।।5।।
कोई मुनि जन पद्मासन से या, खड्गासन से सिद्ध बनें।
सिद्धी का आसन अन्य नहीं, यह सब सिद्धान्तग्रंथ वर्णें।।
इन सबके भी आकार वहाँ, आत्मा प्रदेश से बन जाते।
हो देह नष्ट फिर भी वैसे, मानें उन वंदूँ मन लाके।।6।।
सब विदेहक्षेत्र में कर्मभूमि, शाश्वत वहं काल चतुर्थ सदा।
भरतैरावत में छहकालों का, परिवर्तन होता रहता।।

अवसर्पिणी चौथे काल तथा, उत्सर्पिणी काल तीसरे से।
हुंडावसर्पिणी तिसरे में, शिव पहुँचे नमूँ उन्हें रुचि से।।7।।
छह मास आठ समयों में छह सौ, आठ मुनी शिव जाते हैं।
इस तरह अनंतानंत भूत-भावी नर सिद्ध कहाते हैं।।
उन सभी सिद्ध परमेष्ठी की, पूजा अर्चा स्तुती करूँ।
निज आत्म सुधारस पी करके, निज में ही निज को प्रगट करूँ।।8।।
तीर्थंकर होकर पंचकल्याणक, त्रय द्वय पा बहु सिद्ध हुए।
चक्रेश्वर हलधर कामदेव, उत्तम पद पा बहु सिद्ध हुए।।
सामान्य मनुज अगणित अनंत, सब कर्म नष्ट कर सिद्ध हुए।
उन सब त्रैकालिक सिद्धों को, मैं नमूँ सदा धर भक्ति हिये।।9।।
सब गिरि वन पर्वत गुफा नदी, सरवर तरु कूप तड़ागों से।
तलघर नभ आंगन छिद्र बिलादिक, जल थल के सब भागों से।।
मेरु की चूलिका से जहाँ से, है बालमात्र अंतर ऊपर।
उस जगह मेरु की गुफा आदि से, सिद्ध हुए वंदूँ रुचिधर।।10।।

–घत्ता –

जय सिद्धिवधूवर, जगपरमेश्वर, परमपिता रक्षा कीजे।
मुझ 'ज्ञानमती' को, निजपद दे दो, फेर भले कुछ मत दीजे।।11।।

दोहा – ढाईद्वीप से सिद्धपद, प्राप्त करें जो भव्य।
उन सबको नित भक्ति से, जजत मिले पद नव्य।।12।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपद्वयसमुद्रेभ्यः सिद्धपदप्राप्तत्रैकालिकसर्वसिद्धेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

बड़ी जयमाला

–सोरठा –

तेरहद्वीप महान, जिनगृह जिनप्रतिमा नमूँ।
गुण रत्नों की खान, तीर्थंकर भगवन्त हैं।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय अर्हंत देव जिनवर, जय जय छ्यालिस गुण के धारी।
जय समवसरण वैभव श्रीधर, जय जय अनंत गुण के धारी।।
जय जय जिनवर केवलज्ञानी, गणधर अनगार केवली सब।
जय गंधकुटी में दिव्यध्वनी, सुनते असंख्य सुर नर पशु सब।।2।।

इन इक सौ सत्तर कर्मभूमि में, केवलि प्रभु होते रहते।
फिर कर्म अघाती भी हनकर, वे सिद्धिवधू वरते रहते।।
ऐसे ये सिद्ध अनंत हुए, हो रहे और भी होवेंगे।
जय जय सब सिद्धों की वे मुझ सिद्धि में निमित्त होवेंगे।।3।।

निज साम्य सुधारस आस्वादी, मुनिगण जहँ नित्य विचरते हैं।
आचार्य प्रवर चउविध संघ के, नायक जहँ मार्ग प्रवर्ते हैं।।
दीक्षा शिक्षा देकर शिष्यों पर, अनुग्रह-निग्रह भी करते।
प्रायश्चित देकर शुद्ध करें, बालकवत् पोषण भी करते।।4।।

गुरु उपाध्याय मुनि अंग पूर्व, शास्त्रों का वाचन करते हैं।
चउविध संघों को यथायोग्य, श्रुत का अध्यापन करते हैं।।
मिथ्यात्व तिमिर से मार्ग भ्रष्ट, जन को सम्यक् पथ दिखलाते।
जो परंपरा से गुरुमुख से, पढ़ते वे निज निधि को पाते।।5।।

निज आत्म साधना में प्रवीण, अतिघोर तपस्या करते हैं।
वे साधू शिवमारग साधें, बहु ऋद्धि सिद्धि को वरते हैं।।
विक्रिया ऋद्धि चारण ऋद्धी, सर्वौषधि ऋद्धी धरते हैं।
अक्षीण महानस ऋद्धी से, सब जन को तर्पित करते हैं।।6।।

इन सब ही कर्मभूमियों में, जन्में ही मुनि बन सकते हैं।
फिर गगन गमन ऋद्धी बल से, सर्वत्र भ्रमण कर सकते हैं।।
वे ढाई द्वीप तक ही जाते, उससे बाहर नहिं जा सकते।
नर जन्म व मुक्ती मार्ग यहीं, यहाँ से ही सिद्धी पा सकते।।7।।

तीर्थंकर धर्मचक्रधारी, जिन धर्म प्रवर्तन करते हैं।
इन कर्मभूमियों में ही वे, शिवपथ का वर्तन करते हैं।।
जय जय इस जैन धर्म की जय, यह सार्वभौम है धर्म कहा।
सब प्राणिमात्र को अभयदान, देवे सब सुख की खान कहा।।8।।

तीर्थंकर के मुख से खिरती, वाणी सब जन कल्याणी है।
गणधर गुरु उसको धारण कर, सब ग्रंथ रचें जिनवाणी है।।
गुरु परम्परा से अब तक भी, यह सारभूत जिनवाणी है।
इसकी जो पूजा भक्ति करें, उनके भव भव दुख हानी है।।9।।

इस प्रथम ही जम्बूद्वीप मध्य, शाश्वत जिनगृह अट्ठत्तर हैं।
जिनमंदिर शाश्वत चार शतक, अट्ठावन तेरहद्वीप में हैं।।
सब सात करोड़ बहत्तर लख, जिनमंदिर भवनवासि के हैं।
चौरासी लाख सत्तानवे हजार, तेइस वैमानिक के हैं।।10।।

अठ कोटि सुछप्पन लक्ष सत्तानवे, सहस चार सौ इक्यासी।
सब जिनगृह शाश्वत त्रिभुवन के, मैं नमूँ नमूँ ये सुख राशी।।
नवसौ पचीस कोटी त्रेपन अरु, लाख सत्ताइस सहस कहीं।
नवसौ अड़तालिस जिन प्रतिमा, इन जिनगृह को मैं नमूँ सही।।11।।

व्यंतर ज्योतिष के असंख्यात, जिनगृह की जिन प्रतिमाएँ हैं।
प्रति जिनगृह इक सौ आठ, एक सौ आठ रहें प्रतिमाएँ हैं।।
इन कर्म भूमि में अगणित भी, कृत्रिम जिनगृह जिन प्रतिमाएँ।
सुरपति चक्री हलधर आदिक, नर सुरकृत वंदत सुख पाएँ।।12।।

जो प्रतिमा प्रातिहार्य संयुत, अरु यक्ष यक्षिणी से युत हैं।
निज चिन्ह व मंगल द्रव्य सहित, वे अर्हंतों की प्रतिकृति हैं।।
सब प्रातिहार्य चिन्हादि रहित, प्रतिमा सिद्धों की कहलातीं।
अथवा अकृत्रिम प्रतिमाएँ, सब सिद्धों की मानी जातीं।।13।।

आचार्य उपाध्याय साधू की, प्रतिमाएँ कर्मभूमि में हैं।
कुछ पंचपरमेष्ठी नव देवों, की प्रतिमाएँ भी निर्मित हैं।।
अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु पंच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा, जिनगृह सब मिल नवदेव कहें।।14।।

ये होते कर्मभूमियों में, हो चुके अनंतों होवेंगे।
इन सबको वंदन बार-बार, भक्तों के कलिमल धोवेंगे।।
ढाई द्वीपों में इक सौ साठ, विदेह क्षेत्र माने श्रुत में।
पुनि पाँच भरत पंचैरावत, मिल इक सौ सत्तर भू इनमें।।15।।

इन ढाई द्वीपों से बाहर, बस शाश्वत जिनगृह जिनप्रतिमा।
नहिं पंच परमगुरु आदि वहाँ, नहिं शिवपथ नहिं नर गमन वहाँ॥
सब इंद्र-इंद्राणी देव देवियाँ, भक्ती से वहाँ जाते हैं।
वंदन पूजन अर्चन करके, अतिशायी पुण्य कमाते हैं।।16।।

फिर भी इन कर्मभूमियों में, जन्मे मानव सुकृतशाली।
जो रत्नत्रय का साधन कर, शिव प्राप्त करें महिमाशाली।।
तीर्थंकर आदि महापुरुषों को, सुरपति भी वंदन करते।
कब मिले मनुजभव तप धारें, शिव लहें भावना मन धरते।।17।।

इन कर्मभूमि की महिमा से ही, ढाई द्वीप महान कहा।
निज आत्म सुधारस आस्वादी, मुनिगण करते हैं वास यहाँ।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ अंतरात्मा बनकर पुरुषार्थ करें।
परमानंदामृत आस्वादी, परमात्मा बन शिवनारि वरें।।18।।

हे नाथ! अनादी से लेकर, अब तक भी अनंतों कालों तक।
चारों गति में मैं घूम रहा, दुख सहा अनंतों कालों तक।।
अब धन्य हुआ तुम भक्ति मिली, सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया।
बस रत्नत्रय को पूर्ण करो, इस हेतू से ही शरण लिया।।19।।

जो कुछ चारित्र धरा मैंने, वह निरतिचार निर्दोष बने।
हो अंत समाधी से मरना, निज के ही गुण हों प्राप्त घने।।
हों आधि व्याधि उपसर्ग भले ही, नाथ! आप में भक्ति रहे।
हे नाथ! आपके ही चरणों से, मन मेरा अनुरक्त रहे।।20।।

जय गोमटेश जय बाहुबली, जिनके चरणों के सन्निध में।
यह तेरहद्वीप मन में आया, जो आज बना हस्तिनापुर में।।
जय पंच मेरु पर्वत स्वर्णिम, जय मध्यलोक के जिनमंदिर।
जय देवभवन के चैत्यालय, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखकर।।21।।

इनके दर्शन से पाप टलें, हो पुण्य प्रगट जग में ख्याती।
जन मनोकामना जो करते, वह शीघ्र सफल देखी जाती।।
जय ऋषभ आदि चौबिस जिनवर, सीमंधर आदि बीस प्रभु की।
जय पांच भरत पंचैरावत के, तीर्थंकर भगवंतों की।।22।।

जय इक सौ सत्तर समवसरण की, चतुर्मुखी प्रतिमाओं की।
ये छह सौ अस्सी जिनप्रतिमा, आनंदित हो वंदूँ नित ही।।
चारण ऋद्धीश्वर ऋषिगण भी, जहाँ वंदन करने जाते हैं।
शुद्धात्मा के अनुरागी भी, वहाँ निज आत्मा को ध्याते हैं।।23।।

जय जय अर्हंत सिद्ध सूरी, जय उपाध्याय साधूगण की।
जय जय जिनधर्म जिनागम की, जय जय जिनबिंब जिनालय की।।
जय जय नवदेव तीनकालिक, जय चिन्मय ज्योति निरंजन की।
जय जय त्रैलोक्य अभयदायक, जय जय जय श्रीजिनशासन की।।24।।

–दोहा–

सब जिनवर जिनबिंब को, नमूँ नमूँ नत माथ।
'ज्ञानमती' कैवल्य हो, यही प्रार्थना नाथ!।।25।।

–शंभु छंद–

श्री तेरहद्वीप विधान भव्य, जो भावभक्ति से करते हैं।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सम्पूर्ण दुःख को हरते हैं।।
फिर तेरहवाँ गुणस्थान पाय, अर्हंत अवस्था लभते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प्रशस्ति

श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, श्री अरजिनवर को करूँ नमन।
तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ति औ कामदेव इन पद वन्दन।।
ये तीनों तीर्थंकर त्रय-त्रय, पद के धारी हैं जग प्रसिद्ध।
ये हस्तिनागपुर में जन्मे, मुझको देवें रत्नत्रय निधि।।1।।

शुभ संवत् वीर निर्वाण चौबिस सौ, अट्ठत्तर थी घड़ी धन्य।
आचार्य देशभूषण गुरु से, मैं ब्रह्मचर्य व्रत लिया धन्य।।
थी शरदपूर्णिमा जन्म तिथी, उस ही दिन गृह परित्याग किया।
ईसवी सन् उन्नीससौ बावन, में अठरह वर्ष को पूर्ण किया।।2।।

श्री मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय शारदागच्छ कहा।
गण बलात्कार माना इसमें, सब मुनियों को वंदना महा।।
इस कलियुग में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर।
उनके इक शिष्य हुए सूरी, जिनका था नाम पायसागर।।3।।

इनके सुशिष्य जयकीर्ति हुए, इनके हैं शिष्य देशभूषण।
आचार्यरत्न जग में प्रसिद्ध, ये ख्यात विश्व में जगभूषण।।
संवत्* चौबिससौ उन्यासी, चांदनपुर में इन गुरुवर ने।
क्षुल्लिका वीरमति किया मुझे, शुभ चैत्र बदी एकम तिथि में।।4।।

चौबिस सौ इक्यासी[1] दक्षिण, जा शांतिसिंधु के दर्श किए।
जब इनने यम संन्यास लिया, निज पट्ट वीरसागर को दिए।।
गुरु आज्ञा से जयपुर आकर, गुरु वीरसिंधु का दर्श किया।
फिर माधोराजपुरा में ही, गुरु ने दीक्षा[2] आर्यिका दिया।।5।।

मुझको महाव्रत दे 'ज्ञानमती' कर, जीवन मेरा सार्थ किया।
स्वाध्याय पठन-पाठन करके, मैंने कुछ ज्ञानाभ्यास किया।।
चौबिस सौ तिरासी[3] संवत् में, गुरुवर की समाधी होने पर।
उन प्रथम शिष्य शिवसागर मुनि, आचार्य हुए चउसंघ हितकर।।6।।

---

* सन् 1953 यहाँ संवत् से वीर निर्वाण संवत् लिया है। 1.सन् 1955। 2. सन् 1956। 3. सन् 1957।

चौबिससौ नवासी[1] संवत् में, आर्यासंघ पृथक् विहार किया।
सम्मेद शिखर वंदन करके, फिर श्रवणबेलगुल गमन किया।।
चौबिस सौ इक्यानवे[2] संवत्, श्री बाहुबली का ध्यान किया।
इस तेरहद्वीप के अकृत्रिम, जिनमंदिर का शुभ भान हुआ।।7।।

उस ही निमित्त से आज हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप बना।
राजा श्रेयांस ने स्वप्न में देखा, मेरु यहाँ साकार बना।।
यह कैसा स्वर्णिम योग अहो! इस ही नगरी में रचना का।
नित याद रहेगा ऋषभदेव, आहारदान अरु दाता का।।8।।

संवत् पचीससौ दो मैंने, वर तेरहद्वीप जिनगृह पूजा।
इन्द्रध्वज नाम विधान रचा, इस सम नहिं अन्य कोई दूजा।।
संवत् पचीस सौ आठ में जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योती निकली।
दिल्ली से धर्म प्रभावना हित, बहु जैनधर्म को विजय मिली।।9।।

भारत की प्रधानमंत्री इन्द्रा-गांधी के कर कमलों से।
उन्नीस सौ बियासी चार जून को, हुआ प्रवर्तन वैभव से।।
पूरे भारत में तीन वर्ष तक, इसका भ्रमण अपूर्व हुआ।
बहु राजनीति नेताओं ने, इसका स्वागत भरपूर किया।।10।।

सर्वत्र अहिंसा धर्म एकता, का प्रचार सौहार्द प्रेम।
बहु जैन अजैनों ने मिलकर, स्वागत कर धारे व्रत व नेम।।
संवत् पचीस सौ ग्यारह शुभ, वैशाख सुदी अष्टमि तिथि के।
सन् उन्नीस सौ पच्चासी में, अट्ठाईस मई को ज्योती ये।।11।।

नरसिंह राव रक्षा मंत्री ने, स्थापित की हस्तिनापुर में।
यह ज्ञानज्योति प्रज्वलित अखंडित, की जो मान्य हुई जग में।।
इस जम्बूद्वीप जिनप्रतिमाओं का, ऋषभदेव प्रतिमा का तब।
हुआ पंचकल्याणक शुभ वैशाख-सुदी अष्टमि से बारस तक।।12।।

प्रत्येक देश के नर नारी, जो ज्ञान ज्योति में इन्द्र बने।
सबने मेरू पर चढ़ करके, अभिषेक किया हो मुदित घने।।

1. दिसम्बर सन् 1962। 2. सन् 1965।

इस जम्बूद्वीप को देख सभी जन, गद्गद हो जय-जय बोले।
सब स्वयं सिद्ध प्रतिमाओं के, दर्शन कर मन कपाट खोले।।13।।

अतिशायी मेरु सुदर्शन के, दर्शन से ईप्सित फलते हैं।
ये कल्पवृक्ष महावीर प्रभू, सब मनरथ पूरे करते हैं।।
वृषभेश शांति कुंथू अर जिन, भरतेश बाहुबलि गुण गायें।
मणिभद्र अनावृत यक्ष स्थल की, रक्षा करके चमकायें।।14।।

जो अष्टसहस्री ग्रंथ व मूलाचार व्याकरण आदि शास्त्र।
अनुवाद किया कुछ लिखी पुस्तकें, ढाई सौ से अधिक शास्त्र।।
श्री कुंदकुंद कृत नियमसार, प्राभृत की संस्कृत टीका में।
स्याद्वाद चन्द्रिका नाम रची, अनुवाद किया निज भाषा में।।15।।

श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान, रचना जन-जन मन भाई है।
शांती विधान अरु तीस चतुर्विंशति विधान सुखदाई हैं।।
श्री कल्पद्रुम आदिक विधान, महावीर विधान लिखे मैंने।
एकाग्र ध्यान का हो अभ्यास, यह ही अभिलाषा है मन में।।16।।

आर्यिका रत्नमति माताजी, रहिं तेरह वर्ष मेरे संघ में।
मेरी रचनाएँ देख-देख, हर्षित होती थीं बहु मन में।।
यहाँ मेरु प्रतिष्ठा को देखा, होकर अशक्त भी साथ दिया।
इस ज्ञानज्योति के प्रवर्तन की, महती प्रभावना देख लिया।।17।।

निज क्षीण देह को देख यहीं, विधि से समाधि को ग्रहण किया।
थी माघ वदी नवमी पंद्रह, जनवरी देह को त्याग दिया।।
संवत् पचीस सौ ग्यारह में, इस पंचकल्याणक से पहले।
ये संयतिका स्वर्गस्थ हुईं, इन कीर्ति सदा जग में फैले।।18।।

जयशील रहें ये मम जननी, इनके ही सत्संस्कारों से।
वय अठरह वर्ष में ही मैंने, गृहत्याग दिया पुरुषार्थों से।।
जयशील रहें आचार्य शांतिसागर चरित्र चक्री यतिवर।
जयशील रहें उन पट्टशिष्य, आचार्य वीरसागर गुरुवर।।19।।

संवत् पचीस सौ उन्निस[1] में, धन तेरस ब्राह्म मुहूर्त समय।
सामायिक मध्य ध्यान में श्रीप्रभु, ऋषभदेव के दर्श हुए।।
बस हुई भावना चलूँ अयोध्या, ऋषभदेव के दर्श करूँ।
प्रभु का महामस्तकाभिषेक, होवे प्रभावना विशद करूँ।।20।।

यह शाश्वत तीर्थ अयोध्या है, सब तीर्थंकर की जन्मभूमि।
संपूर्ण विश्व में प्रकटित हो, श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि।।
तब तेरहद्वीप जिनालय का, हुआ शिलान्यास हस्तिनापुर में।
पुनरपी ससंघ विहार किया, वर तीर्थ अयोध्या दर्श करने।।21।।

संवत् पचीस सौ इक्कीस[2] में, हुआ वर्षायोग हस्तिनापुर में।
हुआ जंबूद्वीप का महामहोत्सव, शरत्पूर्णिमा शुभ तिथि में।।
श्री षट्खण्डागम की संस्कृत, टीका लिखना प्रारंभ किया।
जो है सिद्धान्त चिंतामणि सार्थक, नामा अतिशय सरल किया।।22।।

फिर मांगीतुंगी गमन हुआ, वहाँ पंचकल्याणक हुआ श्रेष्ठ।
श्री ऋषभदेव की इक सौ अठ फुट, मूर्ति बने संकल्प हुआ[3]।।
दिल्ली में आकर ऋषभदेव के, हुए अतिशायी कार्य श्रेष्ठ।
चौबीस कल्पद्रुम यज्ञ महा-निर्वाण महोत्सव आदि ज्येष्ठ।।23।।

श्री ऋषभदेव के समवसरण[4] का, श्रीविहार भारत भर में।
दीक्षा भूमी कैवल्यभूमि, हुआ तीर्थ प्रयाग प्रथित जग में।।
फिर महावीर की जन्मभूमि, कुण्डलपुर[5] जीर्णोद्धार हुआ।
सम्मेदशिखर तीरथ वंदन, करके मम जीवन धन्य हुआ।।24।।

श्री पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दी का करो महोत्सव सब।
किया वाराणसि से उद्घाटन[6], जिनशासन रहे प्रभावी नित।।
फिर हस्तिनागपुर में आई, प्रभु शांतिनाथ की छाया में।
यहाँ चतुर्थ जम्बूद्वीप महा-महोत्सव आदि किये सबने।।25।।

1. अक्टूबर ईसवी सन् 1992। 2. ईसवी सन् 1995। 3. ईसवी सन् 1996।
4. ईसवी सन् 1998। 5. ईसवी सन् 2003-2004। 6. सन् 2005

दस वर्षों में तीरथ यात्रा व, धर्म प्रभावक कार्य हुए।
तीर्थों पर नवनिर्माण और, दिल्ली में महाविधान हुए।।
इस मध्य सुटीका लिखने में, नहिं किंचित् भी व्यवधान हुआ।
यह सरस्वती का ही प्रसाद, षट्खण्डागम जो पूर्ण हुआ।।26।।

सोलह ग्रंथों की टीकाकर, मेरा जीवन कृतकृत्य हुआ।
टीका सिद्धान्तसुचिन्तामणि से, मन चिन्तित फल प्राप्त किया।।
संवत् पच्चीस सौ तेंतिस में, वैशाख कृष्ण दुतिया तिथि में।
षट्खण्डागम सिद्धान्तसुचिन्तामणि को पूर्ण किया मैंने।।27।।

वैशाख शुक्ल ग्यारस से पूर्णा, तक अतिशायी तिथि उत्तम।
तेरहद्वीपों के जिनबिम्बों का, पंचकल्याणक हुआ प्रथम।।
इस तेरहद्वीप जिनालय के, ऊपर स्वर्णिम कलशारोहण।
षट्खण्डागम टीका पूर्ती का, आध्यात्मिक कलशारोहण।।28।।

इन दो कलशारोहण से मैंने, अपना जीवन धन्य किया।
फिर तेरहद्वीप विधान रचूँ, यह भाव हृदय में प्रगट हुआ।।
इस विधान में पूजाएँ तीस, हैं जयमालाएँ तीस एक।
इक्कीस शतक सत्ताइस अर्घ्य, औ पूर्ण अर्घ्य हैं इक सौ इक।।29।।

आषाढ़ शुक्ल षष्ठी तिथि में, यह विधान मेरा पूर्ण हुआ।
इस तेरहद्वीप जिनालय में, यह अनुष्ठान भी प्रथम हुआ।।
संवत् पच्चिस सौ तेंतिस का, यह वर्ष स्वर्ण इतिहास बना।
स्वर्णिम यह तेरहद्वीप जिनालय, अतिशायी जगख्यात बना।।30।।

जब तक जिनधर्म रहे जग में, यहँ तेरहद्वीप स्थायि रहे।
श्री षट्खण्डागम की टीका, चिन्तामणि भी फलदायि रहे।।
यह तेरहद्वीप विधान सभी, भक्तों को उत्तम फल देवे।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' होने तक, मुझको भी स्वात्मिक सुख देवे।।31।।

।। इति शं भूयात्।।

तेरहद्वीप रचना की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

आरति करो रे,
तेरहद्वीपों के जिनबिम्बों की, आरति करो रे।। टेक.।।

तीन लोक में मध्यलोक के, अंदर द्वीप असंख्य कहे।
उनमें से तेरहद्वीपों में, अकृत्रिम जिनबिंब रहें।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चउ सौ अट्ठावन जिनमंदिर की, आरति करो रे।।1।।

इनमें ढाई द्वीपों तक ही, मनुज क्षेत्र कहलाता है।
पंच भरत पंचैरावत, क्षेत्रों का दृश्य सुहाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रीपंचमेरु के जिनबिम्बों की, आरति करो रे।।2।।

पंचम क्षीर समुद्र के जल से, प्रभु का जन्म न्हवन होता।
अष्टम द्वीप नंदीश्वर में, इन्द्रों द्वारा अर्चन होता।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कुण्डलवर और रुचकवर द्वीप की, आरति करो रे।।3।।

इन सबका वर्णन तिलोय-पण्णत्ति ग्रंथ में मिलता है।
दर्शन कर साक्षात् पुण्य का, कमल हृदय में खिलता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
ढाई द्वीपों के समवसरण की, आरति करो रे।।4।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने हमें बताया है।
हस्तिनापुर में यह रचना, जिनमंदिर में बनवाया है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
''चन्दनामती'' इस अद्भुत कृति की, आरति करो रे।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –तुम करो प्रभु से प्रीत.....

करो सिद्धों का गुणगान, अवसर आया है।
रचा तेरहद्वीप विधान, अतिशय छाया है।।

पाँच मेरुपर्वत हैं इसमें, अस्सी जिनप्रतिमाएँ उनमें।
ये लगते स्वर्ण समान, अतिशय छाया है।।1।।करो.।।

तेरहद्वीप में कुल जिनमंदिर, चार शतक अट्ठावन सुंदर।
ये हैं शाश्वत जिनधाम, अतिशय छाया है।।2।।करो.।।

देवभवन भी आठ शतक हैं, उनमें चैत्यालय शोभित हैं।
हैं उनमें मूर्ति महान, अतिशय छाया है।।3।।करो.।।

इक सौ सत्तर समवसरण हैं, उनमें चतुर्मुखी भगवन हैं।
उन्हें झुक-झुक करो प्रणाम, अतिशय छाया है।।4।।करो.।।

पहला अवसर आया जग में, तेरहद्वीप बना है सच में।
सब झुक-झुक करो प्रणाम, अतिशय छाया है।।5।।करो.।।

अतिशयकारी है यह रचना, इसके दर्शन मन से करना।
हों सिद्ध तुरत सब काम, अतिशय छाया है।।6।।करो.।।

ज्ञानमती माताजी की महिमा, उनके ज्ञान की है यह गरिमा।
''चन्दना'' करे गुणगान, अतिशय छाया है।।7।।करो.।।

विधान की रचयित्री गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

अष्टक –**ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।**
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जब से, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।

घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।। थ ा`
पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञानज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।। माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।। माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

–दोहा–

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शंभुछंद

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह,आलोक जगत को मिले सदा।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-श्याम तेरी बंशी.....

तेरहद्वीप रचना का देखो चमत्कार, हस्तिनापुरी में हुई जो साकार।
ज्ञानमती माताजी का है ये उपकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।

ग्रंथों में इसका वर्णन है आता।
धरा पर बना है तो कितना सुहाता।।

चार सौ अट्ठावन हैं प्रतिमा सुखकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।1।।

देखो ठीक से तो सारा समझ में है आता।
ढाई द्वीप तक है मात्र मनुष्यों का नाता।।

वहीं पाँच मेरू बने हैं सुखकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।2।।

सिद्ध मंदिरों के साथ देवभवन राजें।
समवसरण एक शतक सत्तर विराजें।।

ज्ञानमती माातजी के ज्ञान का है सार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।3।।

सोने जैसे चमक रहे मंदिर ये सारे।
वंदना करेंगे इनकी सूर्य चांद तारे।।

'चंदनामती' का नमन होगा स्वीकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।4।।

भजन

तर्ज-पंखिड़ा.....

वंदना.....वंदना.....
वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की।
बीसवीं सदी की पहली बालसती की।।वंदना.....

इनके मात-पिता का, गुणानुवाद मैं करूँ।
इनकी जन्मभूमि का भी, साधुवाद मैं करूँ।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वन्दना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना...।।१।।

इनके ज्ञान की प्रशंसा, सारी दुनिया करती है।
इनके नाम की प्रशंसा, पुस्तकों में मिलती है।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।२।।

वीर के युग की ये, लेखिका पहली हैं।
ढाई सौ ग्रंथों की, लेखिका साध्वी हैं।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।३।।

इनके वात्सल्य में, माँ की ममता भरी।
इनके सानिध्य में, मुझको समता मिली।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।४।।

इनके तप त्याग में, लाभ लेते सभी।
''चन्दना'' भाग्य से, भक्ति करते सभी।।

मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।।वंदना....।।५।।